सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivahan_Vishesh
RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 79, नई दिल्ली, गुरुवार 29 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 परीक्षा नकल रैकेट में दिल्ली कमेटी नेताओं की भूमिका पर उठे सवाल
06 मानव जीवन में कला का महत्व
08 ओडिशा में 12 जून को एक नया नाटक खेला जाएगा। नाटक का नाम है...

प्लेटफॉर्म पर खड़े यात्री को मेट्रो आने से पहले पता चल जाएगा कौन से कोच में है कम भीड़

संजय बाटला

दिल्ली मेट्रो ने पीक ऑवर्स में प्लेटफॉर्म पर यात्रियों को सीट पकड़ने की आपाधापी से बचाने के लिए मैजेंटा लाइन पर पायलट प्रोजेक्ट शुरु किया है. इसके तहत PIDS तकनीक कोच में वजन के आधार पर पता लगाएगी कि किस कोच में कितने यात्री हैं और यह जानकारी प्लेटफॉर्म पर लगे डिस्पले बोर्ड में दिखाई देगी.

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में मेट्रो की भूमिका काफी अहम है. मेट्रो के कारण व्यक्ति एक जगह से दूसरी जगह काफी आसानी से पहुंच जाता है. यहीं कारण है कि मेट्रो की गिनती देश की सबसे व्यस्त सेवाओं में होती है. मेट्रो में रोजाना लाखों लोग सफर करते हैं. वहीं आपको बता दें कि भीड़भाड़ के इस माहौल में दिल्ली मेट्रो अब ऐसी तकनीक की शुरुआत करने वाली है, जो कि यात्रियों के लिए काफी फायदेमंद होगी. यात्री जान सकेंगे कि ट्रेन के कौनसे कोच में भीड़ सबसे कम है और कहां उन्हें बैठने के लिए सीट मिल सकती हैं. वहीं इस तकनीक का अभी ट्रायल मैंजेंटा लाइन पर किया जा रहा है. यह सुविधा सिर्फ अभी मैजेंटा लाइन पर पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू की गई है. अगर इसका परिणाम सकारात्मक रहा तो इसे अन्य मेट्रो लाइनों पर भी लागू किया जाएगा. इससे मेट्रो यात्रा ने केवल सुविधाजनक बल्कि अधिक व्यवस्थित भी बन सकेगी. दिल्ली मेट्रो पैसेंजर इंफोर्मेशन डिस्प्ले सिस्टम (PIDS) पर इस तकनीक की मदद से ट्रेन के कोचों की भीड़ का प्रतिशत दिखाता है. आज के समय में अक्सर यात्री जिस भी कोच में चढ़ते हैं. उसमें अधिक भीड़भाड़ होती है. ऐसे में बहुत कम मौके होते हैं, जब कोई कोच खाली होता है. लेकिन अब नई तकनीक इस समस्या के लिए समाधान बन सकती है.

दिल्ली मेट्रो के अधिकारियों के मुताबिक PIDS सिस्टम कोच के वजन के आधार पर जानकारी देता है. यह सॉफ्टवेयर प्रत्येक कोच के खाली और भरे वजन की तुलना करके यह पता लगाएगा कि किस कोच में कितने प्रतिशत यात्री हैं. वहीं यात्री स्क्रीन पर C1, C2, C3 जैसै कोच नंबर के साथ भीड़ का प्रतिशत भी देख सकेंगे, जिससे यात्री यह तय कर सकेंगे कि उन्हें किस कोच में चढ़ना है.

दिल्ली मेट्रो में सुबह 8 से दोपहर 12 बजे और शाम के 5 बजे से रात के 9 बजे तक पीक ऑवर्स माने जाते हैं. इस समय पर यह सुविधा यात्रियों के लिए काफी फायदेमंद हो सकती है. भीड़ वाले समय में यात्रियों को खड़े होने की भी जगह नहीं मिलती है. ऐसे में कोच की जानकारी यात्रियों को राहत देगी।

दिल्ली मेट्रो करिाए पर मलि 50% छूट, हर दिन कर सकते हैं आधे दाम में यात्रा

दिल्ली मेट्रो ने यात्रियों के लिए एक शानदार ऑफर पेश किया है. अब आप हर दिन आधे दाम में मेट्रो की यात्रा कर सकते हैं. आइए जानते हैं इस ऑफर का लाभ कैसे उठाया जा सकता है.

नई दिल्ली. दल्लिी मेट्रो में अब सीमित समय के लिए एक खास ऑफर मिल रहा है, जिसमें यूजर्स रोजाना आधे किराए में मेट्रो की सवारी कर सकते हैं. दिल्ली एनसीआर क्षेत्र के उबर यूजर्स अब उबर ऐप के जरिए मेट्रो टिकट 50% छूट पर खरीद सकते हैं. यह प्रोग्राम उबर ऐप में जोड़ी गई नई सुविधा को प्रमोट करने के लिए चलाए जा रहे प्रमोशनल कैंपेन का हिस्सा है. इस प्रमोशन के खत्म होने की कोई आधिकारिक तारीख नहीं है, लेकिन कई यूजर्स ने बताया है कि यह ऑफर कई ट्रिप्स पर काम करता है, जो कि नियमित यात्रियों के लिए एक बेहतरीन ऑफर है. यह प्रोग्राम प्रक्रिया में सरल है और इसमें बड़े प्रमोशनल अवसर हैं, जिससे भारत के सबसे व्यस्त मेट्रो नेटवर्क में बड़ी राहत मिल सकती है.

उबर के जरिए दिल्ली मेट्रो टिकट पर 50% छूट कैसे पाएं

दिल्ली मेट्रो टिकट पर 50% छूट पाना बहुत आसान है और इसे उबर ऐप के जरिए कुछ ही स्टेप्स में किया जा सकता है. यहां जानें कैसे आप इस ऑफर का लाभ उठा सकते हैंः

– सुनिश्चित करें कि आपके स्मार्टफोन में Uber ऐप इंस्टॉल हो.

– ऐप खोलें और जांचें कि ऐप का नवीनतम संस्करण है.

– ऐप में स्क्रॉल करें और 'Metro' टैब पर क्लिक करें.

– अपनी यात्रा के लिए शुरुआती और अंतिम मेट्रो स्टेशन चुनें.

– किराया स्वचालित रूप से 50% छूट के साथ दिखेगा.

– भुगतान करें और बदले में आपको अपने Uber ऐप में डिजिटल QR टिकट मिलेगा.

दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन पुरानी लंबित मांगो को पूरा ना होने पर मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के खिलाफ आज करेंगे प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन, अपनी काफी पुरानी लंबित मांगो को पूरा ना होने पर उत्तराखंड भवन दिल्ली में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी जी के खिलाफ 29 मई को दोपहर 12:30 बजे भारी धरना प्रदर्शन करेंगे.

एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की उत्तराखंड से बाहर के राज्यों की टैक्सी बसों को सिर्फ 15 दिन का ग्रीन कार्ड/हिल फिटनेस मिल रही है लेकिन उत्तराखंड की टैक्सी बसों को 6 महीने की.

इस से पेहले पूरे भारत की टैक्सी बसों को 6 महीने की फिटनेस मिलती थी और फीस 600 रुपए होती थी अब हर 15 दिन के बाद 600 रुपए हर बार देने पड़ रहे है बल्कि दलालो को भी 3 से 4 हजार रुपए अलग से देने पड़ रहे है, नहीं तो परिवहन विभाग के कर्मचारी कोई ना कोई कमी निकाल कर गाडी फेल कर देते है.

हमारी मांगेः-

(1) पूरे भारत की टैक्सी बसों को 6 महीने का ग्रीन कार्ड मिले जैसे उत्तराखंड की गाड़ियों को मिलता है.

(2) आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की किसी भी टैक्सी बसों को उत्तराखंड के किसी भी जगह से पर्यटक को टूर कराने की इज्जाजत हो.

(3) उत्तराखंड में आने वाले पर्यटको और ड्राइवर्स को पूरी तरह सुरक्षा मिले.

(4) पुलिस और परिवहन विभाग को सख्त निर्देश दिए जाए की देव भूमि में किसी भी ड्राइवर को नाजायज तंग ना किया जाए.

(5) दिल्ली में उत्तराखंड भवन में दिल्ली एनसीआर की टैक्सी बसों को ग्रीन कार्ड बनाने के लिए प्रवधान किया जाए. जिस से हरिद्वार ऋषिकेश में ट्रैफिक जाम ना लगे.

(6) उत्तराखंड में बड़ी हुई पार्किंग फीस कम करी जाए.

(7) उत्तराखंड के एयरपोर्ट रेलवे स्टेशन पर किसी भी राज्य से आने वाली टैक्सी बसों को पिक उप करने की इज्जाजत हो और वहाँ से यूनियन के नाम पर गुंडागर्दी बंद की जाए.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना है की अपनी मांगो के लिए हमने काफी पत्र श्री पुष्कर धामी जी को लिखें, बल्कि उत्तराखंड के पर्यटन मंत्री श्री सतपाल महाराज जी भी मिलकर उनको अपनी समस्याओ से अवगत कराया.

इसके साथ उत्तराखंड के ट्रांसपोर्ट सचिव, अतरिक्त सचिव, एस एस पी देहरादून से भी मिले.

श्री अजय टम्टा और श्री हर्ष मल्होत्रा जी

ट्रांसपोर्ट राज्य मंत्री भारत सरकार से भी मिलकर अपनी मांगो का ज्ञापन भी दिया लेकिन कोई नतीजा आज तक नहीं निकला. इसलिए उत्तराखंड की लोकल ट्रांसपोर्टर्स यूनियन वहाँ के परिवहन विभाग के कर्मचारीयो से मिलकर रोज हमारी गाड़ियों में से टूरिस्ट को उतारकार अपनी गाड़ियों से चार धाम यात्रा करा रहे है, बल्कि हमारी टैक्सी बसों को जब्त भी करा कर भारी जुर्माना भी लगवा रहे है.

29 मई को दोपहर 12:30 बजे ट्रांसपोर्टर्स जलूस के रूप में बाल भवन आई टी ओ माता सुंदरी गुरूद्वारे के पास से शरू करेंगे और उत्तराखंड भवन कोटला रोड पर जाकर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी जी के खिलाफ धरना प्रदर्शन करेंगे.

एअर कनेक्टिविटी रैंकिंग हुई जारी, दुबई एयरपोर्ट को पहला तो चीन को दूसरा; जानें आईजीआई की रैंकिंग

दिल्ली के आईजीआई एयरपोर्ट को एयरपोर्ट्स काउंसिल इंटरनेशनल एशिया-प्रशांत और मध्य पूर्व द्वारा 2024 एयर कनेक्टिविटी रैंकिंग में शीर्ष 10 हब एयरपोर्ट्स में स्थान मिला है। यह भारत का एकमात्र एयरपोर्ट है जो इस सूची में शामिल है। आईजीआई एयरपोर्ट 153 गंतव्यों से जुड़ा है जिसमें 81 घरेलू और 72 अंतरराष्ट्रीय मार्ग शामिल हैं। यह उत्कृष्टता और यात्री-केंद्रित सेवा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

नई दिल्ली। आईजीआई एयरपोर्ट को एयरपोर्ट्स काउंसिल इंटरनेशनल एशिया-प्रशांत और मध्य पूर्व (एसीआइ एपेक एवं एमआइडी) द्वारा जारी 2024 एयर कनेक्टिविटी रैंकिंग में एशिया-प्रशांत और मध्य पूर्व क्षेत्र के शीर्ष 10 हब एयरपोर्ट्स में स्थान मिला है। शीर्ष 10 की सूची में शामिल होने वाला यह भारत का एकमात्र एयरपोर्ट है।

इस रैंकिंग में आईजीआई एयरपोर्ट को 153 गंतव्यों से जुड़ा बताया गया है, जिसमें 81 घरेलू और 72 अंतरराष्ट्रीय मार्ग शामिल हैं। डायल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विदेह कुमार जयपुरियार ने इस उपलब्धि पर कहा कि हमें गर्व है कि एसीआई की 2024 एयर कनेक्टिविटी रैंकिंग में एशिया-प्रशांत और मध्य पूर्व क्षेत्र के शीर्ष 10 हब एयरपोर्ट्स में हमें स्थान मिला है।

यह हमारी उत्कृष्टता, नवाचार और यात्री-केंद्रित सेवा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हम आगे भी कनेक्टिविटी बढ़ाने, यात्री अनुभव को बेहतर बनाने और भारत को विश्व से जोड़ने वाले प्रमुख प्रवेश द्वार के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए काम करेंगे।

शीर्ष 10 में शामिल होने के प्रमुख कारण

डायल के अनुसार आइजीआइ एयरपोर्ट हाल के वर्षों में 20 से अधिक विशेष अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों से जुड़ा है। इनमें नामपेन्ह, बाली देनपसार, कैलगरी, मांट्रियल, वैंकूवर, वाशिंगटन डलेस, शिकागो ओ हेयर, टोक्यो हानेदा आदि शहर शामिल हैं।

साथ ही पिछले एक दशक में अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिंग यात्रियों की संख्या दोगुनी हो गई है, जो दिल्ली को दक्षिण एशिया के प्रमुख पारगमन हब के रूप में स्थापित करता है। आईजीआई एयरपोर्ट लंबी दूरी की उड़ानों का पसंदीदा हब बना हुआ है।

यह 88 प्रतिशत लंबी दूरी के गंतव्यों से जुड़ा है और भारत से शुरू होने वाली 56 प्रतिशत लंबी दूरी की साप्ताहिक उड़ानों का संचालन करता है। भारत से लंबी दूरी के 42 प्रतिशत यात्री दिल्ली को अपने यात्रा प्रवेश द्वार के रूप में चुनते हैं।

आईजीआई एयरपोर्ट की घरेलू-अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी भी बढ़ रही है। हर साल 40 लाख घरेलू यात्री यहां से अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों के लिए कनेक्शन प्राप्त करते हैं। यात्रियों की सहूलियत के लिए फेज 3ए विस्तार परियोजना के तहत अंतरराष्ट्रीय-से-अंतरराष्ट्रीय स्थानांतरण क्षेत्र को दोगुना किया गया है।

ई-वीजा धारकों के लिए नए बायोमेट्रिक पंजीकरण कियोस्क जैसे उन्नयन यात्रा अनुभव को और बेहतर बनाते हैं। डायल के अनुसार हब कनेक्टिविटी इंडेक्स के 2025 संस्करण में एसीआइ ने 'हब कनेक्टिविटी इंडेक्स' शुरू किया, जो एयरपोर्ट के हब संचालन की गुणवत्ता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है।

दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट शीर्ष पर

इस बार दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट ने इस इंडेक्स में शीर्ष पर जगह बनाई है। इसके बाद चीन का शंघाई पुडोंग एयरपोर्ट शामिल है। तीसरे स्थान पर कतर स्थित हमाद इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। आइजीआइ एयरपोर्ट को 10वें स्थान पर जगह मिली है।

दिल्ली में इस मार्ग पर लगाई जाएगी 12 हजार फूलदार पेड़ और झाड़ियां...

दिल्ली के वन विभाग सरदार पटेल मार्ग पर हरियाली बढ़ाने के लिए 12000 फूलदार पौधे लगाएगा। इस योजना में अमलतास क्वीन क्रेप मर्टल गुलाबी तुरही के पेड़ और बोगनविलिया झाड़ियाँ शामिल हैं। मानसून की शुरुआत में यह पहल शुरू होगी जिसमें 10-12 फीट के पूर्ण विकसित पौधे लगाए जाएंगे। लक्ष्य देशी फूलों से क्षेत्र को सुंदर बनाना है।

नई दिल्ली। दिल्ली वन एवं वन्यजीव विभाग सरदार पटेल मार्ग पर हरियाली बढ़ाने के लिए एक बड़ा पौधारोपण अभियान शुरू करने जा रहा है। इसका लक्ष्य 12,000 से अधिक फूलदार पेड़ और झाड़ियां लगाना है।

सोमवार को जारी निविदा के अनुसार, इस योजना में 1,200 अमलतास, 1,200 लैगरस्ट्रोमिया स्पेशिओसा (क्वीन क्रेप मर्टल), 1,200 टैबेबुइया रोजिया (गुलाबी तुरही का पेड़) और 8,400 बोगनविलिया झाड़ियां लगाना शामिल है। निविदा जमा करने की अंतिम तिथि दो जून है।

एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि यह पहल मानसून की शुरुआत के साथ शुरू होने की संभावना है, जिसमें 10 से 12 फीट की ऊंचाई वाले पूर्ण विकसित पौधों का उपयोग किया जाएगा।

अधिकारी ने कहा, ₹हमारा लक्ष्य देशी फूलों की प्रजातियों के साथ इस क्षेत्र के दृश्य आकर्षण को बढ़ाना है।₹ उन्होंने कहा कि चिनार और चेरी ब्लासम जैसी गैर-देशी किस्मों का उपयोग करने के पिछले प्रयास विफल रहे थे, क्योंकि वे दिल्ली की मौसम स्थितियों में टिक नहीं पाए।

मालूम हो कि एलजी वी के सक्सेना के निर्देश के बाद जी-20 शिखर सम्मेलन से पहले जून 2023 में इस हिस्से को सुंदर बनाने का लक्ष्य रखा गया था। एलजी ने रिज के किनारे छह फूलों वाली प्रजातियों के पांच स्तरीय पौधे लगाने का निर्देश दिया था।

खासतौर पर सरदार पटेल मार्ग की तरफ, जो मध्य दिल्ली और इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के बीच आने-जाने वाले गणमान्य व्यक्तियों के लिए मुख्य मार्ग का हिस्सा था।

वन अधिकारियों ने कहा कि उस अभियान के दौरान लगाए गए चिनार या चेरी ब्लासम के कोई भी पेड़ जीवित नहीं बचे हैं। उस समय इस्तेमाल की गई अन्य प्रजातियों में अमलतास, जकरांडा और गुलमोहर शामिल थे। अधिकारी ने कहा कि हालांकि नए लगाए गए पेड़ों के इस साल फूल आने की उम्मीद नहीं है, लेकिन कुछ अगले साल तक खिल सकते हैं।

दिल्ली का रिज क्षेत्र, जिसे आरक्षित वन के रूप में अधिसूचित किया गया है, लगभग 7,784 हेक्टेयर में फैला हुआ है। दक्षिणी रिज सबसे बड़ा है, जो 6,200 हेक्टेयर में फैला है, इसके बाद सेंट्रल रिज (864 हेक्टेयर), महरौली में दक्षिण-मध्य रिज (626 हेक्टेयर) और उत्तरी रिज (87 हेक्टेयर) हैं। नानकपुरा दक्षिण-मध्य रिज अतिरिक्त सात हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है।

महाराणा प्रताप जयंती आज

महाराणा प्रताप जयंती मेवाड़ के वीर राजपूत राजा महाराणा प्रताप सिंह के जन्म दिवस की स्मृति में मनाई जाती है। उन्हें विशेष रूप से राजस्थान में और पूरे भारतवर्ष में शौर्य, साहस और देशभक्ति के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। मुगल साम्राज्य के विस्तार के विरुद्ध उनके प्रबल प्रतिरोध ने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर बना दिया है। हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर की विशाल सेना का सामना करते हुए उन्होंने जो वीरता दिखाई, वह आज भी राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान की प्रेरणा देती है। यह जयंती न केवल उनके जन्म का उत्सव है, बल्कि उनके आदर्शों, विरासत और भारत की सांस्कृतिक धरोहर में दिए गए अमूल्य योगदान का सम्मान भी है।

कब है महाराणा प्रताप जयंती ?

============================

हिंदू पंचांग के अनुसार, महाराणा प्रताप का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हुआ था। इस साल यह तिथि दिन गुरुवार, 29 मई को देर रात 01 बजकर 54 मिनट पर शुरू होगी। वहीं, इसका समापन रात्रि 11 बजकर 18 मिनट पर होगा। ऐसे में इस साल महाराणा प्रताप जयंती 29 मई, 2025 को मनाई जाएगी।

महाराणा प्रताप जयंती का महत्व

============================

महाराणा प्रताप जयंती विशेष रूप से राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में एक महत्वपूर्ण पर्व के रूप में मनाई जाती है। इस दिन लोग उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। साथ ही विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम, शोभा यात्राएं और सभाएं आयोजित की करते हैं। लोग महाराणा प्रताप के जीवन और उनके संघर्षों को याद करते हैं। वहीं, इस मौके पर उनकी वीरता, देशभक्ति और स्वाभिमान की कहानियां भी सुनाई जाती हैं, जो आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं। इसके अलावा कई स्थानों पर विशेष पूजा-अर्चना और भंडारे का भी आयोजन किया जाता है।

इतिहास में हैं अमर

======================

महाराणा प्रताप का मुगल सम्राट अकबर के साथ हल्दीघाटी का युद्ध, इतिहास में अमर है। उन्होंने अपनी मातृभूमि मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। उनकी अटल इच्छाशक्ति और कभी हार न मानने वाले जज्बे को आज भी याद किया जाता है

शास्त्रों के अनुसार कमाई का कितना हिस्सा दान करना चाहिए और दिया दान कब नष्ट हो जाता है ?

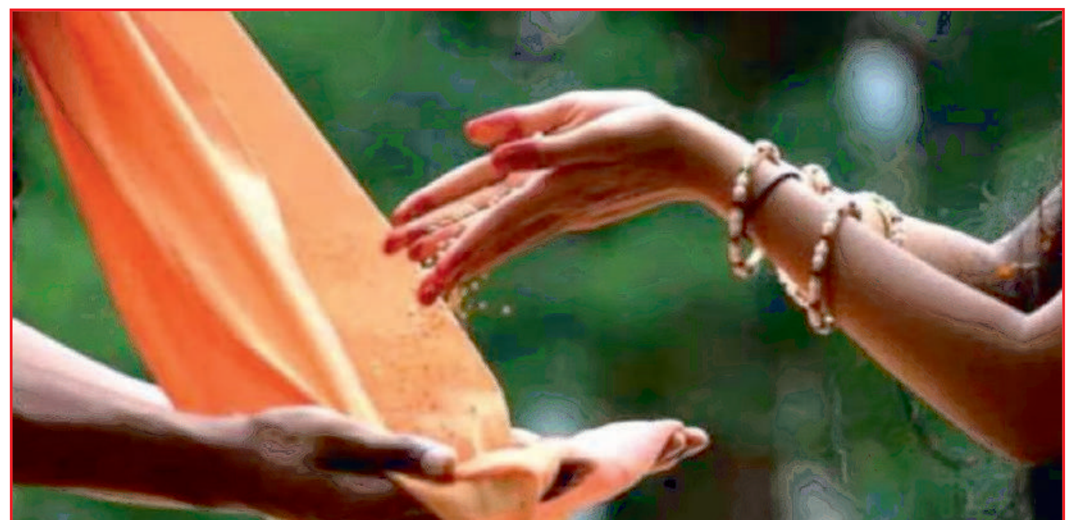

हिन्दू धर्म के साथ-साथ कई अन्य धर्मों में भी दान करने की बात कही गयी है। दान देने से आपमें विनम्रता बनी रहती है और कई तरह धार्मिक लाभ भी मिलते हैं। दान के कई प्रकार होते हैं। गीता में तीन प्रकार के दान की बात कही गई है,

दान करना पुण्य का काम है और यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को बेहतर बनाता है।

ऋग्वेद के अनुसार, दान करने का फल यज्ञ करने के फल के समान होता है।

धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि हर व्यक्ति को अपनी आय का दस प्रतिशत, जिसे 'दशांश' कहा जाता है, दान करना चाहिए ।

भगवद गीता में दान को तीन प्रकारों में विभाजित किया गया है: सात्विक, राजसिक और तामसिक।

दान देने का मन में पश्चाताप या अश्रद्धा होने पर वह दान नष्ट हो जाता है।

यज्ञ करने के बाद जिस फल की प्राप्ति होती है, वही फल किसी को दान करने से भी मिलता है। हिंदू धार्मिक ग्रंथों में भी दान का विशेष महत्व बताया गया है लेकिन साथ में कुछ नियम भी बताये गए हैं। उन्हीं नियमों में इस बात की भी व्याख्या है कि आपको अपनी कमाई का कितना प्रतिशत हिस्सा जरूर दान करना चाहिए।

दस प्रतिशत हिस्सा जरूर दान दें

धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि हर व्यक्ति को अपनी आय का दस प्रतिशत जरूर दान करना चाहिए । इसे ₹दशांश₹ या ₹दशवंधर₹ कहा जाता है। हिन्दू धर्म के अलावा यहूदी, ईसाई और इस्लामी धर्मों में भी दान देने की सलाह दी गयी है और इसे धार्मिक और नैतिक कर्तव्य माना जाता है। शास्त्रों की मानें, तो हर व्यक्ति को अपनी समर्थता और परिस्थिति के अनुसार दान करना चाहिए। यदि किसी की आय अधिक है और वह अधिक दान करने में सक्षम है, तो उसे अधिक दान करना चाहिए। दान से समाज में संतुलन और समृद्धि बनी रहती है।

दान देने के नियम

भगवद गीता में दान को तीन प्रकारों में विभाजित किया गया है। पहला दान है सात्विक दान , जो बिना किसी अपेक्षा के और सही स्थान और समय पर किया जाता है। दूसरा दान है राजसिक दान, जो फल की अपेक्षा के साथ और किसी अन्य स्वार्थ के लिए किया जाता है। तीसरा है तामसिक दान , जो अनुचित स्थान, समय और व्यक्ति को किया जाता है। दान हमेशा सत्पात्र अर्थात्दान लेने हेतु योग्य व्यक्ति को ही दिया जाना चाहिए और ऋण लेकर कभी भी दान नहीं दिया जाना चाहिए । दान कभी भी अपनों को दुखी या प्रताड़ति करके भी नहीं दिया जाना चाहिए। दान को लेकर यह भी कहा जाता है कि अपने संकट काल के लिए संरक्षित धन यानि सेविंग का कभी भी दान नहीं दिया जाना चाहिए।

कब दिया दान नष्ट हो जाता है ?

दान देने से आपके मन के भाव में सकारात्मकता आती है। इसलिए अगर दान देने के बाद दान दाता के मन में पश्चाताप आ जाए या उसे दान देने का अफसोस हो, तो वो दान नष्ट हो जाता है। जो दान अश्रद्धापूर्वक या किसी गलत भाव के साथ दिया जाए, तो वह भी नष्ट हो जाता है। जो भयपूर्वक दिया जाता है। वह भी नष्ट हो जाता है। ऐसा दान जो स्वार्थ पूर्वक अर्थात दान देने वाले से बदले में कुछ अपेक्षा रखकर दिया जाता है, तो वो भी नष्ट हो जाता है।

हिंदुओ के चार धाम की महत्व कथा जानें

हिंदू मान्यता के अनुसार चार धाम की यात्रा का बहुत महत्व है। इन्हें तीर्थ भी कहा जाता है। ये चार धाम चार दिशाओं में स्थित है। उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण रामेश्वर, पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारिका। प्राचीन समय से ही चारधाम तीर्थ के रूप मे मान्य थे, लेकिन इनकी महिमा का प्रचार आद्यशंकराचार्यजी ने किया था। माना जाता है, उन्होंने चार धाम व बारह ज्योर्तिलिंग को सुचीबद्ध किया था।

क्यों बनाए गए चार धाम ?

चारों धाम चार दिशा में स्थित करने के पीछे जो सांस्कृतिक लक्ष्य था, वह यह कि इनके दर्शन के बहाने भारत के लोग कम से कम पूरे भारत का दर्शन कर सके। वे विविधता और अनेक रंगों से भरी भारतीय संस्कृति से परिचित हों। अपने देश की सभ्यता और परंपराओं को जानें। ध्यान रहे सदियों से लोग आस्था से भरकर इन धामों के दर्शन के लिए जाते रहे हैं। पिछले कुछ दशकों से आवागमन के साधनों और सुविधा में विकास ने चारधाम यात्रा को सुगम बना दिया है।

किस धाम की क्या विशेषता है ?

बद्रीनाथ धाम-बद्रीनाथ उत्तर दिशा मेंओं का मुख्य यात्राधाम माना जाता है। मन्दिर में नर-नारायण की पूजा होती है और अखण्ड दीप जलता है, जो कि अचल ज्ञानज्योति का प्रतीक है। यह भारत के चार धामों में प्रमुख तीर्थ-स्थल है। प्रत्येक हिन्दू की यह कामना होती है कि वह बद्रीनाथ का दर्शन एक बार अवश्य ही करे। यहां पर यात्री तप्तकुण्ड में स्नान करते हैं। यहां वनतुलसी की माला, चने की कच्ची दाल, गिरी का गोला और मिश्री आदि का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

रामेश्वर धाम-रामेश्वर में भगवान शिव की पूजा लिंग रूप में की जाती है। यह शिवलिंग बारह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। भारत के उत्तर मे काशी की जो मान्यता है, वही दक्षिण में रामेश्वरम्की है। रामेश्वरम चेन्नई से लगभग सवा चार सौ मील दक्षिण-पूर्व में है। यह हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक सुंदर शंख आकार द्वीप है।

पुरी धाम-पुरी का श्री जगन्नाथ मंदिर भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित है। यह भारत के ओडिशा राज्य के तटवर्ती शहर पुरी में स्थित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ जगत के स्वामी होता है। इनकी नगरी ही जगन्नाथपुरी या पुरी कहलाती है। इस मंदिर को हिन्दुओं के चार धाम में से एक गिना जाता है। इस मंदिर का वार्षिक रथ यात्रा उत्सव प्रसिद्ध है। यहां मुख्य रूप से भात का प्रसाद चढ़ाया जाता है।

द्वारिका धाम-द्वारका भारत के पश्चिम में समुद्र के किनारे पर बसी है। आज से हजारों वर्ष पूर्व भगवान कृष्ण ने इसे बसाया था। कृष्ण मथुरा में उत्पन्न हुए, गोकुल में पले, पर राज उन्होने द्वारका में ही किया। यहीं बैठकर उन्होने सारे देश की बागडोर अपने हाथ में संभाली। पांडवों को सहारा दिया। कहते हैं असली द्वारका तो पानी में समा गई, लेकिन कृष्ण की इस भूमि को आज भी पूज्य माना जाता है। इसलिए द्वारका धाम में श्रीकृष्ण स्वरूप का पूजन किया जाता है।

चारधाम

चारधाम की स्थापना आद्य शंकराचार्य ने की। उद्देश्य था उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चार दिशाओं में स्थित इन धामों की यात्रा कर मनुष्य भारत की सांस्कृतिक विरासत को जाने-समझें।

1. बदरीनाथ धाम कहां है

उत्तर दिशा में हिमालय पर अलकनंदा नदी के पास

प्रतिमाः- विष्णु की शालिग्राम शिला से बनी चतुर्भुज मूर्ति। इसके आसपास बाईं ओर उद्धवजी तथा दाईं ओर कुबेर की प्रतिमा।

पौराणिक कथाओं और यहाँ की लोक कथाओं के अनुसार यहाँ नीलकंठ पर्वत के समीप भगवान विष्णु ने बाल रूप में अवतरण किया। यह स्थान पहले शिव भूमि (केदार भूमि) के रूप में व्यवस्थित था। भगवान विष्णुजी अपने ध्यानयोग हेतु स्थान खोज रहे थे और उन्हें अलकनंदा नदी के समीप यह स्थान बहुत भा गया। उन्होंने वर्तमान चरणपादुका स्थल पर (नीलकंठ पर्वत के समीप) ऋषि गंगा और अलकनंदा नदी के संगम के समीप बाल रूप में अवतरण किया और क्रंदन करने लगे। उनका रुदन सुन कर माता पार्वती का हृदय द्रवित हो उठा। फिर माता पार्वती और शिवजी स्वयं उस बालक के समीप उपस्थित हो गए। माता ने पूछा कि बालक तुम्हें क्या चहिये ? तो बालक ने ध्यानयोग करने हेतु वह स्थान मांग लिया। इस तरह से रूप बदल कर भगवान विष्णु ने शिव-पार्वती से यह स्थान अपने ध्यानयोग हेतु प्राप्त कर लिया। यही पवित्र स्थान आज बदरीविशाल के नाम से सर्वविदित है।

त्रेता युग

नर तथा नारायण।

माना जाता है कि इन्होंने बद्रीनाथ मन्दिर में कई वर्षों तक तपस्या की थी।

नर और नारायण ने यहां कई वर्षों तक तपस्या की थी। यह भी माना जाता है कि उन्होंने अगले जन्म में क्रमशः अर्जुन तथा कृष्ण के रूप में जन्म लिया था।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जब गंगा नदी धरती पर अवतरित हुई, तो यह बारह धाराओं में बंट गई। इस स्थान पर मौजूद धारा अलकनंदा के नाम से विख्यात हुई और यह स्थान बदरीनाथ, भगवान विष्णु का वास बना। भगवान विष्णु की प्रतिमा वाला वर्तमान मन्दिर ,१ मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और माना जाता है कि आदि शंकराचार्य, आठवीं शताब्दी के दार्शनिक संत ने इसका निर्माण कराया था। इसके पश्चिम में २७ किलोमीटर की दूरी पर स्थित बदरीनाथ शिखर कि ऊँचाई ७,१ ८ मीटर है। बदरीनाथ में एक मन्दिर है, जिसमें बदरीनाथ या विष्णु की वेदी है। यह २,००० वर्ष से भी अधिक समय से एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान रहा है।

द्वापर युग

मान्यता है कि इसी स्थान पर पाण्डवों ने अपने पितरों का पिंडदान किया था। बद्रीनाथ के ब्रम्हाकपाल क्षेत्र में आज भी तीर्थयात्री अपने पितरों का आत्मा का शांति के लिए पिंडदान करते हैं। यह भी माना जाता है कि व्यास जी ने महाभारत इसी जगह पर लिखी थी।

बदरीनाथ की मूर्ति शालग्रामशिला से बनी हुई, चतुर्भुज ध्यानमुद्रा में है। कहा जाता है कि यह मूर्ति देवताओं ने नारदकुण्ड से निकालकर स्थापित की थी। सिद्ध, ऋषि, मुनि इसके प्रधान अर्चक थे। जब बौद्धों का प्राबल्य हुआ तब उन्होंने इसे बुद्ध की मूर्ति मानकर पूजा आरम्भ की। शंकराचार्य की प्रचार-यात्रा के समय बौद्ध तिब्बत भागते हुए मूर्ति को अलकनन्दा में फेंक गए। शंकराचार्य ने अलकनन्दा से पुनः बाहर निकालकर उसकी स्थापना की। तदनन्तर मूर्ति पुनः स्थानान्तरित हो गयी और तीसरी बार तप्तकुण्ड से निकालकर रामानुजाचार्य ने इसकी स्थापना की।

2. द्वारका धाम कहां है

पश्चिम दिशा में गुजरात के जामनगर के पास समुद्र तट पर।

प्रतिमाः- भगवान श्रीकृष्ण।

द्वारका गुजरात के देवभूमि द्वारका जिले में स्थित एक नगर तथा हिन्दू तीर्थस्थल है। यह हिन्दुओं के साथ सर्वाधिक पवित्र तीर्थों में से एक तथा चार धामों में से एक है। यह सात पुरियों में एक पुरी है। जिले का नाम द्वारका पुरी से रखा गया है जीसकी रचना २०१ में की गई थी। यह नगरी भारत के पश्चिम में समुन्द्र के किनारे पर बसी है। हिन्दू धर्मग्रन्थों के अनुसार, भगवान कृष्ण ने इसे बसाया था। यह श्रीकृष्ण की कर्मभूमि है। द्वारका भारत के सात सबसे प्राचीन शहरों में से एक है।

काफी समय से जाने-माने शोधकर्ताओं ने पुराणों में वर्णित द्वारिका के रहस्य का पता लगाने का प्रयास किया, लेकिन वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित कोई भी अध्ययन कार्य अभी तक पूरा नहीं किया गया है। २००५ में द्वारिका के रहस्यों से पर्दा उठाने के लिए अभियान शुरू किया गया था। इस अभियान में भारतीय नौसेना ने भी मदद की। अभियान के दौरान समुद्र की गहराई में कटे-छटे पत्थर मिले और यहां से लगभग २०० अन्य नमूने भी एकत्र किए, लेकिन आज तक यह तय नहीं हो पाया कि यह वही नगरी है अथवा नहीं जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने बसाया था। आज भी यहां वैज्ञानिक स्कूबा डायविंग के जरिए समंदर की गहराइयों में कैद इस रहस्य को सुलझाने में लगे हैं।

कृष्ण मथुरा में उत्पन्न हुए, पर राज उन्होने द्वारका में किया। यहीं बैठकर उन्होने सारे देश की बागडोर अपने हाथ में संभाली। पांडवों को सहारा दिया। धर्म की जीत कराई और, शिशुपाल और दुर्योधन जैसे अधर्मी राजाओं को मिटाया। द्वारका उस जमाने में राजधानी बन गई थीं। बड़े-बड़े राजा यहां आते थे और बहुत-से मामले में भगवान कृष्ण की सलाह लेते थे। इस जगह का धार्मिक महत्व तो है ही, रहस्य भी कम नहीं है। कहा जाता है कि कृष्ण की मृत्यु के साथ उनकी बसाई हुई यह नगरी समुद्र में डूब गई। आज भी यहां उस नगरी के अवशेष मौजूद हैं।

3. रामेश्वरम कहां है

दक्षिण दिशा में तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में समुद्र के बीच रामेश्वर द्वीप।

प्रतिमाः- शिवलिंग

रामेश्वरम् के विख्यात मंदिर की स्थापना के बारें में यह रोचक कहानी कही जाती है। सीताजी को छुड़ाने के लिए राम ने लंका पर चढ़ाई की थी। उन्होने लड़ाई के बिना सीताजी को छुड़वाने का बहुत प्रयत्न किया, पर जब राम सफलता न मिली तो विवश होकर उन्होने युद्ध किया। इस युद्ध में रावण और उसके सब साथी राक्षस मारे गये। रावण भी मारा गया; और अन्ततः सीताजी को मुक्त कराकर श्रीराम वापस लौटे। इस युद्ध हेतु राम को वानर सेना सहित सागर पार करना था, जो अत्यधिक कठिन कार्य था।

रावण भी साधारण राक्षस नहीं था। वह पुलस्त्य महर्षि का नाती था। चारों वेदों का जाननेवाला था और था शिवजी का बड़ा भक्त। इस कारण राम को उसे मारने के बाद बड़ा खेद हुआ। ब्रह्मा-हत्या का पाप उन्हें लग गया। इस पाप को धोने के लिए उन्होने रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना करने का निश्चय किया। यह निश्चय करने के बाद श्रीराम ने हनुमान को आज्ञा दी कि काशी जाकर वहां से एक शिवलिंग ले आओ। हनुमान पवन-सुत थे। बड़े वेग से आकाश मार्ग से चल पड़े। लेकिन शिवलिंग की स्थापना की नियत घड़ी पास आ गई। हनुमान का कहीं पता न था। जब सीताजी ने देखा कि हनुमान के लौटने मे देर हो रही है, तो उन्होने समुद्र के किनारे के रेत को मुट्ठी में बांधकर एक शिवलिंग बना दिया। यह देखकर राम बहुत प्रसन्न हुए और नियम समय पर इसी शिवलिंग की स्थापना कर दी। छोटे आकार का सही शिवलिंग रामनाथ कहलाता है।

सेतु का हवाई दृश्य, सामने की ओर श्रीलंकाको जाता है

बाद में हनुमान के आने पर पहले छोटे प्रतिष्ठित छोटे शिवलिंग के पास ही राम ने काले पत्थर के उस बड़े शिवलिंग को स्थापित कर दिया। ये दोनों शिवलिंग इस तीर्थ के मुख्य मंदिर में आज भी पूजित हैं। यही मुख्य शिवलिंग ज्योतिर्लिंगहै।

सेतु का पौराणिक संदर्भ

पूरे भारत, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्व एशिया के कई देशों में हर साल दशहरे पर और राम के जीवन पर आधारित सभी तरह के नृत्य-नाटकों में सेतु बंधन का वर्णान किया जाता है। राम के बनाए इस पुल का वर्णन रामायण में तो है ही, महाभारत में भी श्री राम के नल सेतु का जिक्र आया है। कालीदास की रघुवंश में सेतु का वर्णन है। अनेक पुराणों में भी श्रीरामसेतु का विवरण आता है। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में इसे एडम्स ब्रिज के साथ-साथ राम सेतु कहा गया है। नासा और भारतीय सेटेलाइट से लिए गए चित्रों में धनुषकोडि से जाफना तक जो एक पतली सी द्वीपों की रेखा दिखती है, उसे ही आज रामसेतु के नाम से जाना जाता है। इसी पुल को बाद में एडम्स ब्रिज का नाम मिला। यह सेतु तब पांच दिनों में ही बन गया था। इसकी लंबाई १०० योजन व चौड़ाई १० योजन थी। इसे बनाने में उच्च तकनीक का प्रयोग किया गया था।

4. जगन्नाथपुरी कहां है-

पूर्व दिशा में उड़ीसा राज्य के पुरी में।

प्रतिमाः- विष्णु की नीलमाधव प्रतिमा जो जगन्नाथ कहलाती है। सुभद्रा और बलभद्र की प्रतिमाएं भी।

इस मंदिर के उद्गम से जुड़ी परंपरागत कथा के अनुसार, भगवान जगन्नाथ की इंद्रनील या नीलमणि से निर्मित मूल मूर्ति, एक अगरु वृक्ष के नीचे मिली थी। यह इतनी चकाचौंध करने वाली थी, कि धर्म ने इसे पृथ्वी के नीचे छुपाना चाहा। मालवा नरेश इंद्रद्युम्न को स्वप्न में यही मूर्ति दिखाई दी थी। तब उसने कड़ी तपस्या की और तब भगवान विष्णु ने उसे बताया कि वह पुरी के समुद्र तट पर जाये और उसे एक दारु (लकड़ी) का लठ्ठा मिलेगा। उसी लकड़ी से वह मूर्ति का निर्माण कराये। राजा ने ऐसा ही किया और उसे लकड़ी का लठ्ठा मिल भी गया। उसके बाद राजा को विष्णु और विश्वकर्मा बढ़ई कारीगर और मूर्तिकार के रूप में उसके सामने उपस्थित हुए। किंतु उन्होंने यह शर्त रखी, कि वे एक माह में मूर्ति तैयार कर देंगे, परन्तु तब तक वह एक कमरे में बंद रहेंगे और राजा या कोई भी उस कमरे के अंदर नहीं आये। माह के अंतिम दिन जब कई दिनों तक कोई भी आवाज नहीं आयी, तो उत्सुकता वश राजा ने कमरे में झांका और वह वृद्ध कारीगर द्वार खोलकर बाहर आ गया और राजा से कहा, कि मूर्तियां अभी अपूर्ण हैं, उनके हाथ अभी नहीं बने थे। राजा के अफसोस करने पर, मूर्तिकार ने बताया, कि यह सब दैववश हुआ है और यह मूर्तियां ऐसे ही स्थापित होकर पूजी जायेंगीं। तब वही तीनों जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां मंदिर में स्थापित की गयीं।

भुने चने और गुड़ खाने के फायदे

भुने चने खाने से हमारे शरीर को बहुत लाभ होता है ! वही जब भुने चने के साथ गुड़ का सेवन किया जाता है तो इसका फायदा कई गुना अधिक हो जाता है ! खासकर पुरुषों के लिए इसे खाना काफी फायदेमंद होता है !अक्सर पुरुष बॉडी बनाने के लिए जिम जाकर घंटों पसीने बहाते हैं ! ऐसे में उन्हें गुड़ और चने का सेवन करना चाहिए ! इसके सेवन करने से मसल्स मजबूत होते हैं और शरीर को नई ऊर्जा प्राप्त होती है !

भुने चने और गुड़ खाने के फायदे जानकर चौंक जाएंगे, लड़के जरूर पढ़ें...

चलिए जानते हैं भुने चने और गुड़ खाने से फायदे-

1 .मसल्स-

गुड़ और चने में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन मौजूद होता है जो मसल्स को मजबूत बनाने में मददगार होता है !इसलिए यदि आप मसल्स को मजबूत बनाना चाहते हैं तो प्रतिदिन आपको गुड और भुने चने का सेवन करना चाहिए !

2 .चेहरा-

गुड़ और भुने चने का सेवन करने से चेहरे की चमक बढ़ती है क्योंकि इसमें जिंक मौजूद होता है जो त्वचा पर निखार लाने का काम करता है और नियमित इसके कुछ दिनों तक सेवन करने से आप पहले से ज्यादा स्मार्ट लगने लगते हैं !

3 .मोटापा-

यदि आप मोटापे को कम करना चाहते हैं तो गुड़ और चना आपके लिए बेहतर साबित हो सकता है ! कई लोग वजन कम करने के लिए जिम जाकर एक्सरसाइज करते हैं ! उन्हें गुड़ और चना का सेवन करना चाहिए ! क्योंकि गुड़ और चने एक साथ खाने से शरीर का मेटाबॉलिज्म आता है जो मोटापा को कम करने में मददगार होता है !

4 .कब्ज-

गुड़ और चने में फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है जो पाचन शक्ति को ठीक रखता है और कब्ज, गैस, एसिडिटी की समस्या से राहत दिलाता है !

5 .दिमाग होता है तेज-

गुड़ और चने का सेवन एक साथ करने से याददाश्त शक्ति तेज होती है क्योंकि इसमें विटामिन बी6 प्रचुर मात्रा में होता है जो याददाश्त को बढ़ाता है !

6 .दांतो के लिए-

इसमें फास्फोरस होता है जो दांतों के लिए काफी लाभदायक होता है !इसकी नियमित सेवन करने से दांत मजबूत होते हैं और जल्दी नहीं टूटते हैं !

7 .हड्डियों के लिए-

गुड़ और चने में कैल्शियम की मात्रा अधिक होती है जो हड्डियों के लिए बहुत लाभदायक होता है ! यह हड्डियों को मजबूत बनाता है और इसके सेवन से हड्डियों से जुड़ी बीमारियों से राहत मिलती है।

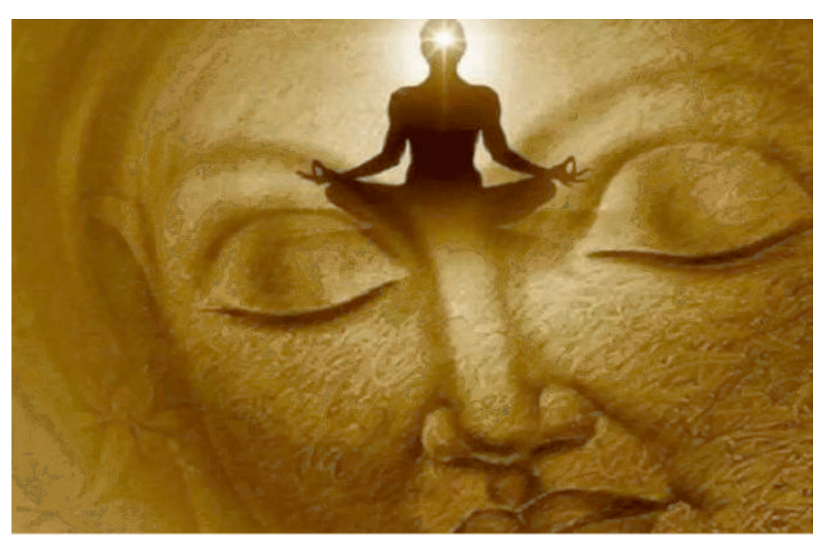

हमें परमात्मा का अनुभव क्यों नहीं हो रहा है? क्योंकि हम अपने होने तथा परमात्म के होने को दो सत्ताओं में बांट रहे हैं

सत्ता एक ही है, वह अखंड है और वही सब अलग-अलग नाम/रुपों की तरह प्रकट हो रही है। उसी के होने से हमें अपना होना लग रहा है। यह सब उसी का है, उसे हम अपना जानना/मानना भूल गए हैं।

हम अपने आप को कुछ विशिष्ट मानना चाहतें हैं इसीलिए हमने उस परमसत्ता को मानने से इन्कार कर दिया है। क्युंकि यदि हमने मान लिया तो जानने के रास्ते पर बढ़ना पड़ेगा और हम उस परम को जानने से बचना चाहतें हैं। कल कोई अज्ञानी/दंभी कह रहा था कि 'हमें किसान अन्न देता है, डाक्टर इलाज देता है, फौजी सुरक्षा देता है, भगवान हमारे लिए क्या करता है ? वह हमारे किसी काम का नहीं, उसे हम क्यों मानें ?' सूक्ष्म में जो भोजन, चिकित्सा, सुरक्षा, जीवन हमें मिल रहा है, उसी का है, उसी से है। लेकिन जो थोड़ा स्थूल दृष्टि से देखना चाहें तो परमात्मा हमारे लिए वह है जैसे जल मछली के लिए है। हम उसी में डूबते-उतराते हैं। उसके बिना हमारा कोई वजूद नहीं है। जब पूरा अस्तित्व वही है, उसके पार कुछ है ही नहीं तो हम उसकी तुलना किससे और कैसे कर सकतें हैं ? मछली तो फिर भी किनारे आकर पानी के होने/न होने को अनुभव कर सकती है और हम तो परमात्मा से बाहर हो ही नहीं सकते। जो सदैव है उसकी अनुभूति होना भी मुश्किल लगता है, उसे हम भुला देते हैं। जो सदैव है, सदा विद्यमान है उसे केवल मानना भी किसलिए ? जो है, सदा से है, उसे तो जानने की बात है। यहां जो दिखाई पड़ता है, मैं हूं, आप हैं, यह है, वह है- यह सब उसी माला के मनके/मोती के समान है जो परमात्म रूपी, न दिखने वाले 'धागे' में ही एक-दूसरे के साथ पिरोये हुए हैं।

दिल्ली में जन शिकायत निवारण प्रणाली को मिलेगा नया रूप, CM रेखा गुप्ता ने दिए निर्देश

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई बैठक में लोक शिकायत प्रबंधन प्रणाली को बेहतर बनाने पर जोर दिया गया। नागरिकों की समस्याओं का समय पर समाधान करने और पीजीएमएस को उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाने के लिए निर्देश दिए गए। आधुनिक तकनीक का उपयोग करने और आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति की बात कही गई। नागरिकों से समाधान के बाद प्रतिक्रिया देने का अनुरोध किया गया।

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में बुधवार को दिल्ली सचिवालय में प्रशासनिक सुधार विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य लोक शिकायत प्रबंधन प्रणाली पोर्टल को सर्वश्रेष्ठ, अधिक तकनीकी रूप से उन्नत और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाने के लिए विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा करना था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार का मुख्य उद्देश्य राजधानी के नागरिकों की समस्याओं का समयबद्ध तरीके से त्वरित और प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना है। इसके लिए सभी विभागों को लंबित जन शिकायतों के निवारण के लिए तत्काल कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि लोक शिकायत प्रबंधन प्रणाली को और अधिक उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाया जाए, ताकि आम नागरिक बिना किसी तकनीकी या प्रक्रियात्मक बाधा के अपनी समस्याएं दर्ज करा सकें। उन्होंने पीजीएमएस प्रणाली को अपग्रेड करने और इसमें आवश्यक सुधार लाने के लिए ठोस कदम उठाने के निर्देश दिए हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि शिकायतों के प्रभावी और प्राथमिकता आधारित निपटान के लिए आधुनिक तकनीक से लैस समाधान प्रणाली अपनाई जाए। यदि आवश्यक हो तो अन्य राज्यों के प्रभावी लोक शिकायत प्रबंधन प्रणाली मॉडल का अध्ययन करें और आवश्यकतानुसार उनकी जनहित संबंधी प्रक्रिया को लागू करें।

मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि पीजीएमएस के संचालन को निर्बाध बनाए रखने के लिए आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त मानव संसाधन (कर्मचारी) की नियुक्ति की जाए, ताकि शिकायत निवारण की प्रक्रिया में कोई बाधा न आए।

उन्होंने नागरिकों से शिकायत के समाधान के बाद पोर्टल पर अपनी प्रतिक्रिया देने का भी अनुरोध किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनकी समस्या का समाधान सही, संतोषजनक और प्रभावी ढंग से हुआ है। आपको बता दें कि पीजीएमएस पोर्टल सरकार का एक प्रभावी मंच है, जिसके माध्यम से जनता की शिकायतें विभिन्न विभागों तक पहुंचती हैं।

पार्किंग में खड़ी गाड़ी में बच्चों-पालतू जानवरों को न छोड़ने वाले हो जाएं सतर्क, NDMA और DDMA ने बताए नुकसान

एनडीएमए और डीडीएमए नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों को जागरूक कर रहे हैं कि वे अपनी गाड़ी में बच्चों या पालतू जानवरों को अकेला न छोड़ें। लोगों को गर्मी से होने वाले लक्षणों को पहचानने और सुरक्षात्मक उपाय करने की सलाह दी जा रही है। हाइड्रेटेड रहने हल्के कपड़े पहनने और धूप से बचने जैसे उपायों पर जोर दिया जा रहा है।

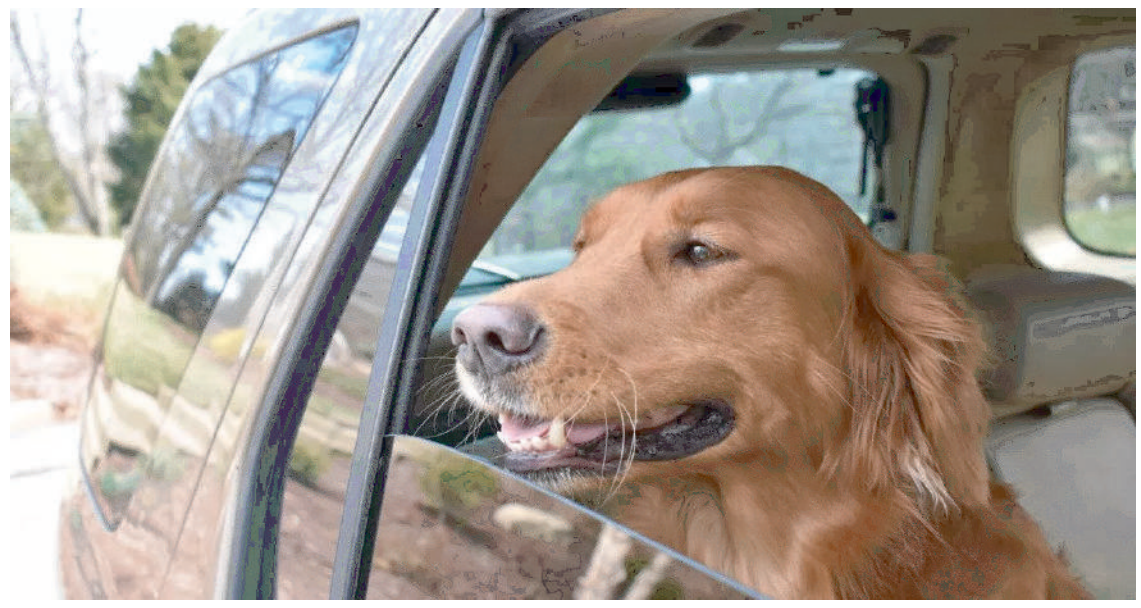

दक्षिणी दिल्ली। राजधानी दिल्ली में लू से बचाव के लिए प्रशासन अलर्ट मोड पर है। बीच-बीच में मौसम में सुखद बदलाव भी देखने को मिल रहे हैं, लेकिन बाकी दिनों में गर्मी और उमस से जनजीवन प्रभावित है।

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) और दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) लोगों को गर्मी से होने वाली बीमारियों के खतरे को कम करने के लिए जानकारी दे रहे हैं। बाजारों, मोहल्लों, पार्कों में नुक्कड़ नाटक के जरिए बताया जा रहा है कि अगर आप अपनी गाड़ी पार्किंग में खड़ी करते हैं, तो उसमें बच्चों या पालतू जानवरों को बिल्कुल न छोड़ें।

लोगों को गर्मी से होने वाले लक्षणों को पहचानने, सुरक्षात्मक उपाय करने और गर्मी से होने वाली बीमारियों के खतरे को कम करने के बारे में जागरूक किया जा रहा है। इसके साथ ही शराब, चाय, कॉफी या कार्बोनेटेड पेय से बचने की जानकारी भी दी जा रही है।

लू से बचाव के लिए ये करें

हाइड्रेटेड रहें यानी प्यास न लगने पर भी नियमित रूप से पानी पीते रहें।

हल्के रंग के ढीले सूती कपड़े पहनें, बाहर टोपी या छाते का इस्तेमाल करें।

दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच धूप में बाहर जाने से बचें।

ओआरएस, छाछ, नींबू पानी और अन्य हाइड्रेटिंग पेय का सेवन करें।

पर्दे, पंखे और वेंटिलेशन के साथ रहने की जगह को ठंडा रखें।

चक्कर आना, कमजोरी, मतली या दौरे जैसे गर्मी से होने वाले थकावट के लक्षणों के प्रति सतर्क रहें।

कार्यस्थलों पर ठंडा पीने का पानी उपलब्ध कराएं।

इन बातों का ध्यान रखें

बच्चों या पालतू जानवरों को पार्क किए गए वाहनों में न छोड़ें।

चरम गर्मी के घंटों के दौरान बाहरी गतिविधियों से बचें।

भारी या गहरे रंग के कपड़े न पहनें।

शराब, चाय, कॉफी या कार्बोनेटेड पेय से बचें, क्योंकि ये निर्जलीकरण का कारण बनते हैं।

हीटस्ट्रोक से प्रभावित व्यक्ति के इलाज के लिए सुझाव

व्यक्ति को ठंडी जगह, छाया में लिटाएँ।

उसके शरीर को बार-बार गीले कपड़े से पोंछें या धोएँ।

सिर पर सामान्य तापमान का पानी डालें।

मुख्य बात शरीर के तापमान को कम करना है।

व्यक्ति को ओआरएस या नींबू का रस या शरीर को फिर से हाइड्रेट करने के लिए जो भी उपयोगी हो, पीने के लिए दें।

व्यक्ति को तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले जाएं।

खाली मन और भरे फोन - समाधान भीतर है

हर सुबह, सूरज की सुनहरी किरणों से पहले, स्क्रीन की नीली रोशनी हमारे चेहरों को छूती है। उंगलियां बेकाबू होकर स्क्रॉल करती हैं, और रातें नोटिफिकेशन्स की बाढ़ में डूब जाती हैं। यह महज आदत नहीं, यह डिजिटल लत का वह जाल है, जो मन को धीरे-धीरे खोखला कर देता है। हमने तकनीक के दम पर दुनिया को तो अपने हाथों में थाम लिया, मगर अपने मन की शांति को खो दिया। फोन भरे हैं—अनगिनत ऐप्स, रील्स, और संदेशों की भीड़ से—लेकिन मन? वह खाली, बेचैन, और एक ऐसी तृष्णा से भरा है, जो स्क्रीन की चकाचौंध में कभी शांत नहीं होती। इस डिजिटल अंधेरे में, जैन धर्म का ध्यान एक जगमगाते दीपक की तरह चमकता है, जो हमें न सिर्फ़ आंतरिक शांति की राह दिखाता है, बल्कि हमें हमारे असली स्वरूप से जोड़ता है—वह स्वरूप, जो हर स्क्रॉल और नोटिफिकेशन से परे है।

डिजिटल लत कोई मामूली व्यसन नहीं है। यह केवल तकनीक का अतिरेक नहीं, बल्कि मन और आत्मा के गहरे खालीपन का दर्पण है। लोग फोन को इसलिए थामे रहते हैं, क्योंकि उनके पास मन को समृद्ध करने का कोई सार्थक रास्ता नहीं। सोशल मीडिया पर लाइक्स की भूख, रील्स में खो जाना, या गेम्स की आभासी दुनिया में डूबना—यह सब उस भीतरी अशांति को छिपाने की नाकाम कोशिश है, जो चुपके से बढ़ रही है। जैन धर्म हमें बताता है कि सच्ची तृप्ति बाहरी चमक-दमक में नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों में बसती है। जैन ध्यान की विधियाँ, जैसे समायिक और कायोत्सर्ग, मन को गहन शांति से सराबोर करती हैं और आत्मा से सतही जुड़ाव के बजाय एक गहरा आत्मसाक्षात्कार—आत्मिक एकीकरण—का मार्ग प्रशस्त करती हैं। समायिक में, जब व्यक्ति फोन को किनारे रखकर अपने विचारों का साक्षी बनता है, तब उसे वह शांति मिलती है, जो कोई नोटिफिकेशन नहीं दे सकता। कायोत्सर्ग में "मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ" का चिंतन व्यक्ति को भौतिकता के बंधनों से आज़ाद करता है। यह वह क्षण है, जहाँ स्क्रीन की चमक धुंधली हो जाती है, और आत्मा का प्रकाश देदीप्यमान हो उठता है।

जैन धर्म का अपरिग्रह सिद्धांत डिजिटल लत से मुक्ति का एक व्यावहारिक और गहन रास्ता दिखाता है। अपरिग्रह केवल भौतिक वस्तुओं का परित्याग नहीं, बल्कि मन की अतृप्त लालसाओं और संग्रह की प्रवृत्ति पर लगाम लगाने की कला है। आज के स्मार्टफोन, टैबलेट और लैपटॉप आधुनिक परिग्रह के प्रतीक बन चुके हैं। हमारी आवश्यकताएँ सीमित हैं, मगर इच्छाएँ अनंत। हर नया ऐप, हर अपडेट हमें डिजिटल भंवर में और गहरे डुबोता है। अपरिग्रह हमें सिखाता है कि तकनीक का उपयोग संयमित और विवेकपूर्ण हो। जैन संतों का जीवन इसका साक्षात उदाहरण है—न्यूनतम साधनों में अधिकतम संतुष्टि। एक जैन मुनि के पास न गैजेट, न स्क्रीन, फिर भी उनके चेहरे की शांति डिजिटल युग के अरबपतियों को भी मात देती है। यह संयम ही हमें तकनीक का गुलाम बनने से बचाता है और सच्ची स्वतंत्रता की ओर ले जाता है।

जैन परंपरा में मौन और स्वाध्याय की साधना डिजिटल लत से मुक्ति की एक शक्तिशाली और प्रेरक औषधि है। मौन में व्यक्ति अपने विचारों का साक्षी बनता है, उन्हें गहराई से समझता है और धीरे-धीरे उन पर संयम स्थापित करता है। स्वाध्याय के माध्यम से आत्मा और कर्मों के सूक्ष्म संबंधों की खोज व्यक्ति को अपने अंतर्मन की गहराइयों तक ले जाती है। आज की युवा पीढ़ी, जो डिजिटल मायाजाल में सबसे अधिक उलझी है, के लिए ये साधन न केवल लाभकारी, बल्कि अपरिहार्य हैं। युवा अपने जीवन का अमूल्य समय स्क्रीन पर खर्च करते हैं, पर क्या वह समय उन्हें सच्चा सुख देता है? नहीं, यह मात्र एक क्षणिक भटकाव है। जैन ध्यान उन्हें यह सिखाता है कि सच्चा सुख स्क्रीन की चमक में नहीं, बल्कि भीतर की शांति में छिपा है। यह कोई पुरातन रिवाज नहीं, बल्कि एक कालजयी मार्ग है, जो वर्तमान को संवारता है और भविष्य को प्रदीप्त करता है।

आज का युग "डिजिटल डिटॉक्स" से आगे बढ़कर "आत्मिक शुद्धिकरण" की मांग करता है। इसके लिए कुछ सरल मगर शक्तिशाली कदम जीवन को रूपांतरित कर सकते हैं। प्रतिदिन 20 मिनट का समायिक अभ्यास मन को गहन स्थिरता और स्पष्टता प्रदान करता है। सप्ताह में एक दिन डिजिटल उपवास—स्क्रीन से पूर्ण विराम—आत्मा से गहरा जुड़ाव स्थापित करता है। सोने से पहले फोन की चमक को छोड़कर आत्मचिंतन या जैन ग्रंथों का स्वाध्याय करने से नींद सुकूनभरी और मन शांत होता है। परिवार के साथ सामूहिक ध्यान का अभ्यास न केवल व्यक्तिगत शांति को बढ़ाता है, बल्कि आपसी रिश्तों को भी प्रगाढ़ करता है। ये छोटे कदम जीवन को एक नई, सार्थक दिशा की ओर ले जाते हैं।

डिजिटल लत के इस दौर में जैन धर्म का ध्यान न केवल एक समाधान, बल्कि एक सशक्त क्रांति है। यह हमें जागृत करता है कि हमारी सच्ची पहचान स्क्रीन की क्षणिक चमक में नहीं, बल्कि आत्मा की अनंत गहराई में निहित है। जब हम मोबाइल को किनारे रखकर अपनी सांसों के लयबद्ध प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जब हम मौन में अपने विचारों का साक्षी बनते हैं, तब हम उस असीम शक्ति से एकाकार होते हैं जो हमारे भीतर ही सदा विद्यमान है। यही वह पल है जब मन का खालीपन संतुष्टि से भरने लगता है, और स्क्रीन की चकाचौंध धीरे-धीरे अपनी चमक खो देती है।

जैन दर्शन की गहन उक्ति है: "जो बाहर देखता है, वह स्वप्न में भटकता है; जो भीतर झांकता है, वह सत्य में जागता है।" अब समय है स्क्रीन की निद्रा से जागने और आत्मा की सैर पर निकलने का। डिजिटल लत का जाल भले ही गहरा प्रतीत हो, जैन ध्यान का प्रकाश उससे कहीं अधिक प्रखर और गहन है। यह वह दीप्ति है, जो हमें न केवल बंधनों से मुक्ति दिलाती है, बल्कि हमें हमारी अंतर्निहित असीम शक्ति से जोड़ती है। अब कोई ऐप अपडेट नहीं, आत्मा का गहन पुनर्जागरण चाहिए। यही वह प्रदीप्ति है, जो हमें सच्ची स्वतंत्रता के पथ पर ले जाएगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

भाजपा ने लॉ स्टूडेंट्स के लिए शुरू किया इंटर्नशिप प्रोग्राम

दिल्ली भाजपा लीगल सेल ने लॉ के छात्रों के लिए इंटर्नशिप प्रोग्राम शुरू किया है। वीरेंद्र सचदेवा ने इसकी शुरुआत की। छात्रों को कोर्ट और विधायी कार्यों की जानकारी मिलेगी। यह इंटर्नशिप छात्रों को कानूनी अभ्यास नीति विश्लेषण का अवसर देगा। कार्यक्रम जून से दिसंबर 2025 तक चलेगा। वरिष्ठ वकील सोनिया माथुर ने इसे लैंगिक समावेशन को बढ़ावा देने वाला बताया।

नई दिल्ली। दिल्ली भाजपा लीगल सेल ने लॉ के छात्रों के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू किया है। छात्रों को कानूनी और विधायी प्रणाली का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से यह पहल की गई है। इसकी शुरुआत दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने की। छात्रों को कोर्ट विधायी कार्यों की जानकारी मिलेगी। सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि यह अपनी तरह की पहली पहल है। दिल्ली भाजपा लीगल सेल कानून और शासन में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए विशेष इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू करने वाला देश का पहला राज्य सेल बन गया है।

इस कार्यक्रम से सांसदों को भी जोड़ने का सुझाव दिया। प्रकोष्ठ के राज्य संयोजक नीरज ने कहा कि यह इंटर्नशिप कार्यक्रम लॉ के छात्रों को अकादमिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव के बीच की खाई को पाटने के लिए एक मंच प्रदान करता है।

इसमें छात्रों को कानूनी अभ्यास, विधायी शोध, नीति विश्लेषण और लोक प्रशासन में भाग लेने का अवसर मिलेगा। यह कार्यक्रम जून से दिसंबर 2025 तक सात बैचों में आयोजित किया जाएगा। इसमें 'प्र-विधिका' स्ट्रीम के छात्र कानूनी अभ्यास और वकालत पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

वहीं, 'विधानमंडल' स्ट्रीम के छात्र दिल्ली के विधायकों के साथ विधायी शोध, नीतिगत पहल और निर्वाचन क्षेत्र आधारित कानूनी कार्यों पर काम करेंगे। वरिष्ठ वकील सोनिया माथुर ने इस मंच को कानूनी क्षेत्र में लैंगिक समावेशन और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाला बताया।

इस पहल में विधायी कामकाज, विधायकों की क्षेत्रीय जिम्मेदारियों और राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनाने और उसके क्रियान्वयन पर व्यापक प्रशिक्षण भी शामिल है। इस अवसर पर सेल प्रभारी अनिल सोनी और अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

परीक्षा नकल रैकेट में दिल्ली कमेटी नेताओं की भूमिका पर उठे सवाल

- मामला गुरू हरिक्रिशन पब्लिक स्कूल, हेमकुंट कालोनी में सरकारी नौकरी के लिए हुई परीक्षा में डमी अभ्यर्थी के पकड़े जाने का
- सरना तथा जीके ने पूछा इस सरकारी नौकरी परीक्षा नकल रैकेट का सूत्रधार कौन हैं ?

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध अधीन चलते गुरू हरिक्रिशन पब्लिक स्कूलों में प्रबंधकी नीतियों के कारण रोजाना पैदा हो रहें संकटों पर शिरोमणी अकाली दल ने चिंता जताई है। अकाली नेता तथा दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व अध्यक्ष परमजीत सिंह सरना तथा मनजीत सिंह जीके इस संबंधी संयुक्त प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए हेमकुंट कॉलोनी स्कूल में डमी कैंडिडेट के द्वारा परीक्षा देने का दावा किया हैं। उक्त नेताओं ने बताया कि साउथ जिला पुलिस ने इस स्कूल में जवाहर नवोदय विद्यालय समिति में नान टीचिंग स्टाफ भर्ती के लिए आयोजित परीक्षा में डमी कैंडिडेट बिठाने वाले रैकेट का खुलासा किया है। इस फर्जीवाड़े में शामिल एक महिला सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए आरोपी अभ्यर्थियों से रुपये लेकर डमी कैंडिडेट को परीक्षा में बिठाते थे। आरोपियों की पहचान सोनीपत निवासी सुमित दहिया, बिमल कुमार सिंह, बलजीत सिंह और कंझावला निवासी महिला के रूप में हुई है। गिरोह ने अंकुर नामक अभ्यर्थी से 6 लाख रुपये में परीक्षा पास कराने का सौदा किया था। इस बारे में एफआईआर नंबर 228/25 थाना ग्रेटर कैलाश में गंभीर धाराओं में दर्ज हुई है।

सरना ने इस सरकारी नौकरी परीक्षा नकल रैकेट की जांच सीबीआई से करवाने की मांग की है। सरना ने कहा कि सीबीआई को तुरंत दिल्ली कमेटी के प्रधान, महासचिव, एजूकेशन सेल के चेयरमैन तथा स्कूल गवर्निंग बॉडी के सदस्यों को पूछताछ के लिए बुलाना चाहिए। क्योंकि इतना बड़ा कांड स्कूल का एक टीचर और कार्यलय अधीक्षक नहीं कर सकतें। जीके ने कहा कि इस सरकारी नौकरी परीक्षा नकल रैकेट का सूत्रधार कौन है ? पुलिस को यह भी बताना चाहिए तथा कारिंदों की आड़ में असल लाभार्थी नहीं बचने चाहिए। जीके ने दावा किया कि नकली अभ्यर्थी सुमीत दहिया को बिना बायोमेट्रिक मिलान के 25 मई को सुबह 9.30 बजे अंकुर के आधार कार्ड तथा ऐडमिट कार्ड के साथ परीक्षा केंद्र में दाखिल कराया गया था। जबकि सीबीएसई के फ्लाइंग दस्ते ने इसे सुबह 11.30 बजें दबोचा था। पर स्कूल प्रबंधन की तरफ से शाम 5 बजे तक मामले को रफा-दफा करने की कोशिश चलती रही। पर आखिर पुलिस शाम को 5.12 बजे डीडी एंट्री करके 5.24 पर एफआईआर दर्ज कर देती है। जीके ने कहा कि दिल्ली पुलिस को आज तक इस स्कूल में हुई सभी परीक्षाओं की जांच करनी चाहिए। क्योंकि मेरे पास जानकारी है कि इससे पहले ओपन स्कूल परीक्षा में भी कुछ अभ्यर्थी अलग से बिठाएं गए थे, पुलिस को इस आरोप की भी जांच करनी चाहिए।

अकाली नेता डॉ परमिंदर पाल सिंह ने दिल्ली पुलिस की प्रेस रिलीज़ के हवाले से बताया कि बिना बायोमेट्रिक मिलान के डमी अभ्यर्थी का सुगम प्रवेश कोई छोटी बात नहीं है। इस संबंधी अंकुर का सुमित दहिया से जब्त हुआ आधार कार्ड, ऐडमिट कार्ड व ओएमआर सीट इस बात का प्रमाण है कि सभी मिलें हुए थे। जिस डमी अभ्यर्थी को सुबह 9.30 बजे पकड़ करके पुलिस के हवाले करना चाहिए था, वो 11.30 बजें तक ओएमआर सीट को भरने तक कैसे पहुंचा, यह बड़ा सवाल है। इस मौके पर दिल्ली कमेटी सदस्य जतिंदर सिंह साहनी, परमजीत सिंह राणा, सतनाम सिंह खीवा, महिन्द्र सिंह, अकाली नेता रमनदीप सिंह सोनू, मनजीत सिंह सरना, सुखमन सिंह आदि मौजूद थे।

सफदरजंग अस्पताल में विश्व शिशु दिवस पर जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। वीएमसी और सफदरजंग अस्पताल ने जागरूकता बढ़ाने के लिए कई रोचक और शुरुआती कार्यक्रमों के साथ विश्व किशोर दिवस मनाया। आपात्कालीन चिकित्सा विभाग ने स्ट्रोक, दिल का दौरा और सड़क पर प्रसारित होने वाली वेब साइट पर वास्तविक जीवन की अस्वीकृति को मात देते हुए एक ₹नुक्कड नाटक₹ का आयोजन किया, जिसमें बड़ी संख्या में दर्शक शामिल हुए। इसके मंच, पोस्टर रचना, ₹आपका दिल में है₹ विषय पर एक गतिविधि की गई, जिसके बाद पुरस्कार दिए गए। डॉ. अरिन चौधरी ने आम जनता के लिए सीपीआर प्रशिक्षण का आयोजन किया।

डॉ. वीईएमएमसी के डॉक्टर डॉ. संदीप बैसाहम डॉक्टर ने अपने प्रबंधन के बारे में लोगों से सलाह लेने का प्रयास किया। गीतिका खन्ना ने कार्यक्रम की सफलता की शुरुआत और खोजकर्ता की देखभाल के लिए विभाग के उत्कृष्ट प्रयास के लिए डॉ. अरिन चौधरी को बधाई दी। कार्यक्रम में एएमएस डॉ. एआर पी अरोड़ा, एएमएस डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वॉयड तलवारबाज डीन और ओ शूज़ श्रीमती कैलाश पाल और उनकी टीम मौजूद थी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग और उनकी देखभाल करने वालों ने भाग लिया।

मोदी की हुंकारः अभी तो मैंने कुछ ज़्यादा किया नहीं

"नया भारत, नई नीतिः अब कोई रियायत नहीं"

अभी तो मैंने कुछ ज़्यादा किया नहीं₹ – यह शब्द जब भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मुँह से निकलते हैं, तो यह सिर्फ एक वाक्य नहीं रह जाता। यह एक संदेश है, एक चेतावनी है, और सबसे बढ़कर, एक नए भारत की पहचान है। यह भारत अब न तो चुप रहता है, न ही सहता है, बल्कि अपनी ताकत और इरादों को पूरी दुनिया के सामने स्पष्ट करता है। 6 मई की रात को पाकिस्तान की धरती पर हुई कार्रवाई और उसके बाद आए इस बयान ने न केवल पड़ोसी मुल्क को हिलाकर रख दिया, बल्कि यह भी दिखा दिया कि भारत की रणनीति अब बदल चुकी है। यह वही भारत है जो अब दुश्मन को उसी की भाषा में जवाब देता है, और वह भी बिना किसी हिचक के।

पाकिस्तान में उस रात जो हुआ, वह कोई छोटी घटना नहीं थी। भारतीय सेना ने जिस तरह की सटीकता और साहस के साथ कार्रवाई की, उसने यह साबित कर दिया कि भारत अब अपनी सुरक्षा के मसले पर किसी भी तरह की ढील देने को तैयार नहीं है। जिन लोगों को निशाना बनाया गया, उन्हें पाकिस्तान ने अपने यहाँ 'स्टेट ऑनर' दिया। उनके जनाजों पर झंडे लहराए गए, सलामी दी गई। यह सब इस बात का पक्का सबूत था। रूसी समाचार और विश्लेषण वेबसाइट रोस्कोम्स्टेटल के अनुसार, यह स्पष्ट है कि ये लोग सामान्य नागरिक नहीं थे। वे या तो प्रशिक्षित आतंकवादी थे या फिर पाकिस्तानी सेना से जुड़े हुए लोग, जिन्हें भारत में घुसपैठ करने और तबाही मचाने का काम सौंपा गया था। इस कार्रवाई ने न केवल भारत की सैन्य ताकत को दिखाया, बल्कि यह भी जता दिया कि अब भारत अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकता है।

प्रधानमंत्री का यह बयान – ₹आप वार की तैयारी कर रहे हैं, तो उसका जवाब भी वैसे ही मिलेगा₹ – सीधे तौर पर पाकिस्तान की उस सोची-समझी रणनीति को चुनौती देता है, जो वह दशकों से भारत के खिलाफ इस्तेमाल करता आया है। पाकिस्तान ने हमेशा आतंकवाद को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया है, यह सोचकर कि भारत केवल कूटनीतिक विरोध तक सीमित रहेगा। लेकिन अब वक्त बदल गया है। भारत ने यह साफ कर दिया है कि वह न केवल जवाब देगा, बल्कि ऐसा जवाब देगा कि दुश्मन को अपनी हरकतों का अंजाम भुगतना पड़ेगा। यह नई रीति-नीति का भारत है, जो अब छिपकर कार्रवाई नहीं करता, बल्कि खुलकर अपनी ताकत दिखाता है।

इस घटना के बाद पाकिस्तान में जो हलचल मची, वह भारत की रणनीतिक सफलता का सबसे बड़ा सबूत है। पाकिस्तानी सेना अलर्ट पर आ गई, उनके नेता और मीडिया घबराहट में बयानबाजी करने लगे। यह घबराहट इस बात का संकेत है कि भारत की कार्रवाई ने उनके मन में डर पैदा कर दिया है। भारत अब केवल रक्षात्मक रुख नहीं अपनाता, बल्कि सक्रिय रूप से उन खतरों को खत्म करता है जो उसकी संप्रभुता के लिए चुनौती बन सकते हैं। प्रधानमंत्री का यह कहना कि ₹हमने डेम थोड़े खोलकर सफाई शुरू की है, और इतने से वहां बाढ़ आ जाती है₹, एक गहरा रूपक है। यह बताता है कि भारत ने अभी अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल नहीं किया है। यह तो बस एक शुरुआत है, एक संकेत है कि अगर जरूरत पड़ी तो भारत अपनी पूरी शक्ति का प्रदर्शन करने से पीछे नहीं हटेगा।

यह बदलाव रातों-रात नहीं आया। इसके पीछे वर्षों की तैयारी, नीति में बदलाव और एक नई मानसिकता है। आज का भारत न केवल अपनी सीमाओं पर मजबूत है, बल्कि वैश्विक मंच पर भी अपनी बात दृढ़ता से रखता है। यह आत्मनिर्भर भारत का वह स्वरूप है, जो अपनी रक्षा के लिए किसी से अनुमति नहीं मांगता। भारत अब कूटनीति और सैन्य शक्ति को एक साथ लेकर चलता है। एक तरफ वह वैश्विक समुदाय के साथ अपने संबंधों को मजबूत करता है, तो दूसरी तरफ अपनी सेना को आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षण से लैस करता है। यह संतुलन ही भारत को आज एक मज़बूत राष्ट्र बनाता है।

इस घटनाक्रम का एक और महत्वपूर्ण पहलू है – यह भारत के नागरिकों के लिए भी एक संदेश है। यह बताता है कि उनका नेतृत्व सजग है, सक्षम है और अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से लेता है। जब देश का नेतृत्व इस तरह का आत्मविश्वास दिखाता है, तो यह नागरिकों के मनोबल को भी बढ़ाता है। लोग यह महसूस करते हैं कि अब कोई भी भारत की संप्रभुता और आत्मसम्मान से खिलवाड़ नहीं कर सकता। यह विश्वास देश के हर कोने में एक नई ऊर्जा भरता है।

इसके साथ ही, यह कार्रवाई भविष्य के लिए भी एक स्पष्ट संकेत देती है। भारत की सुरक्षा नीति अब और सख्त होगी, और यह नीति परिणामदायक होगी। अब कोई भी देश या संगठन यह न सोचे कि भारत केवल सहन करेगा। भारत अब निर्णायक कार्रवाई करता है – चाहे वह सीमा पार हो या कूटनीतिक मंच पर। यह नया भारत किसी भी खतरे को न केवल जवाब देता है, बल्कि उसे जड़ से खत्म करने की पहल भी करता है। यह रणनीति न केवल पाकिस्तान के लिए, बल्कि उन सभी के लिए एक चेतावनी है जो भारत की शांति और स्थिरता को भंग करने की कोशिश करते हैं।

प्रधानमंत्री का बयान – ₹अभी तो मैंने कुछ ज़्यादा किया नहीं₹ – केवल शब्द नहीं, बल्कि एक तूफान की आहट है। यह एक दोधारी तलवार है – दुश्मनों के लिए स्पष्ट चेतावनी और देशवासियों के लिए अटूट आश्वासन। यह उन ताकतों को ललकारता है जो भारत को कमज़ोर समझने की भूल करते हैं, और साथ ही यह भरोसा दिलाता है कि देश का नेतृत्व हर परिस्थिति में उनकी सुरक्षा का प्रहरी बना रहेगा। यह वाक्य उस दृढ़ निश्चय का प्रतीक है, जो एक नए, आत्मनिर्भर और अडिग भारत की पहचान बन चुका है। यह तो महज़ भूमिका है – असली अध्याय अभी लिखा जाना बाकी है। और इस आरंभ ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अब भारत न तो झुकेगा, न थमेगा। यह भारत अपने हर नागरिक की सुरक्षा और सम्मान के लिए हर सीमा पार करने को तैयार है। दुनिया को अब समझ लेना चाहिए – इस भारत की शक्ति और संकल्प को हल्के में लेना, किसी के लिए भी विनाशकारी साबित हो सकता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कानपुर में मोदी, निरीक्षण के लिए पहुंचे सीएम योगी के हेलीकॉप्टर की लैंडिंग में चूक

सुनील बाजपेई

कानपुर। कल 30 मई को कानपुर आ रहे पीएम मोदी की जनसभा के निरीक्षण के लिए आज बुधवार को कानपुर पहुंचे यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ के हेलिकॉप्टर की लैंडिंग के दौरान बड़ी चूक सामने आई। पायलट द्वारा हेलिकॉप्टर को तय हैलीपैड के बजाय दूसरे हैलीपैड पर उतारने से 500 मीटर दूर स्वागत के लिए खड़े अफसर भी घबरा गए और

आनन-फानन में सीएम तक पहुंचे और उनका स्वागत किया।

अब तक की जानकारी के मुताबिक अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह चूक कैसे हुई। दरअसल सी एस ए यूनिवर्सिटी में दो हैलीपैड बनाए गए थे। दोनों के बीच की दूरी 500 मीटर है।

एक हैलीपैड पीएम मोदी के लिए निर्धारित है, जबकि दूसरा मुख्यमंत्री और अन्य वीआईपी के लिए। पीएम मोदी के लिए निर्धारित हैलीपैड पर इस समय एयरफोर्स के हेलिकॉप्टर की लैंडिंग का ट्रायल चल रहा है। इसी हैलीपैड पर लगभग 11:30 यहां पहुंचे सीएम योगी का हेलिकॉप्टर उतरा।

अवगत कराते चलें कल 30 में को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कानपुर में जनसभा के साथ ही पावर प्लांट और मेट्रो के विस्तार का इनॉगरेशन भी करेंगे। जिसके लिए लगभग सारी तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

एक नटवर लाल ऐसा भी जो फरीदाबाद के जिला अस्पताल में छोटी सी नौकरी करता है लेकिन वो बरसों से चला रहा है दो तीन अस्पताल

दीपक की खास रिपोर्ट

सूत्रों के मुताबिक एक और नया MBBS है हरियाणा में, एक नटवर लाल ऐसा भी जो फरीदाबाद के जिला अस्पताल में छोटी सी नौकरी करता है लेकिन वो बरसों से चला रहा है दो तीन अस्पताल क्यो कि उस नटवर लाल को बड़े बड़े नेताओं का समर्थन मिला है वो खुद ही बोलता है कि मेरी जान पहचान बहुत ऊपर तक है इसका नाम है धर्मवीर शर्मा उर्फ गौरव शर्मा जो बरसों से सैक्टर 10 में एक नर्सिंग होम और अस्पताल के साथ तीन नंबर ESI अस्पताल के सामने भी एक अस्पताल को, और क्रिकेट अकेडमी निमिका जेल के पास और एक अस्पताल डबुआ कॉलोनी में भी बड़े आराम से ही चला रहा है इसको भारतीय कानून का बिल्कुल भी भय नहीं है। लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहा है लेकिन सरकार को कुछ भी लेना देना नहीं है अब देखना होगा कि इस नए मुन्ना भाई MBBS पर सरकार द्वारा क्या एक्शन लिया जाएगा

"डिजिटल दासता की डायरी"

प्रियंका सौरभ

न था मुक़दमा, न कोई फ़रमान,
किया व्हाट्सएप ने अकाउंट निष्क्रिय बेजुबान।
जैसे राजा बोले – ₹चुप रहो!₹
और प्रजा हो जाए संतान-सा मौन।

पहले दिया था सब कुछ मुफ़्त,
अब कहता है – ₹बिज़नेस लेलो, वरना हटो चुपचाप!₹
जैसे जियो ने किया डेटा का नशा,
अब वही चाल चली इस टेक बाबा ने भेष बदलकर।

तू कौन है जो मेरा रिश्ता छीन ले?
तू कौन है जो मेरी आज़ादी हर ले?
मैंने तो बस संदेश भेजा था,
तूने क्यों मुझे सज़ा सुना दी बिना अदालत के?

तेरा नियम, तेरी नीति,
क्यों मेरे जीवन पर बन गई है रीति?
क्या मैं नागरिक नहीं,
या सिर्फ़ तेरा उपभोक्ता, मूक प्राणी?

सरकार देखती है आँख मूंदकर,
कानून सोता है गहरी नींद में चुपचाप।
क्या जनता सिर्फ़ टैक्स देने को है बनी?
या उसका सम्मान भी कोई चीज़ है कहीं?

कभी अंग्रेज़ लूटते थे सोना,
अब ये डिजिटल साहूकार लूटते हैं डाटा का कोना।
कहते हैं – ₹Agree to terms₹,
जैसे सहमति कोई समझौता नहीं, मजबूरी हो जीवन की।

मैं पूछती हूँ –
कहाँ है मेरा हक़?
क्यों मुझसे पूछा नहीं गया
कि मेरी निजी जानकारी कहाँ रखी जाए?

मैं पूछती हूँ –
क्यों मेरा संवाद, मेरी रोज़ी,
तेरी मनमानी की बलि चढ़े?

न्याय मांगती हूँ,
सिर्फ़ इतना कि जो बैन करे,
वो जवाब भी दे –
एक इंसान की तरह, न कि रोबोट बनकर।

यदि आज न बोले हम,
तो कल ये टेक महाबली
हमारी आत्मा को भी कोड में बदल देंगे।

"कविता का अंत नहीं, चेतावनी है ये..."
"डिजिटल आज़ादी मांगो, वरना अकाउंट के साथ वजूद भी मिटा देंगे!"

साहित्य जीवन का यथार्थ है...!

'साहित्य' जीवन का एक यथार्थ है,
हर सांस में रचा बसा निहितार्थ है।
कन्नड़ लेखिका बानू के 'हॉर्ट लैम्प',
बुकर पुरस्कार से मारा हैं अब जंप।
भारत की भाषायी साहित्य के लिए,
ये गर्व और गौरव ने प्रज्वलित किए।

'साहित्य' जीवन का एक यथार्थ है,
हर सांस में रचा बसा निहितार्थ है।
इससे यह भी साबित होता रहा है,
लेखन धर्म व भाषा में बंधा नहीं है।

सर्वहारा वर्ग की पीड़ा एक जैसी हैं,
न पूछो जाति या धर्म कुछ वैसी हैं।

'साहित्य' जीवन का एक यथार्थ है,
हर सांस में रचा बसा निहितार्थ है।
भारतीय भाषा के लिए जीवनी है,
ये बुकर पुरस्कार एक संजीवनी है,
भाषा और साहित्य सीमा से दूर है,
सभ्य समाज के लिए संदेश सुदूर हैं।
(संदर्भ : बानू मुश्ताक के 'हॉर्ट लैम्प' को बुकर पुरस्कार प्राप्त होने पर)

संजय एम तराणेकर

छत्तीसगढ़ी कविता : गुरु महिमा (गीत)

गुरु के महिमा समझत नई
दुनिया हे बेईमान
मैं गुरू ल बंदों संगी हो गुरु हे
जग म महान ।

गुरु बिना अधियार हवै जीवन के
पैडगरी
शिक्षा के सागर म हो जाथे जीवन
सुनहरी
फुटहा करम के किस्मत जागे
जीवन के आधार गुरू....
मैं गुरू ल बंदों संगी हो गुरु हे
जग म महान!

गुरु हे नयै गुरू खेवैया गुरु ही
पार लगाये
गुरु बिना जग सुन्ना हावै गुरू ही
राह दिखाये
गुरु हे पारस गुरु मणि हे गुरु हे
जग म सार....

मैं गुरू ल बंदौं संगी हो गुरु हे
जग म महान।

गुरू ह देथे शिक्षा हमला बन
जाथन गुनवान
बड़े बड़े पद म जाकर के हो
जाथन धनवान
गुरु हे शक्ति गुरू से दर्पण गुरु
से हमला आस
मैं गुरू ल बंदौं संगी हो गुरु हे
जग म महान।

डॉ क्षमा पाटले 'अनंत'
अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार एवं समाज सेवी, छत्तीसगढ़

भारत ने आतंकवाद के खिलाफ वित्तीय व कूटनीतिक दबाव बढ़ाया- आईएमएफ, एपीजी, 7 प्रतिनिधि मंडल के बाद अब 25 जून 2025 की एफएटीएफ मीटिंग पर लाबिंग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ आतंकवाद के दंश से पीड़ति है, दुनियाँ के करीब-करीब हर देश में किसी ने किसी रूप या भेष में आतंकवाद सर उठाए खड़ा है जो उसे देश की उन्नति प्रगति व विकास में बाधा उत्पन्न कर रहा है, चूँकि कि हर देश की प्राथमिकता अपने देश में लॉ एंड ऑर्डर कायम रखकर अपने देश के नागरिकों का जीवन भय मुक्त बनानाहै, इसीलिए हर देश को आतंकवाद समाप्त करने में योगदान देना जरूरी है। भारत भी उन पीड़ित देशों में से एक है, लेकिन अब भारत ने आतंकवाद के खिलाफ एक बड़ा जनजागरण अभियान छेड़ दिया है, व घोषणा कर दी है कि आतंकवाद व उनके आकाओं में अब हम फर्क नहीं समझेंगे, पहले अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) में भारत द्वारा पाक को ऋण पर आपतित दर्ज कराई, फिर 7 प्रतिनिधिमंडल जिसमें 59 से अधिक सदस्य हैं, उनको पूरी दुनियाँ में आतंकवाद के खिलाफ जन जागरण करने भेजा है, अब भारत सरकार एशिया पेसिफिक ग्रुप (एपीजी) के साथ 25 जून 2025 को 40 सदस्यों वाली एफएटीएफ की मीटिंग में पक्ष रखेगी कि कैसे उनके द्वारा उपलब्ध कराई गई वित्तीय सहायता को टेरर फंडिंग में उपयोग करते हैं। चूँकि आतंकवादी संगठनों की टेरर फंडिंग रुकेगी तो आतंकवाद का अंत होना निश्चित है, इसलिए आज मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत ने आतंकवाद के खिलाफ़ वित्तीय व कूटनीतिक दबाव बढ़ाया आईएफएफ एपीजी, 7प्रतिनिधि मंडलों के बाद अब 25 जून 2025 को को होने वाली एफएटीएफ मीटिंग पर लॉबीग करेगा।

साथियों बात अगर हम टेरर फंडिंग रोकने आईएमएफ, 7 प्रतिनिधिमंडलों के बाद अब एपीजी व 25 जून 2025 को होने वाली एफएटीएफ मीटिंग में लॉबिंग करने की करें तो, भारत ने हाल ही में कई देशोंमें एक कूटनीतिककोशिशें शुरू की हैं ताकि पाक की आतंकवाद की भूमिका को वैश्विक मंचों पर उजागर किया जा सके, अमेरिका, दक्षिण कोरिया और बहरीन जैसे देशों में सात प्रतिनिधिमंडल सक्रिय रूप से वैश्विक नेताओं, थिंक टैंकों और नीति निर्धारक संस्थाओं से चर्चा कर रहे हैं, इन टीमों में विभिन्न राजनीतिक दलों और समुदायों के सदस्य शामिल हैं, जो भारत का एक संयुक्त नजरिया दुनियाँ के सामने पेश कर रहे हैं, इस पहल का मकसद पाक को फ़रि एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में डालना है। अक्टूबर 2022 में, एफएटीएफ ने चार सालों की निगरानी के बाद पाक को ग्रे लिस्ट से हटाया था, लेकिन भारत का दावा है कि पाक ने इस दौरान आतंकवाद के समर्थन में अपने कदमों में सुधार नहीं किया, भारत अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे आईएमफ और विश्व बैंक से मांग कर रहा है कि वे पाकिस्तान द्वारा विदेशी सहायता के दुरुपयोग की जांच करें।

साथियों बात अगर हम पाक को एफएटीएफ की होने वाली मीटिंग में लॉबिंग कर पाक़ को ग्रे लिस्ट में डलवाने की कवायत की करें तो, भारत ने पाकिस्तान को दोबारा एफएटीएफ की 'ग्रे लिस्ट' में डालने की प्रक्रिया तेज कर दी है। यह कदम आतंकवादी वित्तपोषण पर लगाम लगाने और पाकिस्तान पर वैश्विक दबाव बढ़ाने की रणनीति का हिस्सा है। मीडिया में आई रिपोर्ट के अनुसार, भारत सरकार ने एक विस्तृत डोजियर तैयार कर लिया है जिसमें पाकिस्तान के हालिया आतंकी फंडिंग ट्रेल, और जम्मू-कश्मीर में हुई घटनाओं से जुड़ा वित्तीय नेटवर्क उजागर किया गया है। ध्यान रहे कि भारतीय कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत की ओर से ऑपरेशन सिन्दूर सैन्य अभियान चला कर पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को नष्ट किया गया था। उसके बाद से भारत इस मुद्दे पर पाकिस्तान को हर मोर्चे पर और हर स्तर पर घेर रहा है। एक प्रसिद्ध प्रिंट मीडिया के अनुसार यह डोजियर जून 2025 में होने वाली एफएटीएफ प्लेनरी मीटिंग में पेश किया जाएगा। भारत का दावा है कि पाकिस्तान ने 2022 में ग्रे लिस्ट से हटने के बाद जिन शर्तों का पालन करने का वादा किया था, उनका लगातार उल्लंघन किया है। पाकिस्तान को 2022 में ग्रेलिस्ट से बाहर निकाला गया था, सरकारी सूत्रों ने बताया कि भारत पाकिस्तान के खिलाफ आतंकी फंडिंग के आरोपों को उठाएगा ताकि उसे वैश्विक मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकी वित्तपोषण निगरानी संस्था फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स एफएटीएफ की 'ग्रेलिस्ट' में वापस डाला जा सके। सूत्रों ने बताया कि भारत खास तौर पर उन कानूनी प्रावधानों का पालन न करने की ओर ध्यान दिलाएगा, जिनका पालन करने का वादा पाकिस्तान ने 2022 में ग्रेलिस्ट से बाहर आने पर किया था। सरकार इस पर विचार कर रही है। इसके अलावा, भारत जून में पाकिस्तान को विश्व बैंक की ओर से दी जाने वाली वित्तीय सहायता की समीक्षा पर भी आपत्ति जताएगा। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार एफएटीएफ में इस बात पर विचार कर रही है कि पड़ोसी देश को आतंकवादी गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता देने वाले वित्तीय प्रवाह पर अंकुश लगाया जाए। भारत को कश्मीर में अवैध धन प्रवाह कम करने में मदद मिली, पाकिस्तान को जून 2018 में 'ग्रेलिस्ट' में डाल दिया गया था, और अक्टूबर 2022 में इसे हटाए जाने तक "बढ़ी हुई निगरानी" का सामना करना पड़ा। इस सूची में होने से एफडीआई और पूंजी प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, क्योंकि व्यवसायों को अधिक परिश्रम करना पड़ता है। सरकारी अधिकारियों ने पहले कहा था कि इससे पाकिस्तान से भारत में, खासकर जम्मू-कश्मीर में अवैध धन प्रवाह को कम करने में मदद मिली है। भारत ने इस महीने की शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की बोर्ड बैठक में पाकिस्तान के लिए जुलाई 2024 से शुरू होने वाले 7 अरब डॉलर के सहायता पैकेज के तहत धनराशि जारी करने पर आपत्ति जताई थी, जिसमें पड़ोसी देश द्वारा नापाक गतिविधियों और आतंकवादी हमलों के लिए धन का दुरुपयोग करने का हवाला दिया गया था। जानकारी के अनुसार पाकिस्तान के लिए 'ग्रेलिस्ट' का दर्जा मांगने के लिए नामांकन प्रक्रिया शुरू करने के लिए भारत को एफएटीएफ के अन्य सदस्य देशों के समर्थन की आवश्यकता होगी। दरअसल प्लेनरी एफएटीएफ का निर्णय लेने वाला निकाय है, जो साल में तीन बार, आमतौर पर फरवरी, जून और अक्टूबर में मिलता है। गौरतलब है कि एफएटीएफ के 40 सदस्य हैं, और 200 से ज़्यादा अधिकार क्षेत्र एफएटीएफ-शैली क्षेत्रीय निकायों के ज़रिए एफएटीएफ की सिफ़ारिशों के लिए प्रतिबद्ध हैं। पाकिस्तान एफएटीएफ का सदस्य नहीं है, बल्कि एशिया पैसिफिक ग्रुप ऑन मनी लॉन्ड्रिंग (एपीजी) का सदस्य है, जो एफएटीएफ-शैली का सबसे बड़ा क्षेत्रीय निकाय है। भारत एपीजी के साथ-साथ एफएटीएफ का भी सदस्य है। भारत का यह कदम एक रणनीतिक व कूटनीतिक दबावविश्लेषकों का कहना है कि भारत का यह कदम एक रणनीतिक व कूटनीतिक दबाव है, जिसका उद्देश्य आतंकवाद के वित्तीय स्रोतों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उजागर करना है। पाकिस्तान पहले ही आर्थिक मंदी और विदेशी कर्ज संकट से जूझ रहा है-ऐसे में एफएटीएफ की निगरानी दोबारा शुरू होना उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि और निवेशकों के भरोसे को और नुकसान पहुंचा सकता है। एफएटीएफ की अगली प्लेनरी मीटिंग जून 2025 में होने वाली है। भारत पाकिस्तान के खिलाफ अन्य सदस्य देशों से समर्थन जुटाने के लिए सक्रिय रूप से लॉबिंग कर रहा है। अगर पर्याप्त समर्थन मिला, तो पाकिस्तान को फिर से निगरानी सूची में डाला जा सकता है, जिससे उस पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ेगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत ने आतंकवाद के खिलाफ वित्तीय व कूटनीतिक दबाव बढ़ाया- आईएमएफ, एपीजी, 7 प्रतिनिधि मंडल के बाद अब 25 जून 2025 की एफएटीएफ मीटिंग पर लाबिंग

आतंकवादी संगठनों की टेररफंडिंग रुकेगी तो आतंकवाद का अंत निश्चित है। भारत का उद्देश्य आतंकवाद के वित्तीय स्रोतों को अंतरराष्ट्रीय स्तरपर उजगार कर टेरर फंडिंग को रोकना है।

होंडा हॉर्नेट CB750 भारत में जल्द होगी लॉन्च, कई बेहतरीन फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा मोटरसाइकिल जल्द ही भारतीय बाजार में Hornet CB750 लॉन्च करने वाली है। यह एक स्टाइलिश और पावरफुल नेकेड बाइक है जिसमें 755cc का ट्विन-सिलेंडर इंजन है। यह इंजन 92 पीएस की पावर और 75 एनएम का टॉर्क पैदा करता है। इसमें चार राइडिंग मोड्स और स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे कई बेहतरीन फीचर्स हैं। भारत में इसकी कीमत 8.80 लाख रुपये से 9.20 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

नई दिल्ली। होंडा मोटरसाइकिल भारतीय बाजार में अपनी बड़ी बाइक Rebel 500 और X-ADV 750 के लॉन्च साथ चर्चा में है। कंपनी ने आज कंफर्म किया है कि वह Hornet CB1000 को भारत में लॉन्च करने वाली है। इसके साथ ही कंपनी ने यह भी बताया है कि वह Hornet CB750 को भी भारत में जल्द लॉन्च करेगी। आइए जानते हैं कि नई हॉर्नेट CB750 में क्या कुछ खास और नया मिल सकता है?

कैसा है इंजन?

Honda Hornet CB750 एक स्टाइलिश और पावरफुल नेकेड बाइक है। इसमें 755cc, ट्विन-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो 92 ph की पावर और 75 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन की वजह से यह बाइक 600-900cc सेगमेंट में काफी खास बन जाती है। इसमें बाइ-डायरेक्शनल क्विकशिफ्टर दिया गया है, जिसकी मदद से तेजी से और आसानी से गियर बदलने में आसानी रहती है।

मिलेंगे कई बेहतरीन फीचर्स?

इस मोटरसाइकिल में कई बेहतरीन फीचर्स मिलते हैं। इसमें चार राइडिंग मोड्स स्पोर्ट, स्टैंडर्ड, रेन, और यूजर मोड मिलते हैं, जो राइडर को अपनी जरूरत के हिसाब से बाइक को कस्टमाइज करने की सुविधा देते हैं। इसमें बेहतर सुरक्षा और कंट्रोल के लिए स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल, स्लिप/असिस्ट क्लच मिलता है। इमें हेडलाइट्स, टेल लाइट्स और इंडिकेटर्स की ऑल-LED लाइटिंग है। इसमें 795mm की सीट हाइट है।

कितनी होगी कीमत?

Honda Hornet CB750 को भारत में 8.80 लाख रुपये से लेकर 9.20 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच लॉन्च किया जा सकता है। यह CBU इम्पोर्ट बाइक होने वाली है, जिसे होंडा का बिंगबिंग डीलरशिप के जरिए बिक्री की जाएगी। भारत में इसका मुकाबला अप्रिलिया ट्यूनो 660 जैसी मोटरसाइकिल से देखने के लिए मिलेगा।

भारत में बिक्री की उम्मीद

भारतीय बाजार में 600-900cc नेकेड बाइक सेगमेंट में ज्यादा आप्शन नहीं मिलता है। इस कमी को CB750 हॉर्नेट पूरा कर सकती है। इसमें दिया गया ट्विन-सिलेंडर इंजन स्मूथ राइडिंग अनुभव गेता है, जो सिटी और हाईवे दोनों के लिए कैपेबल है। इसके साथ ही, यह मॉडर्न फीचर्स और किफायती कीमत में आ सकती है, जिसकी वजह से यह राइडर्स के लिए शानदार हो सकती है, जिसमें बेहतर स्टाइल और परफॉर्मेंस मिलेगी।

स्ट्रीट और ऑफरोड बाइक का मिला-जुला रूप, जानिए क्या होते हैं स्क्रैम्बलर बाइक

परिवहन विशेष न्यूज

स्क्रैम्बलर बाइक्स इन दिनों मार्केट में खूब पॉपुलर हो रहे हैं। ये बाइक थोड़े अजीब दिखते हैं, लेकिन जब सड़कों पर चलते हैं तो लोग इन्हें बिना मुड़कर देखे नहीं रह सकते हैं। आज समझिए कि स्क्रैम्बलर बाइक क्या होते हैं और इनकी शुरूआत कहां से हुई।

नई दिल्ली। इन दिनों स्क्रैम्बलर बाइक्स काफी चर्चा में हैं। हर साल कोई न कोई कंपनी अपनी स्क्रैम्बलर बाइक मार्केट में उतार ही देती है। स्क्रैम्बलर मोटरसाइकिलों को मिशन इम्पॉसिबल जैसी कई फिल्मों में भी दिखाया गया है। फिलहाल रॉयल एनफील्ड और ट्रायंफ जैसी कंपनियों के स्क्रैम्बलर बाइक्स मार्केट पर छाए हुए हैं। तो क्या होते हैं स्क्रैम्बलर बाइक्स, आइए आज इसकी पड़ताल करते हैं।

मार्केट में आज के समय में मोटरसाइकिल्स के कई सेगमेंट मार्केट में मौजूद हैं, जिनमें से एक है Scrambler बाइक। यह एक ऐसी मोटरसाइकिल होती है जो खास तौर पर ऑन-रोड और हल्के ऑफ-रोडिंग के लिए बनाई जाती है। इसका डिजाइन क्लासिक और रेट्रो लुक वाला होता है, लेकिन इसमें आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। ये बाइक ऐसे लोग खरीदते हैं जो अपनी बाइक को पक्की सड़कों पर चलाने के साथ-साथ हल्की-फुल्की ऑफ-रोडिंग भी करना पसंद करते हैं।

कैसा होता है Scrambler बाइक का डिजाइन?

Scrambler बाइक्स का डिजाइन काफी अनोखा होता है। इसमे आमतौर पर ऊंचे एग्जॉस्ट, नॉबी टायर्स (मोटे और उभरे हुए पैटर्न वाले टायर), बड़ा हैंडलबार और हाई ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है। इसका उद्देश्य होता है कि यह बाइक हल्की ऑफ-रोड कंडीशन जैसे कच्चे रास्ते, मिट्टी या बजरी वाले रास्तों पर भी आसानी से चलाई जा सके। इसके साथ ही इसका लुक भी आकर्षक और पुरानी रेट्रो बाइक्स जैसा होता है।

कहां से आया Scrambler का कॉन्सेप्ट?

स्क्रैम्बलर बाइक्स की शुरुआत 1960 के दशक में यूरोप से हुई थी। उस समय लोग अपनी स्ट्रीट बाइक्स को मॉडिफाई करके उन्हें ऑफ-रोडिंग के लिए तैयार करते थे। धीरे-धीरे इस स्टाइल को कंपनियों ने अपनाया और Scrambler नाम से प्रोडक्शन बाइक्स बननी शुरू हो गईं। यूरोप के कई देशों में खराब रास्तों पर की जाने वाली बाइक रेसिंग काफी लोकप्रिय है। इसमें स्क्रैम्बलर बाइक्स का ही इस्तेमाल होता है।

भारत में कौन-कौन सी Scrambler बाइक्स उपलब्ध हैं?

भारत में Royal Enfield Scram 411, Ducati Scrambler, Yezdi Scrambler, Triumph Scrambler जैसे कई विकल्प मौजूद हैं। इनकी कीमत और परफॉर्मेंस अलग-अलग रेंज में मिलती है, जिससे ग्राहक अपनी जरूरत और बजट के हिसाब से इन्हें चुन सकते हैं।

किसके लिए है Scrambler बाइक?

अगर आप ऐसे राइडर हैं जो शहर में डेली कम्यूट के साथ-साथ कभी-कभी ऑफ-रोडिंग भी करना पसंद करते हैं, तो Scrambler आपके लिए एक अच्छा विकल्प हो सकती है।

कावासाकी वर्सेस-एक्स 300 ने भारत में फिर से मारी एंट्री, स्टाइलिश लुक और बेजोड़ फीचर्स के साथ हुई लॉन्च

कावासाकी ने भारत में Kawasaki Versys-X 300 बाइक को नए रंग और ग्राफिक्स के साथ फिर से लॉन्च किया है। इसमें 296 cc का पैरेलल-ट्विन लिक्विड-कूल्ड इंजन है जो 40 ph की पावर देता है। OBD-2B उत्सर्जन नियमों के अनुसार अपडेटेड यह बाइक शहर हाईवे और एडवेंचर राइडिंग के लिए उपयुक्त है इसकी एक्स-शोरूम कीमत 3.80 लाख रुपये है और यह KTM 390 Adventure को टक्कर देगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। जापानी मोटरसाइकिल बनाने वाली कंपनी कावासाकी ने भारतीय बाजार में Kawasaki Versys-X 300 को लॉन्च कर दिया है। भारत में इसकी बिक्री के कुछ साल पहले बंद कर दिया गया था, अब फिर से इसे यहां पर लेकर आया गयाहै। इस बार इसे नए कलर, ग्राफिक्स और कुछ अपडेट्स के साथ लॉन्च किया गया है। आइए कावासाकी की नई बाइक बारे में विस्तार से जानते हैं।

क्या मिला नया?

Kawasaki Versys-X 300 में नया ब्लू-एंड-व्हाइट कलर और ग्राफिक्स दिए गए हैं, जो इसे पहले से ज्यादा स्टाइलिश बनाते हैं। इसके इंजन को OBD-2B उत्सर्जन नियमों के हिसाब से अपडेट किया गया है। इसकी बिक्री भारत में CBU (कम्प्लीटली बिल्ट यूनिट) के रूप में की जाएगी।

इंजन और परफॉर्मेंस

Versys-X 300 में 296 cc पैरेलल-ट्विन, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 40 ph की पावर और 25.7 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स और स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच के साथ जोड़ा गया है। बाइक में इसके होने पर गियर बदलने में काफी आसानी रहती है। यह मोटरसाइकिल शहर, हाईवे और एडवेंचर राइडिंग के लिए कैपेबल है।

डिजाइन और फीचर्स

इसमें बैकबोन फ्रेम दिया गया है, जो इसे काफी मजबूती देता है। इसमें 41mm टेलिस्कोपिक फ्रंट फोर्क और और मोनोशॉक रियर सस्पेंशन दिया गया है। इसमें 180mm का ग्राउंड क्लीयरेंस भी दिया गया है। इसमें 19-इंच फ्रंट और 17-इंच रियर स्पोक व्हील्स दिए गए हैं। इसके फ्यूल टैंक में 17 लीटर तक पेट्रोल भरवाया जा सकता है।

Kawasaki Versys-X 300 में मिलने वाले फीचर्स की बात करें, तो इसमें डिजी-एनालॉग इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर मिलता है। इसमें गियर पोजिशन इंडिकेटर और डुअल-चैनल ABS भी मिलता है।

कितनी है कीमत?

Kawasaki Versys-X 300 को भारत में 3.80 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला KTM 390 Adventure जैसे मोटरसाइकिल से देखने के लिए मिलेगा। यह इससे 12 हजार रुपये महंगी है। वहीं, यह इससे कम पालर और फीचर्स के साथ भी आती है, लेकिन कावासाकी की इस बाइक में ट्विन-सिलेंडर इंजन मिलता है, जो काफी स्मूथ है।

अप्रिलिया आर.एस 457 के इंजन में खराबी की वजह आई सामने, कंपनी ने बताई ये दो बातें

परिवहन विशेष न्यूज

अप्रिलिया इंडिया ने 2023 में Aprilia RS 457 लॉन्च की जो मिड-साइज स्पोर्टबाइक सेगमेंट में एक महत्वपूर्ण कदम था। हाल ही में इसके इंजन को लेकर कुछ शिकायतें मिलीं जिस पर कंपनी ने जवाब दिया है। कंपनी के अनुसार इंजन में समस्याएँ मॉडिफिकेशन और समय पर सर्विसिंग न करवाने के कारण हुईं। कंपनी ने ग्राहकों से सर्विस सेंटर से ही एक्सेसरीज लगवाने और नियमित सर्विसिंग करवाने की अपील की है।

नई दिल्ली। अप्रिलिया इंडिया ने साल 2023 में Aprilia RS 457 को लॉन्च किया था। मिड-साइज स्पोर्टबाइक सेगमेंट में इस बाइक के जरिए कंपनी का बड़ा कदम थी। जब बाइक लॉन्च हुई, तब इसको लेकर कंपनी को खूब तारीफ मिली थी, लेकिन हाल के कुछ महीनों में इसके इंजन को लेकर कुछ शिकायते देखने के लिए मिली है। अब कंपनी ने इसके इंजन को लेकर आ रही शिकायतों पर अपनी चुप्पी तोड़ी है और इसका जवाब दिया है। आइए जानते हैं कि अप्रिलिया RS 457 के इंजन को लेकर कंपनी ने क्या कहा है?

इंजन में क्या थी समस्या?

कुछ ग्राहकों ने इसके इंजन को लेकर कुछ शिकायत की थी, जिसमें इंजन में कम्प्रेशन की कमी, कैम चेन टेंशनर की समस्या, पावर लॉस और इंजन फेल्योर है। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक, कई लोगों ने इसमें मॉडिफिकेशन किए थे, जबकि कुछ ने बाइक को बिना बदलाव के ही इस्तेमाल किया जा रहा था। Aprilia ने इन सभी मामलों में वारंटी में आने वाले मॉडल में सिलेंडर हेड से लेकर पूरा इंजन ही बदल दिया गया। वहीं, बहुत से लोगों का कहना है कि कंपनी की तरफ से उन्हें यह नहीं बताया गया कि आखिरकार इंजन में क्या समस्या थी।

इंजन की समस्या पर Aprilia का बयान

Aprilia RS 457 के इंजन में आ रही समस्या को लेकर कंपनी की तरफ से कहा कि यह एक शानदार बाइक है, जिसे इटली के नोआले में डिजाइन किया गया है। इस मोटरसाइकिल ने अपने बेहतरीन पावर-टू-वेट रेशियो और परफॉर्मेंस से मिड-साइज स्पोर्ट बाइक सेगमेंट सभी को पीछे छोड़ दिया है। इस बाइक की तारीफ ग्राहकों, डीलर्स, पत्रकारों और यहां तक कि MotoGP रेसर्स ने भी की है।

इसके साथ ही कंपनी ने आगे कहा कि इंजन की समस्याएं दो मुख्य कारणों से हुई हैं, जो बाइक में बाहर से पार्ट्स लगाना यानी मॉडिफिकेशन और बाइक की समय पर सर्विसिंग नहीं करवाना हो सकती है। इसके साथ ही कंपनी ने ग्राहकों से अपील करते हुए कहा कि वह अधिकृत अप्रिलिया सर्विस सेंटर्स से ही एक्सेसरीज लगवाएं और बाइक की नियमित सर्विसिंग करवाएं। कंपनी ने दावा किया है कि उनकी सभी बाइक बेहतरीन है और उनमें कोई खराबी नहीं है।

नई निसान माइक्रा ईवी हुई पेश, पहले से ज्यादा प्रीमियम इंटीरियर और फीचर्स से हुई लैस

परिवहन विशेष न्यूज

नई Nissan Micra EV को ग्लोबल लेवल पर पेश किया गया है। इसके बाहरी डिजाइन में हल्के बदलाव किए गए हैं लेकिन इसका इंटीरियर पहले से ज्यादा प्रीमियम और फीचर्स से भारपूर कर दिया गया है। इसे दो बैटरी पैक के साथ लॉन्च किया जाएगा। माईक्रा ईवी को साल 2025 के आखिरी में यूरोप में लॉन्च किया जाएगा। आइए इसके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। निसान ने अपनी नई Micra EV को ग्लोबल लेवल पर पेश किया है। इस साल 2025 की शुरुआत में पूरी तरह इलेक्ट्रिक वाहन के रूप में पेश किया गया था। यह 6th जनरेशन की माइक्रा है, जिसे AmpR स्मॉल प्लेटफॉर्म पर बनाया गया है। इसी प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल Renault 5 EV के लिए भी किया जाता है। आइए जानते हैं कि इस इलेक्ट्रिक हैचबैक के इंटीरियर, बैटरी और डिजाइन के बारे में।

एक्सटीरियर

नई माइक्रा EV का डिजाइन निसान 20-23 EV कॉन्सेप्ट से प्रेरित है। यह एक 4 मीटर से छोटी कार है। इसमें सर्कुलर डे-टाइम रनिंग लाइट्स और आयताकार हेडलाइट्स दिए गए हैं। साथ ही ग्लॉस-ब्लैक बॉडी क्लैडिंग के साथ ब्लैक रूफ, 18-इंच अलॉय व्हील्स में सिल्वर इंसर्ट्स, कॉलम-माउंटेड रियर डोर हैंडल्स और सर्कुलर टेल-लैंप्स दिए गए हैं।

इंटीरियर

नई Nissan Micra EV का केबिन स्टाइलिश और मॉडर्न है। इसमें दो 10.1-इंच स्क्रीन दी गई है, जिसमें एक इंफोटेनमेंट के लिए और दूसरी ड्राइवर के लिए है। इसका सेंटर कंसोल ड्राइवर की तरफ थोड़ा झुका हुआ है, जिससे ड्राइविंग के दौरान इसे इस्तेमाल करना काफी आसान हो गया है। इसके नीचे फिजिकल बटन और एयर वेंट्स दिए गए हैं।

फीचर्स

इसमें 48 रंगों की एम्बिएंट लाइटिंग, वायरलेस चार्जिंग पैड, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक, 326 लीटर का बूट स्पेस, सीटों पर खास अपहोल्स्ट्री और स्टोरेज एरिया में माउंट फूजी की डिजाइन दी गई है, जो निसान की जापानी पहचान को दिखाती है।

बैटरी और ड्राइविंग रेंज

नई Nissan Micra EV को दो बैटरी ऑप्शन के साथ लेकर आया जाएगा, जो 40 kWh और 52 kWh है। इसका 40 kWh बैटरी पैक 122 hp की पावर और 225 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। यह सिंगल चार्ज में 308 किमी तक की ड्राइविंग रेंज देगी।

इसका 52 kWh बैटरी पैक 150 hp की पावर और 245 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। यह सिंगल चार्ज में 408 किमी तक का ड्राइविंग रेंज देगा। दोनों ही वेरिएंट में व्हीकल-टू-लोड (V2L) फीचर मिलेगा, जिससे आप दूसरे डिवाइस को चार्ज किया जा सकता है। इसमें हीट पंप और बैटरी टेम्परेचर कंट्रोल सिस्टम भी मिलेगा, जो बैटरी की लाइफ को बढ़ाते हैं।

भारत में कब होगी लॉन्च?

नई Nissan Micra EV का प्रोडक्शन फ्रांस के रेनो डौए प्लांट में किया जाएगा। इसे साल 2025 के अंत तक यूरोप में लॉन्च किया जाएगा। भारत में इसके लॉन्च होने की कोई पक्की जानकारी नहीं है।

मानव जीवन में कला का महत्व

विजय गर्ग

कला कई चीजों को व्यक्त करने का एक तरीका है। यह भावनाओं से निपटने का एक तरीका है जिसे बातचीत या शब्दों जैसे विशिष्ट साधनों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। कला आपकी भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका देती है। 17 वीं शताब्दी तक, कला को किसी भी कौशल या महारत के लिए संदर्भित किया जाता है और शिल्प या विज्ञान से अलग नहीं किया जाता था...

कला एक सर्वग्राही धारणा है जो मानव जाति के विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कला मानव गतिविधियों और उन गतिविधियों के उत्पादों की एक विविध श्रृंखला है। कला एक विविध क्षेत्र है और इसमें कई रूपों में कलात्मक छाप शामिल हैं जिसमें पेंटिंग, मूर्तिकला, प्रिंटमेकिंग, फोटोग्राफी और अन्य दृश्य मीडिया सहित क्षेत्रों में छवियों या वस्तुओं का निर्माण शामिल हो सकता है। वास्तुकला को अक्सर दृश्य कला में से एक के रूप में शामिल किया जाता है; हालाँकि, सजावटी कला की तरह। कला के पहले रूप प्राचीन गुफाओं की दीवारों पर पत्थर के कामों के साथ-साथ पेंटिंग के रूप में पाए गए थे। तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि पेंटिंग कला का पहला तरीका था। पेंटिंग कला का सबसे समझने योग्य तरीका है क्योंकि यह हमें सबसे पूर्ण और ज्वलंत छाप देता है। संगीत, थिएटर, फिल्म, नृत्य, और अन्य प्रदर्शन कला, साथ ही साहित्य, और अन्य मीडिया जैसे इंटरैक्टिव मीडिया कला की व्यापक परिभाषा में शामिल हैं। एक कविता, एक पेंटिंग, कलाकार द्वारा बनाई गई एक मूर्तिकला उसे खुशी देती है जबकि वह निर्माण के कार्य में है; यह समय की चूक के बाद उसे फिर से खुशी देता है, जब वह कल्पनाशीलता से सृजन के मूल क्षण को फिर से बनाता है या फिर से जीवित करता है और उस कला को ध्यान से देखने वाले व्यक्ति को खुशी की एक बड़ी भावना भी देता है। ऑनलाइन आर्ट कोर्सबेस्ट हेडफोन डील करता है

कला कई चीजों को व्यक्त करने का एक तरीका है। यह भावनाओं से निपटने का एक तरीका है जिसे बातचीत या शब्दों जैसे विशिष्ट साधनों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है। कला आपकी भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका देती है। 17 वीं शताब्दी तक, कला को किसी भी कौशल या महारत के लिए संदर्भित किया जाता है और शिल्प या विज्ञान से अलग नहीं किया जाता था, लेकिन आधुनिक उपयोग में, ललित कला, जहां सौंदर्य विचार सर्वोपरि हैं, सामान्य रूप से अधिग्रहीत कौशल और सजावटी या लागू कला से अलग हैं। आज 21 वीं शताब्दी में अतीत की तुलना में कला के आयाम बहुत बदल गए हैं। इन दिनों कला न केवल आपके विचारों को व्यक्त करने का एक तरीका है, बल्कि इसका उपयोग जनता को किसी प्रकार की जानकारी या संदेश भेजने के लिए भी किया गया है। कला का उपयोग राजनीति और सामाजिक एजेंडा जैसे संपादकीय कार्टून और राजनीतिक या धार्मिक आंकड़ों पर निर्देशित चित्रों के लिए किया जा सकता है। कला लोगों को विभिन्न दृष्टिकोणों से चीजों को देखने के लिए प्रेरित और अनुमति दे सकती है।

कविता, साहित्य, गीत, नाटक और सिनेमा के माध्यम से कला मनुष्य को सुकून देती है। कला प्रेमी अपना पूरा जीवन कला के लिए काम करने में बिता सकते हैं। कला मृत्यु और क्षय को पार करने के लिए मनुष्य की इच्छा को पूरा करने का कार्य करती है जिसके लिए सभी सांसारिक चीजें विषय हैं। कला मनुष्य को यह कल्पना करने में मदद करती है कि वांछित क्या है लेकिन उपयोग के लिए तुरंत उपलब्ध नहीं है। कला आपको दूसरी दुनिया में ले जाती है जहाँ आप अपनी भावनाओं द्वारा सब कुछ व्याख्या करते हैं। यह उसे सिज़ोफ्रेनिया की यातना और रुग्णता के बिना एक दोहरा जीवन जीने में सक्षम बनाता है। कला का महत्व हमारे मानव निर्मित पर्यावरण की प्रकृति से संबंधित है, और चाहे हम इसे एक आराम या पीड़ा के लिए बनाते हैं। समकालीन संस्कृति में कला और सुंदरता के स्थान को समझने के लिए, आपको कला के ऐतिहासिक रूपों की ओर मुड़ने की आवश्यकता है।

कला ऑनलाइन कला पाठ्यक्रमों का इतिहास कला के सही अर्थ को समझने के लिए हमें उस ऐतिहासिक अवधि से शुरू करना होगा जहां से वास्तविक कला की अवधारणा शुरू हुई थी, हालांकि आधुनिक शताब्दी में कला ने एक वाणिज्यिक मोड़ लिया है फिर भी कभी भी कम नहीं हैं जो अभी भी अपने मूल रूप में कला का सम्मान करते हैं। मानव जाति की सबसे कीमती उपलब्धियां और स्मारक, चाहे वह पिरामिड हो या ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कोई इमारत, मनुष्य के कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना की यादों को वापस लाने के प्रयास हैं या निकट और प्रिय लोगों के नुकसान का प्रतीक हैं जो शुरू में हमेशा के लिए खो गए थे। हम सुरक्षित रूप से कह सकते हैं कि कला मनुष्य के आत्म-प्रेम का एक उप-उत्पाद है और इस दुनिया से परे एक दुनिया में हमेशा के लिए रहने की एक शौकीन आशा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि कला एक साधन के साथ-साथ एक अंत भी है। यह कलाकार के लिए समय और स्थान की सीमाओं को पार करने और कला के निर्माण के लिए दिन में नहीं पाए जाने वाले सुखों का हिस्सा लेने का एक साधन है, जिसकी तुलना अक्सर जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया से की जाती है।

मूर्तियां, गुफा चित्र, रॉक पेंटिंग आदि। ऊपरी पुरापाषाण डेटिंग से लगभग 40,000 साल पहले तक पाया गया है, लेकिन ऐसी कला का सटीक अर्थ अक्सर विवादित होता है क्योंकि उन संस्कृतियों के बारे में बहुत कम जाना जाता है जिन्होंने उन्हें उत्पादित किया था। इसके अलावा, पुराने समय के दौरान किए गए सभी कार्यों की व्याख्या करना वास्तव में मुश्किल हो जाता है। कला में कई महान परंपराओं की एक महान प्राचीन सभ्यताओं में से एक की कला में एक नींव हैः प्राचीन मिस्र, मेसोपोटामिया, फारस, भारत, चीन, प्राचीन ग्रीस, रोम, साथ ही इंका, माया और ओल्मेक। प्रारंभिक सभ्यता के इन केंद्रों में से प्रत्येक ने अपनी कला में एक अनूठी और विशिष्ट शैली विकसित की। इन सभ्यताओं के आकार और अवधि के कारण, उनके अधिक कला कार्य बच गए हैं और उनका अधिक प्रभाव अन्य संस्कृतियों और बाद के समय में प्रेषित किया गया है। कुछ ने कलाकारों के काम करने के पहले रिकॉर्ड भी उपलब्ध कराए।

पृथ्वी की पपड़ी में हाइड्रोजन के भंडार

विजय गर्ग

विज्ञानियों के अनुसार पृथ्वी की पपड़ी में हाइड्रोजन के विशाल भंडार छिपे हुए हैं, और यदि हमें इस गैस के दोहन का कोई विश्वसनीय तरीका मिल जाए, तो हमारी ऊर्जा की जरूरतें लंबे समय तक पूरी हो सकती हैं। वर्तमान में, दुनिया हाइड्रोजन गैस पर ईंधन स्रोत के रूप में अत्यधिक निर्भर है, और इसे संतुलित कार्बन उत्सर्जन लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। शोधकर्ता पृथ्वी की पपड़ी में कैद गैस के विशाल भंडार खोजने के तरीकों पर काम कर रहे हैं। उनका मानना है कि इन भंडारों का उपयोग करके हम 170,000 वर्षों तक अपनी हाइड्रोजन ऊर्जा की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमें हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए हाइड्रोकार्बन का उपयोग नहीं करना पड़ेगा, जो कार्बन डाईआक्साइड उत्सर्जन में योगदान देता है।

मालूम हो कि भूविज्ञानियों ने हीलियम गैस का सफलतापूर्वक अन्वेषण करने के लिए एक रणनीति विकसित की है। अब हाइड्रोजन गैस के दोहन के लिए भी इसी तरह का दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है। हाइड्रोजन गैस तब बनती है जब पानी उन चट्टानों के संपर्क में आता है, जो लोहे से भरपूर होती हैं या जिनमें रेडियोधर्मी तत्व होते हैं। इसके लिए तापमान, दबाव और समय जैसे कुछ अन्य मानदंड भी पूरे होने चाहिए। इन सभी कारकों पर विचार करके और पृथ्वी पर उनकी मौजूदगी का मानचित्रण करके, शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि जमीन के नीचे बहुत सारी हाइड्रोजन हो सकती है, जिसका दोहन किया जा सकता है। माली में बौराकेबोगी साइट पर इसी तरह से प्राकृतिक हाइड्रोजन का उत्पादन किया जा रहा है। बौराकेबौगौ के निवासी दुनिया में पहले ऐसे लोग हैं, जो हाइड्रोजन गैस को जला कर बिजली प्राप्त कर रहे हैं। 1987 में वहां गांव के कुएं से बुलबुले निकलने पर इस गैस का पता चला था। अगली चुनौती प्राकृतिक हाइड्रोजन के स्रोतों को ढूंढ़ना है।

इस वर्ष की शुरुआत में प्रकाशित एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि टैक्टोनिक प्लेटों के एक-दूसरे को धकेलने और खींचने से बनी दुनिया की पर्वत शृंखलाओं में हाइड्रोजन के व्यापक भंडार हो सकते हैं। हाइड्रोजन आज एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह दुनिया के पोषण में मदद करने के लिए उर्वरक उत्पादन में अत्यधिक मांग में है। आने वाले समय में गैस की मांग में उछाल आने की उम्मीद है, जो 2022 में नौ करोड़ मीट्रिक टन से बढ़कर 2050 तक 54 करोड़ मीट्रिक टन हो जाएगी। हाइड्रोजन बनाने के कृत्रिम तरीके उपलब्ध हैं, लेकिन वे महंगे हैं और कार्बन संतुलित नहीं हैं। प्राकृतिक हाइड्रोजन का पता लगाने के लिए अभी बहुत काम करना पड़ेगा, लेकिन इस शोध यह स्पष्ट होता है कि हाइड्रोजन का दोहन स्वच्छ ऊर्जा वाले भविष्य के लिए एक व्यवहार्य विकल्प है।

न्याय की भाषा में बदलाव की दस्तक

विजय गर्ग

बीते 14 मई को राष्ट्रपति भवन में हिंदी के प्रयोग ने एक नया इतिहास रच दिया। देश के 52वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई का शपथ ग्रहण समारोह ऐतिहासिक बन गया। उन्होंने हिंदी में शपथ लेकर एक नई परंपरा की शुरुआत की। अब तक सभी मुख्य न्यायाधीश अंग्रेज़ी में ही शपथ लेते रहे हैं।

देश के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री जैसी प्रमुख हस्तियां पहले से ही हिंदी में शपथ लेती रही हैं, लेकिन न्यायपालिका का सर्वोच्च पद अब तक इससे अछूता था। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले न्यायमूर्ति गवई ने हिंदी में शपथ लेकर उस परंपरा को तोड़ा और न्यायपालिका में अब तक उपेक्षित रही हिंदी को सम्मान दिया।

उनके इस निर्णय का विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत किया जा रहा है। अपने शपथ ग्रहण में मातृभाषा का प्रयोग कर न्यायमूर्ति गवई ने देश के करोड़ों हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रेमियों को एक नई उम्मीद से भर दिया है। लोगों को आशा है कि उनके नेतृत्व में न्यायपालिका में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान और स्थान प्राप्त होगा।

यह विडंबना ही है कि छह वर्ष पूर्व संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की अदालतों में हिंदी में सुनवाई की अनुमति दी जा चुकी है, जबकि भारत की सर्वोच्च न्यायपालिका आज भी अंग्रेज़ी तक ही सीमित है। न्यायमूर्ति गवई से अपेक्षाएं इसलिए भी हैं क्योंकि उनके पद में महत्वपूर्ण अधिकार निहित हैं। मुख्य न्यायाधीश की सहमति के बिना किसी भी उच्च न्यायालय में कार्यवाही की भाषा स्थानीय नहीं बन सकती। संविधान के अनुच्छेद 348(1)(ए) के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट और सभी हाईकोर्ट की कार्यवाही अंग्रेज़ी में ही की जाएगी। हालांकि, इसी अनुच्छेद के भाग (2) में यह प्रावधान भी है कि यदि कोई राज्य अपनी राजभाषा में न्यायिक कार्य करना चाहता है, तो राज्यपाल राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त कर संबंधित हाईकोर्ट की कार्यवाही में हिंदी या राज्य की अन्य आधिकारिक भाषा के प्रयोग की अनुमति दे सकता है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 7 में भी इसी तरह का प्रावधान किया गया है। इसके तहत राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से, उच्च न्यायालय के निर्णय या आदेशों के लिए अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी या राज्य की अन्य राजभाषा के प्रयोग को अनुमति दे सकता है। दुर्भाग्यवश, इन संवैधानिक और विधिक प्रावधानों के बावजूद, आज तक इनका उपयोग बहुत सीमित रहा है।

संविधान के प्रावधानों के तहत हिंदी को 26 जनवरी, 1965 से राजभाषा के तौर पर पूरे देश में कामकाज करने की अनुमति मिलनी थी। लेकिन इसके खिलाफ तीखे विरोध के साथ तमिलनाडु की द्रविड़ राजनीति मैदान में कूद पड़ी थी। हालांकि, जब उसे अहसास हुआ कि गणतंत्र दिवस पर ऐसा करना उचित नहीं होगा तो एक दिन पहले यानी 25 जनवरी को उसने ऐसा किया। राजभाषा को लेकर होते रहे ऐसे विवादों की वजह से राजभाषा नीति पर विचार के लिए मंत्रिमंडल समिति का गठन किया गया। जिसने 21 मई, 1965 की अपनी बैठक में यह तय किया कि हाईकोर्ट में अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा के प्रयोग से संबंधित प्रस्ताव पर देश के मुख्य न्यायाधीश की सहमति प्राप्त की जानी चाहिए। भारतीय भाषा प्रेमियों की नजर में यह प्रावधान भारतीय भाषाओं की न्याय की भाषा बनने की राह में सबसे बड़ी बाधा है।

सांविधानिक प्रावधान के अंतर्गत हिंदी में कामकाज की अनुमति सबसे पहले राजस्थान को हासिल हुई, जिसे हिंदी में कार्यवाही की अनुमति 1950 में मिली। इलाहाबाद हाईकोर्ट में हिंदी कार्यवाही की अनुमति 1969 में मिली, जबकि मध्य प्रदेश को 1971 और बिहार को 1972 में मिली। कई राज्य ऐसे हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपनी भाषाओं में अपने हाईकोर्ट में कार्यवाही चलाने की अनुमति मांगी, लेकिन उन्हें नाकामी ही मिली।

यद्यपि तमाम सांविधानिक प्रावधानों और उनकी बाधा के बावजूद भारतीय भाषा प्रेमियों का उत्साह कम नहीं हुआ। वे भारतीय भाषाओं को न्यायपालिका की भाषा बनाने की मांग करते रहे हैं। इसका असर उच्च न्यायपालिका पर भी पड़ा है। बेशक न्यायिक कार्यवाही भारतीय भाषाओं में नहीं हो रही है, लेकिन फैसलों और न्यायिक कार्यवाही तक आम लोगों की सहज पहुंच बनाने की दिशा न्यायलय आगे बढ़े हैं। इसके तहत कार्यवाही और निर्णयों का अंग्रेजी से क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने न्यायमूर्ति अभय एस ओका की अध्यक्षता में एआई सहायता प्राप्त कानूनी अनुवाद सलाहकार समिति का गठन किया है। इसके जरिए अब तक 16 भाषाओं में हजारों फैसलों आदि का अनुवाद किया जा रहा है। ओका समिति की तरह सभी हाईकोर्टों ने भी अपने यहां अनुवाद के लिए समितियां बनाई हैं। कानून और न्याय मंत्रालय के अधीन बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एस.ए. बोबडे की अध्यक्षता में 'भारतीय भाषा समिति' का भी गठन किया है। यह समिति कानूनी सामग्री का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने के उद्देश्य से सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान शब्दावली विकसित कर रही है।

अमेरिकी रक्षा खुफिया एजेंसी द्वारा 'विश्व खतरा आकलन रिपोर्ट 2025' ज़ारी-पाकिस्तान भारत को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है!

विश्व में न्यूक्लियर वेपन्स बायोलॉजिकल, केमिकल्स हथियारों का विस्तार पृथ्वी पर निवासी जीवों की विलुप्तता क़ा कारण बनने को रेखांकित करना ज़रूरी है– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पिछले कुछ वर्षों से युद्ध का एक दौर सा चल पड़ा है, जिसका सटीक उदाहरण रूस-यूक्रेन हमास -इजरायल भारत-पाकिस्तान अमेरिका-ईरान चीन अमेरिका तनाव इत्यादि से लेकर पाक-तालिबान जैसे एशिया के देशों में भी संबंध कुछ ठीक नहीं चल रहे हैं यानें मेरा मानना है कि आज कोई भी देश किसी बड़े देश के खिलाफ़ डेरिंग से खड़े हैं, व न्यू क्लियर वेपंस केमिकल व बायोलॉजिकल वेपंस की धौंस दिखा रहे हैं, मैं समझता हूं यह सब अकेले के दम पर नहीं किया जा सकता उसके पीछे किन्हीं देश या देशों का समूह एक ग्रुप या लॉबी बनकर खड़ा हो सकती है, जिसकी सटीकता हमें हमास-इजराइल रूस-यूक्रेन पाक जैसे देश अपने से कई गुना ताकत रखने वाले देशों से लड़ते हैं मतलब साफ है इनके पीछे कोई लाबी या ताकत बनकर खड़े हैं। भारत पाक के करीब चार दिन चले तनातनी युद्ध में भी पाक के पीछे तुर्की, चीन के खड़े होने के संकेत मिले हैं। आज हम यह विषय इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि अभी 2 दिन पहले अमेरिकी रक्षा खुफिया एजेंसी द्वारा जारी ₹विश्व खतरा आकलन रिपोर्ट 2025₹ आई है जिसमें अन्य बातों के अलावा कहा गया है कि चीन-पाक की सैन्य और आर्थिक मदद की रीड की हड्डी बन गया है, मतलब साफ है कि भारत व अब पाक़ की नहीं बल्कि चीन से युद्ध की रणनीति पर काम करना होगा, इस आशंका को उपरोक्त रिपोर्ट 2025 में भी दर्शाया गया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, चीन पाक की आर्थिक मदद की रीड की हड्डी बन गया है, व विश्व में न्यूक्लियर वेपंस बायोलॉजिकल, केमिकल हथियारों का विस्तार पृथ्वी पर निवासी जीव की विलुप्तता क़ा कारण बनने को रेखांकित करना जरूरी है।

साथियों बात अगर हम विश्व खतरा आंकलन रिपोर्ट 2025 की करें तो, भारत की विदेश और रक्षा नीति लंबे समय से पाकिस्तान केंद्रित रही है, लेकिन अमेरिकी रक्षा इंटेलिजेंस एजेंसी (डीआईए) की ताज़ा रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अब भारत चीन को अपना मुख्य राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी मानता है, रिपोर्ट के अनुसार, पाक को अब केवल एक एंसीलरी (सहायक) खतरा समझा जा रहा है, रिपोर्ट में ये भी दावा किया गया है, भारतीय पीएम की रक्षा प्राथमिकताएं अब वैश्विक नेतृत्व, चीन का मुकाबला और भारत की सैन्य ताकत को बढ़ाने पर केंद्रित हैं, यह रणनीति केवल युद्ध की तैयारी नहीं, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन को आकार देने की दिशा में है। रिपोर्ट में मई 2025 के भारत-पाकिस्तान सैन्य टकराव और पहलगाम हमले जैसे घटनाओं का हवाला देते हुए दावा किया गया है कि₹पाकिस्तान की भूमिका क्षेत्रीय अस्थिरता में बनी हुई है, लेकिन भारत की असली रणनीतिक तैयारी चीन को लेकर हो रही है, यह स्थिति भारत की रक्षा नीतियों के रुख में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है, चीन के साथ भारत का सीमा विवाद वर्षों से चला आ रहा है, विशेषकर लद्दाख क्षेत्र में, भले ही अक्टूबर 2024 में डिसइंगेजमेंट पर समझौता हुआ हो, लेकिन विवाद समाप्त नहीं हुआ है. यह सिर्फ एक रणनीतिक विराम है। अमेरिकी रिपोर्ट में बताया गया है कि पाकिस्तान अपना परमाणु जखीरा मॉडर्न बना रहा, चीन उसे हथियार सप्लाई कर रहा, मेक इन इंडिया के बावजूद भारत अभी भी रूस पर निर्भर है, पाकिस्तान, अपने अस्तित्व के लिए भारत को एक खतरे के तौर पर देखता है। इस वजह से वह अपने परमाणु हथियारों को आधुनिक बनाने और सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए चीन से आर्थिक और सैन्य समर्थन ले रहा है, वहीं भारत, पाक को सिर्फ एक सुरक्षा चुनौती मानता है, जिसे संभाला जा सकता है। भारत असली खतरा चीन को मानता है और अपनी सैन्य तैयारियां भी उसी के हिसाब से करता है। बता दें डीआईए अमेरिकी रक्षा विभाग का हिस्सा है। यह रिपोर्ट वैश्विक सुरक्षा खतरों का आकलन करती है। इसकी मदद से अमेरिका की राष्ट्रीय और विदेश नीति की दिशा तय होती है।

साथियों बात अगर हम रिपोर्ट के अनुसार भारत को चीन को अपनी सबसे बड़ी चुनौती मानने की करें तो, भारत, चीन को सबसे बड़ी चुनौती मानता है। इसकी वजह सीमा विवाद, चीन की सैन्य शक्ति में इजाफा और आर्थिक- तकनीकी प्रतिस्पर्धा है। इसमें बताया गया है कि चीन की बढ़ती सैन्य शक्ति, विशेष रूप से नौसेना और मिसाइल क्षमताएं, भारत के लिए चिंता का विषय हैं। इसके अलावा चीन का क्षेत्रीय प्रभाव (जैसे बीआरआई, सीपेक) और एआई, साइबर, और अंतरिक्ष में प्रगति भारत के लिए रणनीतिक चुनौती है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारत-चीन सीमा विवाद अब भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। हालांकि, 2020 की झड़पों के बाद तनाव थोड़ा कम हुआ है, लेकिन भारत, चीन के प्रभाव को कम करने के लिए हिंद महासागर में अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है और दूसरे देशों के साथ सैन्य साझेदारी कर रहा है। भारत अपनी सैन्य तैयारियां (जैसे LAC पर सैन्य तैनाती, नौसेना विस्तार) और गठबंधन (क्वाड, अमेरिका) के जरिए चीन का मुकाबला कर रहा है।

साथियों बात अगर हम रिपोर्ट में कहीं बात कि पाकअपने अस्तित्व के लिए भारत को एक खतरे के तौर पर देखता है, की करें तो पाक़ इस वजह से वह अपने परमाणु हथियारों को आधुनिक बनाने और सैन्य क्षमता बढ़ाने के लिए चीन से आर्थिक और सैन्य समर्थन ले रहा है। वहीं, भारत, पाकिस्तान को सिर्फ एक सुरक्षा चुनौती मानता है, जिसे संभाला जा सकता है।

साथियों बात अगर हम रिपोर्ट में दर्ज मेक इन इंडिया के जरिए ताकत बढ़ा रहा भारत की करें तो, रिपोर्ट में मेक इन इंडियाका भी जिक्र किया गयाहै, सैन्यआधुनिकीकरण योजनाओं को लेकर रिपोर्ट में कहा गया, 'भारत इस साल अपनी मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देना जारी रखेगा ताकि घरेलू रक्षा उद्योग को मजबूत किया जाए, आपूर्ति श्रृंखला की चिंताओं को कम किया जा सके और सैन्य आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिले। 2024 में भारत ने परमाणु-सक्षम अग्नि-प्राइम मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल और अग्नि-V मल्टीपल इंडिपेंडेंटली टारगेटेबल रीएंट्री व्हीकल का परीक्षण किया। नई दिल्ली ने अपनी दूसरी परमाणु-ऑपरेटेड पनडुब्बी को कमीशन किया, ताकि परमाणु त्रिकोण को मजबूत किया जाए और प्रतिद्वंद्वियों को रोकने की क्षमता को बढ़ाया जा सके।' भारत रूस के साथ अपने रिश्ते बनाए रखेगा, क्योंकि वह रूस को सैन्य और आर्थिक मदद के लिए जरूरी मानता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान परमाणु हथियारों के लिए सामग्री और तकनीक चीन, हॉन्गकॉन्ग, सिंगापुर, तुर्किये और संयुक्त अरब अमीरात से हासिल करता है। हालांकि इसमें यह भी कहा गया है कि पाकिस्तान का परमाणु आधुनिकीकरण दक्षिण एशिया में स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करता है। रिपोर्ट में पाकिस्तान को एक अस्थिर और रणनीतिक रूप से कमजोर देश के रूप में देखा गया है, जो भारत को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है और अपनी सैन्य और परमाणु क्षमताओं को बढ़ाने के लिए चीन पर निर्भर है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन पर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिकी रक्षा खुफिया एजेंसी द्वारा ₹विश्व खतरा आकलन रिपोर्ट 2025₹ज़ारी-पाकिस्तान भारत को अपने अस्तित्व के लिए खतरा मानता है! अमेरिकी विश्व खतरा आंकलन रिपोर्ट 2025 में दावा, चीन पाक की सैन्य व आर्थिक मदद की रीढ़ की हड्डी बन गया है। विश्व में न्यूक्लियर वेपन्स बायोलॉजिकल, केमिकल्स हथियारों का विस्तार पृथ्वी पर निवासी जीवों की विलुप्तता क़ा कारण बनने को रेखांकित करना ज़रूरी है।

"पहले फ्री दो, फिर गुलाम बनाओ, फिर लूटो"

Jio ने हमें सस्ते डेटा का स्वाद चखाया और फिर उसकी लत लगाकर हमारी जेबें ढीली कर दीं। आज WhatsApp उसी रास्ते पर है — ₹पहले फ्री दो, फिर गुलाम बनाओ, फिर लूटो₹। यह समय है कि हम सिर्फ यूज़र नहीं, डिजिटल नागरिक बनें — जागरूक, संगठित और अधिकारों के लिए लड़ने वाले।

डॉ सत्यवान सौरभ

कल्पना कीजिए कि एक सुबह आप उठते हैं और पाते हैं कि आपका व्हाट्सएप अकाउंट बंद हो चुका है। न कोई सूचना, न कोई कारण, न कोई इंसानी संवाद। बस एक ठंडी-सी टेक्स्ट लाइन — ₹आपका अकाउंट हमारे दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करता है, इसलिए निलंबित कर दिया गया है।₹ अब सोचिए, जिनसे आपकी रोज़ी-रोटी जुड़ी थी, रिश्तों का संवाद चलता था, वे सब संपर्क एक झटके में कट गए। यह कोई कल्पना नहीं, आज लाखों भारतीय यूज़र्स की सच्चाई बनती जा रही है।

WhatsApp: सुविधा या साज़िश ?

एक समय था जब व्हाट्सएप को डिजिटल क्रांति का मसीहा माना गया था। न कोई विज्ञापन, न कोई शुल्क, और न ही कोई पॉलिसी का बोझ। लेकिन आज वही ऐप लोगों का समय, मानसिक शांति और सामाजिक दायरा निगलने लगा है। लाखों लोगों के अकाउंट बिना स्पष्ट कारण बैन हो रहे हैं। शिकायत करो तो जवाब आता है — ₹हम आपकी मदद नहीं कर सकते।₹ और फिर सुझाव दिया जाता है कि आप WhatsApp Business या Premium की ओर रुख करें। सवाल ये है कि क्या यह तकनीकी नीति है या एक सोची-समझी ₹डिजिटल लूट₹ ?

"हमारा ऐप, हमारे नियम": ये लोकतंत्र है या तानाशाही ?

व्हाट्सएप एक प्राइवेट कंपनी है, यह बात सही है। लेकिन क्या कोई भी कंपनी, जिसका उपयोग 50 करोड़ भारतीय करते हों, अपनी मनमानी से किसी का डिजिटल जीवन छीन सकती है ?

क्या इसे लोकतांत्रिक देश में मंज़ूरी दी जा सकती है ?

क्या यह ₹डिजिटल नसबंदी₹ नहीं है ? आज व्हाट्सएप का बैन वैसा ही है जैसे बिना मुकदमा चलाए किसी को जेल में डाल देना।

Jio मॉडल की पुनरावृत्तिः पहले फ्री, फिर लत, फिर लूट

आपको याद होगा कि कैसे Jio ने पहले भारत को फ्री डेटा दिया, फिर पूरे मार्केट को मरोड़ कर महंगा कर दिया। लोगों को डेटा का आदि बना कर धीरे-धीरे कीमतें बढ़ाईं और अब हर भारतीय जियो का ₹ग्राहक₹ नहीं, ₹कैदी₹ है। अब व्हाट्सएप भी उसी मॉडल पर चल रहा है।

पहले फ्री सेवा दी।

फिर dependency बनाई।

अब धीरे-धीरे फ्री यूज़र्स को किनारे कर Premium की ओर धकेला जा रहा है।

क्या यह ₹डिजिटल मुनाफाखोरी₹ नहीं है ?

व्यापार, शिक्षा और रिश्तों पर असर

व्हाट्सएप आज सिर्फ चैटिंग ऐप नहीं हैः

छोटे दुकानदार उससे ऑर्डर लेते हैं।

शिक्षक उससे पढ़ाते हैं।

बेरोज़गार उससे नौकरी ढूंढते हैं।

और आम लोग उससे अपने रिश्ते निभाते हैं।

जब अकाउंट बैन होता है, तो उसका असर केवल एक इंसान पर नहीं, पूरे सामाजिक ताने-बाने पर होता है।

कानूनी खामोशीः क्या सरकार सो रही है ?

सबसे खतरनाक बात यह है कि हमारे देश में अभी तक कोई ऐसा सशक्त ₹डिजिटल अधिकार कानून₹ नहीं है जो इन निजी टेक कंपनियों पर नकेल कस सके। हम RTI से सरकार से सवाल पूछ सकते हैं, कोर्ट से इंसाफ पा सकते हैं, लेकिन व्हाट्सएप से नहीं पूछ सकते कि ₹मेरा कसूर क्या था ?₹

क्या यही लोकतंत्र है ?

क्या हम सिर्फ डाटा हैं, इंसान नहीं ?

सरकारें इन कंपनियों से वोट मांगती हैं, विज्ञापन कराती हैं, लेकिन जब नागरिकों का सवाल होता है तो मौन धारण कर लेती हैं।

डिजिटल गुलामी का दौर

अगर सोचें तो आज का भारतीय डिजिटल गुलाम बन चुका है। उसके पास स्मार्टफोन है लेकिन उस पर नियंत्रण नहीं। उसका डाटा उसके पास नहीं, कंपनियों के पास है। और जब चाहे ये कंपनियां उसे ₹डिजिटल अछूत₹ बना सकती हैं।

जिस तरह ब्रिटिश सरकार ने भारत पर शासन किया, उसी तरह आज अमेरिकी टेक कंपनियां हमारे डिजिटल जीवन पर राज कर रही हैं — और हम स्वतंत्र होते हुए भी पराधीन हैं।

समाधान क्या है ?

1. डिजिटल अधिकार कानून बनाना होगा जिसमें अकाउंट बैन की प्रक्रिया न्यायसंगत और पारदर्शी हो।
2. डिजिटल लोकपाल की नियुक्ति की जानी चाहिए जो यूज़र्स की शिकायतों की सुनवाई करे।
3. सरकार को ऐसी कंपनियों से लाइसेंस की शर्तों में जवाबदेही जोड़नी चाहिए।
4. देशी विकल्प तैयार करने होंगे जो जनता के हित में हों, न कि मुनाफे के।
5. जनता को भी एकजुट होकर डिजिटल जागरूकता फैलानी होगी।

निष्कर्षः "टेक्नोलॉजी हमारी है, लेकिन नियंत्रण उनका क्यों ?"

व्हाट्सएप कोई भगवान नहीं है, जिसे न टोक सकते हैं न रोक सकते हैं। यह एक निजी कंपनी है, और जब इसका इस्तेमाल आम जन जीवन के हर पहलू से जुड़ गया है, तो इसकी जवाबदेही तय होनी चाहिए। हमें यह समझना होगा कि अगर हमने आज आवाज़ नहीं उठाई, तो आने वाले कल में हमारा डिजिटल अस्तित्व महज़ ₹बटन दबाकर मिटा देने लायक" रह जाएगा।

आज लड़ाई सिर्फ व्हाट्सएप के बैन की नहीं, डिजिटल सम्मान और आज़ादी की है। और इस बार हमें चुप नहीं रहना है, क्योंकि चुप्पी की कीमत "आजादी" नहीं, "गुलामी" होती है।

"सात शव और एक सवालः हम सब कब जागेंगे ?"

सात शव और एक सवाल : हम सब कब जागेंगे?
मरते एक हैं, दोषी हम सब हैं
मौन अपराध है : पंचकूला की त्रासदी से सीख
हर आत्महत्या एक पुकार है, क्या हम सुन रहे हैं?
जब रिश्ते रह गए सिर्फ़ त्योहारों तक
आर्थिक तंगी से नहीं, सामाजिक बेरुख़ी से मरे वो लोग
सिर्फ़ खबर नहीं थी वो, एक सामूहिक अपराध का दस्तावेज़ थी
आखिरकार छोड़कर तो सब कुछ यहीं जाना है। ऐसे में यदि किसी जरूरतमंद अपने की सहायता कर दी जाए, तो हम वैसे अपराध से बच सकते हैं जिससे प्रवीण मित्तल के अपने नहीं बच सके।

प्रियंका सौरभ

पंचकूला में एक ही परिवार के सात सदस्यों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली। ये पंक्तियाँ लिखते हुए हाथ काँपते हैं, और मन बार-बार वहीं लौट जाता है — उस बंद दरवाज़े के पीछे, जहाँ हर उम्र की उम्मीद दम तोड़ चुकी थी। उस दृश्य को केवल "सामूहिक आत्महत्या" कह देना एक आसान भागदौड़ है। असल में, यह एक सामूहिक सामाजिक असफलता है, जिसमें हम सब — पड़ोसी, रिश्तेदार, संस्थाएं, सरकारें — कहीं न कहीं सहभागी हैं।

चुप्पियों की चीत्कार

जब कोई आत्महत्या करता है, तो वह सिर्फ़ जीवन नहीं खोता, वह समाज से हार जाता है। वह संकेत देता है कि उसने बहुत पुकारा, बहुत झेला, बहुत सहा — और फिर, थककर ख़ामोशी चुन ली।

प्रवीण मित्तल और उनका परिवार भी शायद चुप नहीं था, बस उनकी आवाज़ों को हमने अनसुना कर दिया।

> "उसने क्यों नहीं बताया ?"

शायद इसलिए नहीं बताया कि हर बार जब वह टूटा, हम सब अपने-अपने मोबाइलों में व्यस्त थे।

शायद इसलिए नहीं बताया कि गरीबी, कर्ज, और असफलता को अब भी हम शर्म से जोड़ते हैं, सहानुभूति से नहीं।

हम सब थोड़े-थोड़े दोषी हैं

हर आत्महत्या के पीछे कोई एक कारण नहीं होता, बल्कि एक सामाजिक ढांचा होता है — जिसमें व्यक्ति आर्थिक रूप से टूटता है, भावनात्मक रूप से अकेला पड़ता है, और फिर आत्मसम्मान की चादर ओढ़कर चुपचाप चला जाता है।

यह घटना भी वैसी ही थी। एक व्यापारी जो कभी आत्मनिर्भर था, आज बैंक और साहूकारों के बोझ में दबकर ख़त्म हो गया। उसके बच्चे, जो दुनिया देखना चाहते थे, अपने भविष्य को ही दफ़न कर बैठे।

क्या कोई भी पड़ोसी, रिश्तेदार या दोस्त इतना पास नहीं था कि उसकी पीड़ा जान सके?

मौन भी अपराध है

हम अक्सर अपराध को केवल 'किया हुआ' समझते हैं — पर सच यह है कि जो समय पर कुछ नहीं करते, वे भी अपराध में सहभागी होते हैं।

अगर एक दोस्त, एक भाई, एक ग्राहक, एक पड़ोसी — समय पर एक बात भी कह देता, ₹चलो, कुछ करते हैं,₹ तो शायद इन सात जीवनों को बचाया जा सकता था।

क्या आत्महत्या एक विकल्प है? नहीं, पर कभी-कभी लगती है।

हमारे देश में मानसिक स्वास्थ्य अब भी 'कमज़ोरी' माना जाता है। आर्थिक संकट को 'कर्मों की सज़ा' समझ लिया जाता है। और मदद माँगना तो जैसे अपराध है।

एक खुद्दार व्यक्ति जब हार मानता है, तो इसका मतलब है कि उसने हिम्मत नहीं हारी, बल्कि समाज से उम्मीद ही छोड़ दी।

क्या इस परिवार को आत्महत्या से रोका जा सकता था?

हाँ। बिल्कुल हाँ।

अगर सरकारी योजनाएं ठीक से काम कर रही होतीं।

अगर कर्ज़ माफ़ी की प्रक्रिया मानवीय होती।

अगर पड़ोसियों में संवेदना होती।

अगर कोई रिश्ता इतना सजीव होता कि दरवाज़ा खटखटा देता।

हम क्या कर सकते हैं?

1. संवेदनशील बने रहें – अगली बार जब कोई चुप हो, तो उसका हाल ज़रूर पूछें।
2. मदद करें – यह ज़रूरी नहीं कि आप लाखों रुपये दे सकें, पर एक कंधा, एक बात, एक रास्ता बहुत बड़ा सहारा हो सकता है।
3. संकट में अपनों को न छोड़ें – जब कोई तकलीफ़ में हो, तो उससे दूरी न बनाएं। यही वो समय होता है जब सबसे ज़्यादा साथ की ज़रूरत होती है।
4. सरकार और प्रशासन से माँग करें – आत्महत्या की घटनाओं की सिर्फ़ जाँच न हो, उनसे सबक लेकर सामाजिक सुरक्षा ढाँचा और मज़बूत किया जाए।
5. अपने बच्चों को सिखाएँ कि हार इंसान को नहीं, इंसान हार को बदल सकता है।

मीडिया की भूमिकाः सहानुभूति या सनसनी?

इस घटना को मीडिया ने खूब चलाया। हर चैनल पर हेडलाइन थी –

"सात लोगों की सामूहिक आत्महत्या से हड़कंप!"

"सुसाइड नोट में लिखी दर्दनाक बातें!"

पर सवाल है — क्या मीडिया ने इसे एक मानवीय संकट की तरह देखा, या TRP का मौका?

इस परिघटना को सनसनीखेज बनाना बहुत आसान है,

पर यह समझना जरूरी है कि किसी की मौत को खबर बनाना नहीं,

किसी की जिंदगी को बचाना ज़्यादा महत्वपूर्ण है।

मीडिया को चाहिए कि वह ऐसी घटनाओं को नीतिगत बदलाव, सामाजिक सुधार, और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में ले जाए, न कि केवल एक रोचक सामग्री की तरह पेश करे।

हर आत्महत्या के बाद एक सवाल हमारे सामने होता है – अब क्या?

अब रोने से कुछ नहीं बदलेगा। अब अफ़सोस से आत्मग्लानि मिटेगी नहीं।

अब समय है कि हम अपने-अपने जीवन के छोटे-छोटे दायरों में सजीव संवेदनशीलता को वापस लाएँ।

हर पड़ोसी, हर दोस्त, हर रिश्तेदार — अब एक वचन लेंः

"मैं किसी अपने को यूँ अकेला नहीं मरने दूँगा।"

अंतिम बातः चुप रहना अब अपराध है

आज, जब हम इस त्रासदी के बाद दुःखी हैं, एक सवाल हमारे सामने खड़ा है —

₹क्या हम अगली प्रवीण मित्तल कहानी को होने से रोक पाएँगे ?₹

शायद हाँ —

अगर हम अपने जीवन में थोड़ा ठहराव लाएँ,

अगर हम रिश्तों को केवल औपचारिकता नहीं, संवेदना का माध्यम मानें,

अगर हम यह मान लें कि चुप रहना भी एक किस्म का अपराध है।

इस बार मोमबत्तियाँ नहीं जलाइए,

एक संकल्प लीजिए —

₹मैं किसी अपने को इस कदर टूटने नहीं दूँगा कि वो मरना चुने, जीना नहीं।₹

अंत में, प्रार्थना नहीं — प्रतिज्ञा चाहिए।

इस बार मोमबत्तियाँ न जलाइए, संकल्प कीजिए।

कि अगली बार कोई प्रवीण मित्तल न मरे।

कोई बच्चा ज़हर न खाए।

कोई माँ अपनी आँखों से अपने सपनों को फांसी पर झूलते न देखे।

और अगर फिर भी कुछ न कर सकें, तो कम से कम इतना ज़रूर करें — चुप न रहें।

आतंकवाद को आतंकित करने की मोदी नीति

राजेश कुमार पासी

सैन्य नीति में कहा जाता है, आक्रमण ही सबसे बढ़िया रक्षा है। अब ऐसा लगता है कि मोदी सरकार इस नीति पर चल पड़ी है। पाकिस्तान द्वारा फैलाए जा रहे आतंकवाद के खिलाफ हम पिछले 45 सालों से बचाव की नीति पर चल रहे थे। इसका नतीजा यह था कि आतंकवादी पूरे देश में दनदनाते घूम रहे थे। इतने बड़े देश में सभी को सुरक्षा देना संभव नहीं है, इसलिए गुप्तचर एजेंसियों और सुरक्षा बलों की भरपूर कोशिशों के बावजूद भारत लगातार आतंकवादी हमले झेल रहा था। आतंकवाद के कारण भारत के 20000 निर्दोष नागरिकों को असमय अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है। इसके अलावा भारत की जो आर्थिक हानि हुई है और उसके विकास को चोट पहुंची है, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। आतंकवाद के बारे में कहा भी जाता है कि आतंकवादी हमले से बचने के लिए सुरक्षाबलों को हर बार कामयाब होना पड़ता है लेकिन आतंकवादियों को सिर्फ एक बार कामयाब होने की जरूरत होती है। 1980 से लेकर अब तक भारत के कोने-कोने में आतंकवादी हमले होते रहे हैं। 2014 में मोदी सरकार बनने के बाद आतंकवाद के खिलाफ बड़ी कार्यवाही शुरू की गई जिसके परिणामस्वरूप आतंकवाद को जम्मू-कश्मीर तक सीमित कर दिया गया। पिछले दस सालों से जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश का शेष हिस्सा आतंकवाद की मार से बचा रहा है। इसके बावजूद जम्मू-कश्मीर में आज भी आतंकवादी हमले जारी हैं। अब मोदी सरकार ने तय कर लिया है कि आतंकवाद को पूरे देश से समाप्त कर देना है और इसके लिए आतंकवादियों के आका पाकिस्तान के खिलाफ कार्यवाही करने का मन बना लिया गया है। पाकिस्तान बड़े-बड़े आतंकवादी हमलों के बाद भारत की प्रतिक्रिया से ये मान चुका था कि भारत एक कमजोर राज्य है। इसके खिलाफ बड़े से बड़ा हमला कर दो लेकिन वो कुछ करने वाला नहीं है।

आतंकवाद के इतिहास में दो बार ऐसा हुआ है जब पाकिस्तान ने भारत पर सीधा हमला किया है। एक बार लोकतंत्र के मंदिर संसद को निशाना बनाया गया और दूसरी बार देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में बड़ा आतंकवादी हमला करके 166 भारतीय नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। ये ऐसे दो मौके थे जब पाकिस्तान के खिलाफ बड़ी कार्यवाही की जरूरत थी लेकिन तत्कालीन सरकारें इसमें नाकामयाब रही। 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद 2016 में उरी में हुए आतंकवादी हमले के बाद पहली बार भारत सरकार ने पाकिस्तान को जवाब दिया। पीओके में भारतीय सेना ने घुसकर आतंकवादी कैंप को उड़ा दिया। दूसरी बार 2019 में पुलवामा में बड़ा आतंकवादी हमला करके 40 सीआरपीएफ जवानों को शहीद कर दिया गया। मोदी सरकार ने इसके जवाब में पाकिस्तान स्थित बालाकोट में आतंकवादी कैंप पर हवाई हमला करके आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया। इन दो कार्यवाहियों से भारत ने पाकिस्तान को बताया कि हम अब आतंकवादी हमलों पर चुप नहीं बैठेंगे बल्कि उसका जवाब देंगे। आतंकवादियों को पाकिस्तान में घुसकर मारा जायेगा। पाकिस्तान ने इसे गंभीरता से नहीं लिया और 22 अप्रैल 2025 में कश्मीर घाटी के पहलगाम में बड़ा आतंकवादी हमला करके 26 निर्दोष लोगों की हत्या करवा दी। इस हमले के बाद भारत सरकार ने जो कार्यवाही की है, उसने बता दिया है कि अब जवाब बड़ा होगा और कितना बड़ा होगा, ये हम तय करेंगे। 26 लोगों के बदले 9 आतंकवादी ठिकानों को मिट्टी में मिला दिया गया। इसके जवाब में जब पाकिस्तानी सेना ने भारत के 26 शहरों पर हमला किया तो पाकिस्तानी सेना के 11 सैन्य हवाई अड्डों को तबाह कर दिया गया। इसके अलावा पाकिस्तानी सेना को बड़ा नुकसान पहुंचाया गया है।

भारत ने 2025 में आतंकवाद के खिलाफ नई नीति बना ली है। 2016 और 2019 में की गई कार्यवाही आतंकवादी हमले का बदला लेने की कार्यवाही प्रतीत होती है लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत की गई कार्यवाही को आतंकवादी हमले का बदला नहीं कहा जा सकता बल्कि ये कार्यवाही पाकिस्तान को दंड देने की कार्यवाही है। प्रधानमंत्री मोदी ने घोषणा कर दी है कि अब वो आतंकवादी और उनके नेता, पाकिस्तान की सेना और सरकार को एक मानते हैं। अब अगर भारत पर आतंकवादी हमला होगा तो भारत उसका दंड सिर्फ आतंकवादियो को नहीं देगा बल्कि पाकिस्तान की सेना और सरकार को भी उसकी बड़ी कीमत चुकानी होगी।

ऑपरेशन सिंदूर ने पहली बार आतंकवादियो, पाकिस्तान की सेना और सरकार को आतंकित कर दिया है। अब भारत पर आतंकवादी हमले का डर भारत से ज्यादा पाकिस्तान को हो रहा है। ऐसा लग रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी अब आतंकवाद के खिलाफ आतंक का इस्तेमाल करना चाहते हैं। वास्तव में आतंकवादी और उनके आका पाकिस्तान को यही भाषा समझ आती है। जैसे पहले भारत सरकार हर समय आतंकवादी हमले से डरी रहती थी अब आतंकवादी हमले का डर पाकिस्तान के आतंकियों और उसकी सेना एवं सरकार को सता रहा है। मोदी सरकार ने घोषणा कर दी है कि अब वो आतंकवादी हमले को एक्ट ऑफ वॉर की नजर से देखेगी और उसका जवाब सैन्य कार्यवाही के रूप में देगी। कार्यवाही की मात्रा और तरीका भारतीय सेना तय करेगी। वैसे मोदी सरकार को पाकिस्तान पर पूरा भरोसा है कि वो फिर आतंकवादी हमला करवा सकता है। यही कारण है कि भारत सरकार ने घोषणा की है कि ऑपरेशन सिंदूर खत्म नहीं हुआ है, सिर्फ रोका गया है। ऑपरेशन सिंदूर को जारी रखने की बात कहकर पाकिस्तान को संदेश दे दिया गया है कि इस बार आतंकवादी हमले का बड़ा जवाब दिया जाएगा। भारत जैसे बड़े देश के लिए पाकिस्तान जैसे छोटे देश से बदला लेने की बात करना सही नहीं लगता है। इसलिए भारत दुनिया को संदेश देना चाहता है कि अब वो बदला नहीं लेगा बल्कि पाकिस्तान को ऐसा दंड देगा कि वो भविष्य में भारत पर हमला करने से पहले सौ बार सोचे।

वास्तव में भारत अब एक बड़ी ताकत बन चुका है और पाकिस्तान के साथ अपनी तुलना नहीं चाहता है। भारत पाकिस्तान सहित अपने दुश्मनों के मन में ऐसा खौफ पैदा करना चाहता है कि वो भारत की तरफ आंख उठाकर देखने की हिम्मत ही न कर सकें। सिर्फ तीन दिन के युद्ध में भारत ने पाकिस्तानी सेना की रक्षा और आक्रमण करने की क्षमता ही खत्म कर दी। 10 मई को पाकिस्तान ऐसी हालत में पहुंच गया था कि वो न तो भारत पर हमला कर सकता था न ही भारतीय हमले को रोक सकता था। सिर्फ कुछ घंटो में पाकिस्तानी सेना की ऐसी हालत करके भारत ने संदेश दिया है कि अब भी वक्त है रूक जाओ अन्यथा अगली कार्यवाही कई गुना बड़ी हो सकती है। इस बार तो भारत ने युद्ध-विराम कर लिया लेकिन अगली बार हो सकता है कि युद्ध-विराम तक पाकिस्तान की पूरी सेना बर्बाद कर दी जाये। सिंधू जल समझौता भी निलंबित रखा गया है ताकि पाकिस्तान को सुधरने का मौका दिया जाए। भारत ने कहा है कि अगर पाकिस्तान की सरकार आतंकवाद के खिलाफ ऐसी कार्यवाही करती है जिसका बड़ा असर हो तो भारत इस समझौते पर बात करने को तैयार है। मोदी ने स्पष्ट संदेश दे दिया है कि आतंकवाद रोकने तक पाकिस्तान से कोई बात नहीं होगी। भारत ने तय कर लिया है कि अब आतंकवाद को जड़ से खत्म करना है और ऐसा सिर्फ पाकिस्तान के द्वारा आतंकवाद की नीति को छोड़ने पर ही होगा। नक्सलवाद के खिलाफ भारत ने आक्रामक कार्यवाही करके उसको जड़ से उखाड़ने का फैसला कर लिया है और उसका परिणाम सामने है। अब भारत आतंकवाद के खिलाफ भी पूरी तरह से आक्रामक हो गया है। पीएम मोदी ने पाकिस्तानी जनता को सम्बोधित करते हुआ कहा है कि सुख-चैन की रोटी खाओ अन्यथा मेरी गोली तो है। इसका सीधा मतलब है कि अब भारत आतंकवाद से अपने देश की रक्षा नहीं करेगा बल्कि आतंकवाद पर आक्रमण करेगा और उसको जड़ से मिटा देगा। अगर पाकिस्तान नहीं सुधरा तो उसके अस्तित्व को खतरा पैदा हो सकता है।

अब भारत की नीति आतंकियों और उनके आका पाकिस्तान को आतंकित करने की है। अब भारत नहीं, उन्हें डरना होगा कि अगर आतंकवादी हमला किया तो अंजाम सोच से परे होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय सेना को मोदी सरकार ने 11 साल में इतना शक्तिशाली बना दिया है कि पाकिस्तान की सेना उसके मुकाबले बहुत कमजोर दिखाई दे रही है। मोदी सरकार लगातार भारतीय सेना को ताकतवर बना रही है ताकि भारत के दुश्मनों में आतंक बना रहे कि भारत पर हमला करने का क्या अंजाम हो सकता है। आज जैसी कार्यवाही भारतीय सेना से पाकिस्तानी सेना पर की है, क्या ऐसी कार्यवाही भारतीय सेना 2019 में कर सकती थी। मेरा मानना है कि मोदी सरकार ने जो कार्यवाही की है, उसके लिए लम्बी तैयारी की गई है। आज भारतीय सेना इस हालत में है कि बिना अपनी सीमा को पार किये पाकिस्तानी सेना को तबाह कर सकती है। भारतीय सेना की बढ़ती क्षमता ही आतंकवाद के खिलाफ ऐसी सुरक्षा है जो पहले कभी नहीं थी।

सात सन्नाटे, एक संसार

एक घर था कभी, जहाँ हँसी भी गूंजती थी,
आज वहीं शून्य की चीत्कार सुनाई देती है।
सात देहें, सात कहानियाँ, सात मौन प्रश्न,
और हम सब – अब भी चुप हैं... केवल देखते हैं।

कहते हैं – ₹क्यों नहीं बताया?₹
पर क्या कभी हमने पूछा था – ₹कैसे हो?₹
कभी चाय पर बैठकर पूछा होता
तो शायद ज़हर के प्याले तक बात न जाती।

प्रवीण मित्तल और उसका संसार,
अब सिर्फ़ अख़बार की एक खबर है।
पर उसकी तकलीफ़...
कई दरवाज़ों के पीछे आज भी साँस ले रही है।

क्या हमारे रिश्ते इतने खोखले हो गए हैं,
कि दुख बांटना बोझ लगने लगे?
क्या हर आत्महत्या से पहले
हम सब थोड़े-थोड़े हत्यारे नहीं बन जाते?

रिश्ते सिर्फ़ मौकों पर नहीं,
मुसीबतों में आज़माए जाते हैं।
और अगर कोई चुपचाप मर गया,
तो यक़ीन मानिए – हमने उसे जीने नहीं दिया।

हर पड़ोसी, हर भाई, हर मित्र,
आज खुद से पूछे –
क्या मैंने किसी टूटते व्यक्ति को थामने की कोशिश की थी?
या मैं भी उन्हीं में था जो कहते हैं – ₹उसने क्यों नहीं बताया?₹

अब पछतावे की आग में जलने से बेहतर है,
कि आज से हम किसी एक भूखे चेहरे पर
मुस्कान बाँटें, किसी एक थके मन को सहारा दें।

क्योंकि एक छोटा-सा सहारा,
कभी-कभी मौत की ओर बढ़ते कदम को
ज़िंदगी की ओर मोड़ देता है।

तो आइए,
सिर्फ़ अफ़सोस न करें,
इंसानियत को ज़िंदा करें।

– डॉ सत्यवान सौरभ

31 मईः भोपाल में सजेगा सिंदूरी स्वाभिमान का दरबार

[रानी अहिल्या की 300वीं जयंती पर सिंदूरी रंग में लिपटा महिला महासम्मेलन]

एक ऐसी लहर, जो नारी शक्ति को नया आकाश देगी, एक ऐसा उत्सव, जो इतिहास के पन्नों को फिर से जीवंत करेगा, और एक ऐसा मंच, जो हर महिला के मन में साहस और सम्मान की ज्योति प्रज्वलित करेगा। 31 मई 2025 को भोपाल का जंबूरी मैदान केवल एक स्थान नहीं रहेगा, बल्कि यह नारी के गौरव, संघर्ष और विजय का प्रतीक बनेगा। रानी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती पर आयोजित होने वाला यह महिला महासम्मेलन सिंदूरी रंग में सजा एक ऐसा महापर्व होगा, जो नारी शक्ति की अनुपम गाथा को विश्व पटल पर उकेरेगा। यह आयोजन केवल एक समारोह नहीं, बल्कि एक क्रांति की शुरुआत है – एक ऐसी क्रांति, जो हर नारी को यह विश्वास दिलाएगी कि वह सिर्फ स्वप्नद्रष्टा नहीं, बल्कि स्वप्नों को साकार करने वाली शक्ति है।

सिंदूरी रंग इस महासम्मेलन की आत्मा है। यह रंग केवल सौंदर्य या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि नारी के अटल साहस, उसके आत्मसम्मान और उसकी अजेयता का द्योतक है। माथे की बिंदी, मांग का सिंदूर, और नारी के हृदय में धधकती अग्नि – यही वह सिंदूरी रंग है, जो इस आयोजन को समर्पित है। यह महासम्मेलन 'ऑपरेशन सिंदूर' की अभूतपूर्व सफलता को भी समर्पित है, जो महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और सशक्तिकरण के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ है। ऑपरेशन सिंदूर ने नारी के खिलाफ अत्याचारों को न केवल चुनौती दी, बल्कि समाज में उनके लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक स्थान भी सुनिश्चित किया। यह आयोजन उस विजय की कहानी को लाखों दिलों तक पहुंचाएगा, जो नारी शक्ति की अनंत संभावनाओं का गवाह है। हाल ही में हुई एक शानदार बैठक ने ऐतिहासिक आयोजन की नींव रखी। लगभग 1500 महिलाओं ने हर मुद्दे पर विचार साझा किए। यह केवल चर्चा नहीं, बल्कि एक जनांदोलन का उदय था। आगामी महासम्मेलन में 2-2.5 लाख महिलाओं की भागीदारी का लक्ष्य नारी शक्ति की एकता को दर्शाएगा। गृहिणियां, उद्यमी, शिक्षिकाएं, चिकित्सक और सामाजिक कार्यकर्ता एकजुट होकर समाज को नया संदेश देंगीः संगठित नारी विश्व बदल सकती है।

रानी अहिल्याबाई होलकर – एक ऐसी शख्सियत, जिनका नाम सुनते ही मन में श्रद्धा और गर्व का भाव जागता है। 18वीं सदी में, जब महिलाओं की आवाज को दबाया जाता था, उन्होंने मालवा साम्राज्य को न केवल संभाला, बल्कि उसे समृद्धि और न्याय के शिखर तक पहुंचाया। मंदिरों का निर्माण, धर्मशालाओं की स्थापना, शिक्षा और गरीबों की सहायता – उनके कार्य आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी न्यायप्रियता और साहस ने उन्हें एक ऐसी शासक बनाया, जिसे न केवल उनके समय में, बल्कि आज भी आदर्श के रूप में देखा जाता है। यह महासम्मेलन उनकी विरासत को जीवंत करने का एक अनुपम प्रयास है। यह नई पीढ़ी को यह सिखाएगा कि नारी की शक्ति असीम है, और वह हर क्षेत्र में नेतृत्व करने में सक्षम है।

यह आयोजन केवल रानी अहिल्याबाई को श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक नया कदम है। यह मंच महिलाओं की समस्याओं – शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता, और सुरक्षा – पर सार्थक संवाद को बढ़ावा देगा। यह समाज को यह दिखाएगा कि नारी केवल घर की लक्ष्मी नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की रीढ़ है। इस सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों की महिलाएं एक साथ आएंगी, और यह एकता समाज में एक नई चेतना जागृत करेगी। यह आयोजन हर उस महिला को प्रेरित करेगा, जो अपने सपनों को सच करने की हिम्मत रखती है। यह हर उस बेटी, बहन, और मां को यह विश्वास दिलाएगा कि वह समाज की धुरी है, उसकी ताकत है।

सम्मेलन का प्रभाव केवल भोपाल या मध्य प्रदेश तक सीमित नहीं रहेगा। यह पूरे देश में नारी शक्ति के पुनर्जागरण का प्रतीक बनेगा। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि जब समाज और सरकार मिलकर काम करते हैं, तो नारी के लिए एक सुरक्षित और सशक्त भविष्य का निर्माण संभव है। यह आयोजन उस संदेश को और मजबूत करेगा। यह समाज के हर वर्ग को यह बताएगा कि नारी को कमजोर समझने की भूल अब नहीं होनी चाहिए। यह सम्मेलन नारी के आत्मविश्वास को बढ़ाएगा और उन्हें यह विश्वास दिलाएगा कि वे हर क्षेत्र में नेतृत्व कर सकती हैं।

31 मई 2025 को जब जंबूरी मैदान सिंदूरी रंग में रंगेगा, तो वह केवल एक आयोजन नहीं होगा – वह होगा नारी शक्ति का महापर्व। यह हर उस महिला के लिए एक नई सुबह होगी, जो अपने हौसलों से आसमान छूना चाहती है। यह सम्मेलन रानी अहिल्याबाई होलकर के आदर्शों को जीवंत करेगा और हर नारी को यह विश्वास दिलाएगा कि वह सिर्फ स्वप्नद्रष्टा नहीं, बल्कि स्वप्नों को साकार करने वाली शक्ति है। आइए, इस ऐतिहासिक महासम्मेलन का हिस्सा बनें। आइए, सिंदूरी शक्ति के साथ एक नए भारत का निर्माण करें, जहां हर नारी न केवल सम्मान की हकदार हो, बल्कि नेतृत्व की ध्वजवाहिका भी हो। यह है वह क्षण, जब नारी शक्ति का हर रंग, हर स्वर, और हर सपना एक नई क्रांति की नींव रखेगा। सिंदूरी रंग, नारी के संग – यह है सशक्त भारत का नया प्रभात।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

शौर्य, स्वाभिमान और पराक्रम के प्रतीक: महाराणा प्रताप

संदीप सृजन

महाराणा प्रताप का जीवन एक ऐसी प्रेरक गाथा है जो हर भारतीय को गर्व से भर देती है। उन्होंने अपने जीवन में कभी हार नहीं मानी और स्वतंत्रता के लिए अंतिम सांस तक संघर्ष किया। उनकी जयंती हमें न केवल उनके बलिदान को याद करने का अवसर देती है, बल्कि यह हमें अपने जीवन में साहस, स्वाभिमान और देशभक्ति के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। महाराणा प्रताप का नाम हमेशा भारतीय इतिहास के पन्नों में अमर रहेगा, और उनकी गाथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

महाराणा प्रताप का जन्म जेष्ठ शुक्ला तृतीया, (9 मई 1540) को राजस्थान के कुम्भलगढ़ दुर्ग में हुआ था। उनके पिता महाराणा उदय सिंह द्वितीय मेवाड़ के शासक थे, और उनकी माता रानी जीवत कंवर थीं। प्रताप सिसोदिया राजवंश के गौरवशाली वंशज थे, जो अपनी वीरता और स्वतंत्रता की भावना के लिए प्रसिद्ध थे। बचपन से ही प्रताप में नेतृत्व, साहस और देशभक्ति के गुण दिखाई देने लगे थे। उन्हें युद्ध कला, घुड़सवारी, तलवारबाजी और धनुर्विद्या में प्रशिक्षित किया गया। उनके गुरुओं ने उन्हें न केवल शारीरिक बल, बल्कि मानसिक दृढ़ता और नैतिकता का पाठ भी पढ़ाया।

प्रताप का बचपन उस समय बीता जब मेवाड़ मुगल शासक अकबर की बढ़ती शक्ति के साये में था। उनके पिता उदय सिंह ने चित्तौड़गढ़ को मुगलों के अधीन होने से बचाने के लिए कड़ा संघर्ष किया, लेकिन 1568 में चित्तौड़गढ़ मुगलों के हाथों में चला गया। इस घटना ने युवा प्रताप के मन पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए जीवन समर्पित करने का संकल्प लिया।

1572 में उदय सिंह की मृत्यु के बाद प्रताप मेवाड़ के महाराणा बने। उस समय मेवाड़ की स्थिति अत्यंत नाजुक थी। मुगल सम्राट अकबर ने अधिकांश राजपूत रियासतों को अपने अधीन कर लिया था, और मेवाड़ भी उनके निशाने पर था। अकबर ने मेवाड़ को अपने साम्राज्य में मिलाने के लिए कई बार राजनयिक प्रयास किए, लेकिन प्रताप ने मुगलों की अधीनता स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार कर दिया। उनके लिए स्वाभिमान और स्वतंत्रता सर्वोपरि थी।

प्रताप का यह निर्णय केवल एक राजनैतिक कदम नहीं था, बल्कि यह उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और मातृभूमि के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतीक था। उन्होंने कहा था, ₹मैं अपने पूर्वजों की स्वतंत्रता की विरासत को कभी नहीं छोड़ूंगा।₹ इस संकल्प ने उन्हें मुगल साम्राज्य के खिलाफ एक अडिग योद्धा के रूप में स्थापित किया।

महाराणा प्रताप की वीरता का सबसे प्रसिद्ध अध्याय है हल्दीघाटी का युद्ध, जो 18 जून 1576 को लड़ा गया। यह युद्ध मेवाड़ और मुगल सेना के बीच हुआ, जिसमें मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह और आसफ खान कर रहे थे। मुगल सेना की संख्या और संसाधन मेवाड़ की तुलना में कहीं अधिक थे। अनुमान के अनुसार, मुगल सेना में लगभग 80,000 सैनिक थे, जबकि प्रताप की सेना में केवल 20,000 योद्धा थे। फिर भी, प्रताप ने अपने साहस और रणनीति से इस युद्ध को इतिहास में अमर कर दिया।

हल्दीघाटी का युद्ध केवल एक सैन्य टकराव नहीं था, बल्कि यह स्वतंत्रता और स्वाभिमान की लड़ाई थी। प्रताप ने अपने प्रिय घोड़े चेतक के साथ युद्ध में अद्भुत पराक्रम दिखाया। चेतक ने अपने स्वामी को युद्ध के मैदान में सुरक्षित रखने के लिए अपनी जान तक न्यौछावर कर दी। एक प्रसिद्ध घटना में, चेतक ने घायल होने के बावजूद प्रताप को युद्धभूमि से सुरक्षित निकाला और एक नाले को पार करने के बाद दम तोड़ दिया। चेतक की यह वफादारी और बलिदान आज भी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

हल्दीघाटी युद्ध का परिणाम विवादास्पद रहा। कुछ इतिहासकार इसे मुगलों की जीत मानते हैं, क्योंकि मेवाड़ की सेना को पीछे हटना पड़ा, लेकिन प्रताप की रणनीति और साहस ने मुगलों को मेवाड़ पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने से रोक दिया। युद्ध के बाद भी प्रताप ने हार नहीं मानी और गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाकर मुगलों को लगातार चुनौती दी।

हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप ने मेवाड़ के जंगलों और पहाड़ों को अपना ठिकाना बनाया। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई, जिसमें छोटी-छोटी टुकड़ियों के साथ मुगल सेना पर आकस्मिक हमले किए जाते थे। इस रणनीति ने मुगलों को मेवाड़ के अधिकांश हिस्सों पर कब्जा करने से रोका। प्रताप की सेना में भील और अन्य जनजातीय योद्धा भी शामिल थे, जिन्होंने अपनी स्थानीय जानकारी और युद्ध कौशल से मेवाड़ की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस दौरान प्रताप को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके परिवार को जंगलों में भटकना पड़ा, और कई बार भोजन की कमी के कारण उन्हें घास की रोटियां खाकर गुजारा करना पड़ा। एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, जब प्रताप की बेटी भूख से रो रही थी, तब उनकी पत्नी ने घास की रोटी बनाई, जिसे देखकर प्रताप की आंखें नम हो गईं। लेकिन इन कठिन परिस्थितियों में भी प्रताप का संकल्प कभी नहीं डगमगाया।

महाराणा प्रताप न केवल एक योद्धा थे, बल्कि एक आदर्श नेता भी थे। उन्होंने अपने सैनिकों और प्रजा के साथ हमेशा सम्मान और सहानुभूति का व्यवहार किया। उनके नेतृत्व में मेवाड़ की जनता ने मुगलों के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष किया। प्रताप ने कभी भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया, भले ही उन्हें कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू था उनकी धार्मिक सहिष्णुता। प्रताप ने सभी धर्मों का सम्मान किया और अपने शासनकाल में किसी भी समुदाय के साथ भेदभाव नहीं किया। उनके दरबार में हिंदू, मुस्लिम और अन्य समुदायों के लोग एक साथ काम करते थे। यह उनकी उदारता और समावेशी दृष्टिकोण को दर्शाता है।

1597 में एक शिकार के दौरान लगी चोट के कारण महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु मेवाड़ के लिए एक बड़ा आघात थी, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवित है। मृत्यु से पहले उन्होंने अपने पुत्र अमर सिंह को मेवाड़ की स्वतंत्रता की रक्षा करने का दायित्व सौंपा।

महाराणा प्रताप की गाथा केवल मेवाड़ तक सीमित नहीं है। वे भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और साहस के प्रतीक बन गए। उनकी कहानी आज भी स्कूलों, कविताओं, गीतों और नाटकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचती है। राजस्थान में उनकी स्मृति में कई स्मारक और प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं, जो उनकी वीरता को जीवित रखती हैं।

महाराणा प्रताप केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व ही नहीं बल्कि हमारे समाज के लिए आदर्श है, जो स्वाभिमान से जीवन जीने की प्रेरणा देते है। आज के समय में, जब हम आधुनिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, प्रताप का जीवन हमें सिखाता है कि दृढ़ संकल्प और साहस के साथ किसी भी कठिनाई को पार किया जा सकता है।महाराणा प्रताप का नाम भारतीय इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों पर सदैव चमकता रहेगा, और उनकी यशगाथा आने वाली पीढ़ियों को उर्जा प्रदान करती रहेगी।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार और स्तम्भकार हैं)

संपादक,प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका का महत्व

संपादक प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका एक लेखक के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे लेखक के काम को पाठकों तक पहुंचाने और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में मदद करते हैं।लेखक को अपने काम के लिए उपयुक्त प्रकाशक का चयन करना चाहिए, जो उनके काम को सही तरीके से प्रस्तुत कर सके।

लेखक को संचार पत्र/पत्रिका के महत्व को समझना चाहिए, जो उनके काम को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में मदद करते हैं।लेखक को संपादक,प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ सहयोग करना चाहिए, जिससे उनके काम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।

लेखक को पाठकों और आलोचकों की प्रतिक्रिया को महत्व देना चाहिए, जिससे उनके काम में सुधार हो सके।लेखक को अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए।

लेखक के लिए सुझाव,,,,,अपने काम को अच्छी तरह से तैयार करें, लेखक को अपने काम को अच्छी तरह से तैयार करना चाहिए, जिससे वह प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के लिए आकर्षक हो।प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ संवाद करें,लेखक को प्रकाशक और संचार पत्र/पत्रिका के साथ संवाद करना चाहिए, जिससे उनके काम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।अपने काम का प्रचार करें, लेखक को अपने काम का प्रचार करना चाहिए, जिससे वह अधिक पाठकों तक पहुंच सके।

एक लेखक, संपादक और प्रकाशक के बीच का संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। यह संबंध न केवल लेखक के काम को बेहतर बनाने में मदद करता है, बल्कि उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में भी मदद करता है।

लेखक और संपादक के बीच का ये संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। संपादक की भूमिका न केवल लेखक के काम को सुधारने में है, बल्कि उन्हें और भी बेहतर बनाने में भी है। संपादक के सुझाव और टिप्पणियां लेखक को अपने काम को और भी गहराई से समझने में मदद करती हैं। संपादक,प्रकाशक की भूमिका न केवल लेखक के काम को प्रकाशित करने में है, बल्कि उसे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंचाने में भी है। प्रकाशक के समर्थन से लेखक का काम और भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

इन तीनों के बीच का संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है, जो लेखक के काम को सफल बनाने में मदद करता है।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह

शिक्षा और कैरियर,एक सफल भविष्य की कुंजी है।

शिक्षा और कैरियर हमारे जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। शिक्षा हमें ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, जबकि कैरियर हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने सपनों को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है।
शिक्षा हमें ज्ञान और कौशल प्रदान करती है जो हमें अपने जीवन में सफल होने में मदद करती है। यह हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए तैयार करती है।कैरियर हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने सपनों को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है। यह हमें अपने कौशल और ज्ञान का उपयोग करके अपने जीवन में सफल होने में मदद करता है।
शिक्षा और कैरियर के लिए कुछ सुझाव जिसे अपनाकर आप जीवन को सही दिशा में ले जा सकते हैं।अपने लक्ष्यों को निर्धारित करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए एक योजना बनाएं। शिक्षा प्राप्त करें जो आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगी।कौशल विकसित करें जो आपको अपने कैरियर में सफल होने में मदद करेंगे।नेटवर्किंग करें जो आपको अपने कैरियर में आगे बढ़ने में मदद करेगी।
शिक्षा और कैरियर हमारे जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। शिक्षा हमें ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, जबकि कैरियर हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपने सपनों को पूरा करने का अवसर प्रदान करता है। हमें अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने, शिक्षा प्राप्त करने, कौशल विकसित करने, और नेटवर्किंग करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा मध्य प्रदेश

पाकिस्तान का गुस्सा मिठाई के नाम बदल दिया गया: 'पाक' से 'श्री', और अगर श्रीलंका से अनबन हो गई तो?

भारत एक भावनात्मक देश है। यहां बारिश भी आती है तो लोग उसे "मोसम ने मूड बना दिया" कहकर गीतों में ढाल देते हैं। यहां कोई चुनाव हार जाए तो कहता है – जनता की सेवा जारी रहेगी, और कोई मिठाई का नाम बदल दे तो उसमें भी पाकिस्तान को हार का स्वाद चखाया जाता है।
अब देखिए न, हाल ही में एक प्रसिद्ध मिठाई की दुकान ने अपनी पॉपुलर मिठाई "पाक" का नाम बदलकर "श्री पाक" कर दिया। वजह? पाकिस्तान से नाराज़गी। जी हां, जैसे ही खबर आई कि पाकिस्तान ने फिर कोई नई नौटंकी की है, किसी को याद आया कि हमारी मिठाई भी "पाक" क्यों है? यह तो राष्ट्रवाद का अपमान हो गया भैया!
नाम में क्या रखा है?
शेक्सपीयर साहब ने कहा था – "नाम में क्या रखा है?" लेकिन अगर वो आज भारत में होते, और मिठाई की दुकान चलाते, तो यकीन मानिए "गुलाब जामुन" का नाम "सरस्वती सिंदूरी" कर देते और "रसगुल्ला" को "अमर प्रीत गोला" कहने लगते।
अब सोचिए, "पाक" को "श्री पाक" कर देने से पाकिस्तान को कितना दुख हुआ होगा! इमरान खान जेल में होंगे लेकिन जेलर को कह रहे होंगे – "देखो, हिन्दुस्तानियों ने हमारे नाम की मिठाई हटा दी। अब हमारा वजूद भी खतरे में है।" और वहां की अवाम ट्विटर पर #सेवपाकस्वीट का ट्रेंड चला रही होगी।
अगर श्रीलंका से अनबन हो जाए?
अब इस बात ने हमारे मोहल्ले की चाय वाली टपरी पर चर्चा का नया तड़का लगा दिया। शर्मा जी बोले – "भाई अगर कल को श्रीलंका से भी कोई मसला हो गया, तो क्या इस मिठाई को 'श्री' से हटा कर फिर 'सुंदर पाक' या 'सत्य पाक' कर देंगे?"
बगल में बैठे वर्मा जी बोले – "या फिर 'पाक' को हटा देंगे पूरी तरह, और सीधा नाम रख देंगे – 'सिर्फ हमारा'।"
मुझे डर ये है कि अगर श्रीलंका से अनबन हो गई और "श्री" हटाना पड़ा, तो हम मिठाई का नाम बदलते-बदलते एक दिन उसे "मिठा अज्ञात" कहने लगेंगे। और मिठाई खाने वाले ग्राहक कहेंगे – "भैया, वो क्या नाम था... श्री पाक, पाक श्री, श्री श्री मिठा... अरे वही जो पिछले हफ्ते न्यूज़ में था!"
पड़ोसी से झगड़ा = मिठाई का महायुद्ध
यह हमारी भारतीय आदत है कि हम गुस्सा हमेशा उन चीजों पर निकालते हैं जिनका मूल समस्या से कोई लेना-देना नहीं होता। जैसे पड़ोसी पाकिस्तान ने कोई हरकत की, तो हमारे यहां टीवी चैनल चीखने लगते हैं – "अब देखिए भारतीय जवाब", और जवाब आता है – "पाक मिठाई अब श्री पाक"।
ऐसे में वो मिठाई दुकान वाला अपने दोस्तों में कह रहा होगा – "भाई, देश की सुरक्षा में हम भी पीछे नहीं! आज से हमारी हर मिठाई देशभक्ति में लिपटी मिलेगी।"
हो सकता है अगले हफ्ते वो चॉकलेट बर्फी का नाम "मेड इन इंडिया बर्फी" रख दे और लड्डू को "लोकसभा गोला"। शादी में मिठाई के डिब्बे पर लिखा होगा – "यह मिठाई देश के जवानों को समर्पित है।"
ट्विटर और ट्रोल की टोली
अब नाम बदला है तो ट्विटर की बिरादरी कहां पीछे रहती।
एक यूज़र ने लिखा – "हमने तो पहले ही कहा था, पाक नाम की मिठाई पाकिस्तान को सपोर्ट कर रही थी।"
दूसरे ने जवाब दिया – "अब 'श्री पाक' से पाकिस्तान की नींद हराम हो जाएगी।"
कुछ लोगों ने मिठाई के स्वाद पर भी सवाल उठाए – "नाम तो बदल दिया, स्वाद में भी देशभक्ति डाली या सिर्फ नाम बदलकर काम चला लिया?"
और एक ज्ञानी बोला – "भाई, मिठाई का नाम बदलने से राष्ट्रीय सुरक्षा नहीं बढ़ती, लेकिन हंसी जरूर आ जाती है।"
मिठाई बनाम अंतरराष्ट्रीय संबंध
अब सोचिए, कल को नेपाल से कुछ विवाद हो गया तो "नेपाल हजम गोलियां" नाम की कोई आयुर्वेदिक दवाई क्या करेगी? क्या उसका नाम बदलकर "देसी हजम गोलियां" हो जाएगा?
या अगर भूटान ने UN में भारत के खिलाफ वोट दे दिया, तो हम "भूटानी मोमबत्ती" का नाम "राष्ट्रदीप" कर देंगे?
अंतरराष्ट्रीय संबंध अब नामकरण विभाग से चलेंगे। विदेश मंत्रालय कहेगा – "हमने पाकिस्तान को कड़ा संदेश भेजा है।"
और मिठाई दुकान वाला बोलेगा – "हाँ जी, हम भी तैयार हैं। अगली बार 'चाइनीज समोसा' का नाम 'स्वदेशी समोसा' रख देंगे।"
नाम बदलने से क्या बदलता है?
सीधा सा सवाल यह है कि नाम बदलने से जमीनी हकीकत कितनी बदलती है?
"पाक" शब्द संस्कृत का है – मतलब पकाया हुआ, पवित्र, लेकिन जब हम हर चीज को आज की राजनीति की चश्मे से देखने लगते हैं, तो भोजन भी भावनात्मक मुद्दा बन जाता है।
नाम बदलने की परंपरा नई नहीं है। पहले औरंगज़ेब रोड बदला गया, फिर अल्लाहाबाद को प्रयागराज बना दिया गया, और अब मिठाई भी इस नाम-क्रांति की शिकार हो गई है।
आखिरी बात: मिठाई का काम मिठास फैलाना है
हम चाहे इसे "पाक" कहें, "श्री पाक" कहें या "भारतीय पाक विजय", मिठाई तो मिठाई ही रहेगी – मीठी, मुलायम, और दिल को भाने वाली। मिठाई का असली काम लोगों के रिश्तों में मिठास लाना है, न कि नाम बदल-बदल कर गुस्सा जताना।
तो अगली बार जब आप मिठाई की दुकान पर जाएं और दुकानदार बोले – "श्री पाक लूं क्या?", तो मुस्कराइए, और कहिए – "नाम में क्या रखा है भैया, स्वाद में देश है कि नहीं, वो बताओ!"

अजय कुमार बियानी
निपानिया इंदौर

ओडिशा में 12 जून को एक नया नाटक खेला जाएगा। नाटक का नाम है 'झूठी कहानियों का सच्चा जवाब' : अरुण साहू

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: भाजपा सरकार के सफलता के जश्न का मुकाबला बीजद करेगी। इस संबंध में आज बीजद के वरिष्ठ विधायक अरुण साहू ने कहा कि राज्य सरकार एक साल पूरे होने के जश्न की तैयारी कर रही है। हम भी उसका चेहरा बेनकाब करने की तैयारी कर रहे हैं। 12 जून को ओडिशा में एक नया नाटक देखने को मिलेगा। नाटक का नाम है झूठी कहानियों का सच्चा जवाब। भाजपा की झूठी कहानियों का सच्चा जवाब बीजद देगी। मैदान तैयार है। ओडिशा की जनता बीजद की आवाज बनेगी। भाजपा सड़कों पर घर-घर जाकर प्रचार कर रही है। उनकी बैठकों में कुर्सियां खाली हैं। आइए देखें कि 12 जून को भाजपा सरकार के एक साल पूरे होने के जश्न के दौरान क्या होता है। इंतजार करें, बीजद जवाब देगी, अरुण साहू ने कहा।

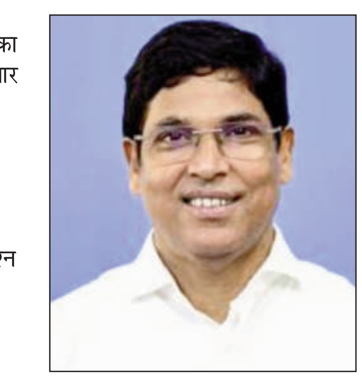

कोरोना ने बढ़ाई चिंता, ओडिशा में 5 संक्रमितों की पहचान

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

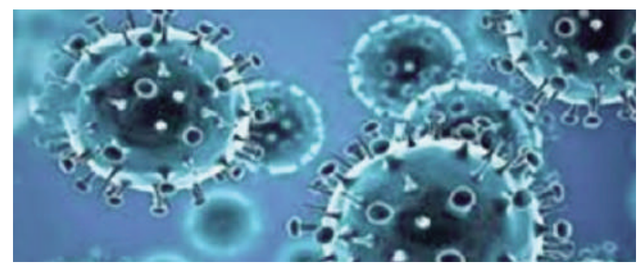

भुबनेश्वर: कोरोना ने चिंता बढ़ा दी है। देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या 1000 के पार हो गई है, वहीं राज्य में बुधवार को 5 कोरोना संक्रमितों की पहचान की गई। भुवनेश्वर से 4 और खुर्दा से एक संक्रमित की पहचान की गई। इनमें 4 पुरुष और एक महिला है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार कोरोना को लेकर स्थिति पर नजर रखी जा रही है और स्थिति अब नियंत्रण में है।इसके अलावा केंद्र सरकार ने समय रहते इससे निपटने की तैयारी शुरू कर दी है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव की अध्यक्षता में आज एक अहम बैठक होने जा रही है। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए सभी राज्यों के साथ कोविड की स्थिति की समीक्षा करेंगे। राज्यों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है क्योंकि अब संक्रमण बढ़ रहा है।

देश में अब तक 11 लोगों की मौत हो चुकी है, जिसमें से अकेले महाराष्ट्र में पांच लोगों की मौत हुई है। हालांकि कोरोना के दो नए वैरिएंट ने चिंता बढ़ा दी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक देश में कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या हजार का आंकड़ा पार कर गई है, जबकि सबसे ज्यादा मामले केरल, महाराष्ट्र और दिल्ली में सामने आए हैं। सक्रिय मामलों में से 752 मामले सामने आ चुके हैं। ऐसे में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) स्थिति पर नजर रख रहा है और कदम उठाने की कोशिश की गई है। ICMR ने बताया कि देश में अब चार तरह के वैरिएंट पाए गए हैं, जिनके नाम LF.7, XFG, JN.1 और NB.1.8.1 हैं। इनमें से NB.1.8.1 और LF.7 की पहचान कुछ रिपोर्ट में की गई है।

जातिवादी गुंडों से लड़ने का दम हो तभी एससी/एसटी एक्ट में केस दर्ज कराना, कभी खाप पंचायतों के कहने पर या गाम राम के भाईचारे के झांसे में खुद की, समाज की और एक्ट की ऐसी तैसी करा दो

रजत कल्सन

ध्यान से पढ़ो और समझ लो कि अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज मुकदमे में समझौता करना शिकायतकर्ता के लिए कितना घातक ?
आप सभी भलीभांति वाकिफ हैं कि अनुसूचित जाति व जनजाति अत्याचार अधिनियम इसलिए अस्तित्व में आया क्योंकि भारतीय दंड संहिता या इस एससी /एसटी एक्ट से पहले बने कानून सिविल राइट एक्ट से अनुसूचित जाति व जनजाति के खिलाफ अत्याचार व अपराध रुकने का नाम नहीं ले रहे थे इसलिए भारत की संसद ने 1989 में एससी/ एसटी एक्ट को मंजूरी दी ।
इस एक्ट की खास बात यह थी कि यह है कि इस एक्ट के मुताबिक इसके तहत किए गए अपराध नॉन-कम्पाउण्डेबल यानि कि उनमें कानूनन समझौते करने या केस वापस लेने की अनुमति नहीं है, यहां तक की पुलिस के जांच अधिकारी या ट्रायल कोर्ट भी इसमें समझौता नहीं करवा सकती है ।दूसरी खास बात इस एक्ट के तहत किए गए अपराध संज्ञेय प्रकृति (कोग्निजबल नेचर) के होते हैं ,जिन्हें कत्ल, डकैती, बलात्कार की तरह गंभीर माना जाता है इसीलिए इनमें कानूनी रूप से समझौते की गुंजाइश नहीं होती।
इस एक्ट के तहत दर्ज मुकदमे की जांच केवल डीएसपी स्तर का अधिकारी कर सकता है तथा इसके तहत दर्ज मुकदमों के ट्रायल के लिए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश स्तर के न्यायिक अधिकारी को स्पेशल जज का दर्जा दिया गया है जिसे उम्रकैद व फांसी देने की का अधिकार है तथा इस मुकदमे के संचालन के लिए स्पेशल पब्लिक प्रॉसिक्यूटर को नियुक्त किया जाता है।
लेकिन देखने में रहा है कि हमारे लोग एससी /एसटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कराते हैं तथा मुकदमा दर्ज होने के बाद दूसरा पक्ष शिकायतकर्ता पर मुकदमा वापस लेने या समझौते के लिए दबाव बनाते हैं और इसके लिए बकायदा शिकायतकर्ता के घर पर मुकदमे को वापिस लेने का दबाव डालने कई- कई गाँवों की पंचायतें आती हैं तथा शिकायतकर्ता पर उसी के रिश्तेदारों से दबाव बनाया जाता है और यहां तक कि शिकायतकर्ता को मुकदमा वापस न लेने की सूरत में जान से मारने की धमकी दी जाती है या फिर मोटा लालच दिया जाता है।
इन सभी लालच, धमकी, डर ,दबाव में कहीं ना कहीं एससी /एसटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कराने वाला शिकायतकर्ता फंस जाता है और मुकदमा वापस लेने या समझौते के लिए तैयार हो जाता है।
लेकिन कानून समझौते की अनुमति नहीं देता तो इस मामले में पुलिस का जांच अधिकारी साधारण समझौते से इसको खत्म नहीं कर सकता है इसके लिए शिकायतकर्ता को पुलिस द्वारा कहा जाता है कि वह एक शपथपत्र पर यह लिखकर लाए कि मुकदमे में दर्ज कराई गई दलित अत्याचार की घटना हुई ही नहीं थी या गलतफहमी में दर्ज कराई गई थी और जब शिकायतकर्ता जांच अधिकारी को यह शपथ पत्र देता है तो डीएसपी स्तर का जांच अधिकारी अपनी अंतिम जांच रिपोर्ट में लिखता है कि उसकी जांच में यह मुकदमा झूठा पाया गया तथा मुकदमे में दर्ज कराए गए तथ्यों में कोई सच्चाई नहीं पाई गई।
इसके बाद इस तरह के समझौते के आधार पर वापस लिए गए मुकदमों को पुलिस झूठे मुकदमों की सूची में डाल देती है उसके बाद जब हर माह के अंत में एससी /एसटी एक्ट के तहत दर्ज मुकदमों की सूची बनती है तो उसमें पहले कॉलम में लिखा जाता है कि कितने मुकदमे कोर्ट में गए दूसरे कॉलम में लिखा जाता है कि कितने मुकदमे झूठे पाए गए और शिकायतकर्ता जब शपथ पत्र के आधार पर समझौते कर लेते हैं तब उनके द्वारा एक्ट के तहत दर्ज कराए गए मुकदमों को झूठा पाए गए मुकदमों की सूची में डाल दिया जाता है।
आप देखिए इस तरह से देश के हर जिलों के एससी /एसटी एक्ट के मुकदमों की गणना होती है तथा पुलिस समझौते के आधार पर वापस लिए गए मुकदमों को झूठा पाए गए मुकदमों की सूची में डालती है तथा फिर सारे आंकड़े इकट्ठा होकर राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो में जाते हैं जहां पर वार्षिक रिपोर्ट में बताया जाता है कि एससी /एसटी एक्ट के तहत इतने मुकदमे दर्ज हुए और उसमें से इतने झूठे पाये गए और जब सुप्रीम कोर्ट में एससी/एसटी एक्ट के खिलाफ याचिका दायर होती है या होगी तब इस तरह के आंकड़ों को पेशकर भारत सरकार या कोई और पक्षकार अदालत को बताएगा कि एससी /एसटी एक्ट का दुरुपयोग किया जा रहा है ।इस सबसे एससी /एसटी एक्ट को कमजोर करने या खत्म करने की साजिशों को बल मिलता है तथा जाने अनजाने यह बल हम खुद दे रहे हैं।
अब इस मामले में क्या करना चाहिए ?
मैं इस बारे में इस लेख को पढ़ने वाले मेरे साथियों को राय देना चाहूंगा कि वह अगर एससी /एसटी एक्ट के तहत मामला दर्ज कराते हैं तो समझौते के बारे में बिल्कुल भी ना सोचे ।लेकिन कई बार कुछ परिस्थितियां इस तरह की हो जाती है कि शिकायतकर्ता को समझौते के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि कई बार विरोधी पक्ष भी आपके खिलाफ गंभीर धाराओं में झूठा मुकदमा दर्ज करा देते हैं तो इस मामले में आपको चाहिए कि आप पुलिस को शपथ पत्र ना देकर इस मामले को समझौते के आधार पर हाईकोर्ट में भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 482 के तहत याचिका दायर कर मुकदमे को खारिज कराने का काम करें इससे आप झूठा भी साबित नहीं होंगे तथा पुलिस आपके मुकदमे को सरकारी रिकॉर्ड में झूठा भी नहीं बता सकती तथा इससे आपको भविष्य में कोई नुकसान भी नहीं होगा ।
अब मैं आपको बताऊंगा कि एससी/ एसटी एक्ट में दर्ज कराए गए मुकदमों में अत्याचार की घटना को नकारने वाले तथ्य के शपथ पत्र के आधार पर वापिस लेने से आपको क्या क्या नुकसान हो सकते हैं ।अगर आप इस मुकदमे के बारे में आरटीआई से सूचना हासिल करेंगे तो उसमें डीएसपी द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट में आपके मुकदमे को झूठा दर्शाया जाएगा।
1- इस मामले में पुलिस आप के खिलाफ आईपीसी की धारा 182 के तहत लोक सेवक को झूठी सूचना देने के बारे में आप के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर सकती हैं ।
2- इस मामले में जिसके खिलाफ अपने मुकदमा दर्ज कराया है वह भी भविष्य में आरटीआई से डीएसपी या जांच अधिकारी की मुकदमा खारिज करने की रिपोर्ट हासिल कर सकता है तथा भविष्य में बदले की भावना से आप को ब्लैकमेल करने के लिए आपके ऊपर मानहानि का मुकदमा दायर कर मोटी रकम क्लेम के रूप में मांग कर सकता है ।
3- अगर शिकायतकर्ता सरकारी नौकरी पर है तो कोई भी उस रिपोर्ट की कॉपी आरटीआई से हासिल कर आपके विभाग के उच्चाधिकारियों को भेज सकता है तथा आपकी नौकरी पर आंच आ सकती है ।
4- अगर भविष्य में दोबारा आपके साथ अत्याचार की घटना होती है तो आरोपी आपके पहले मुकदमे की जांच अधिकारी द्वारा खारिज की गई रिपोर्ट को पुलिस के समक्ष पेश कर आपको आदतन शिकायतकर्ता बता सकता है तथा पहली शिकायत झूठी साबित होने के चलते खारिज होने के कारण आप की दूसरी शिकायत पर भी पुलिस कोई कार्रवाई नहीं करेगी।
5- अगर आप किसी भी तरह का चुनाव लड़ने की सोच रहे हैं तो आपके द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमे में समझौते के आधार पर डीएसपी द्वारा तैयार अंतिम रिपोर्ट जिसमें आप के मुकदमे को झूठा बताया गया है आपके चुनाव प्रचार को बिल्कुल धार हीन बना सकती है या आप को चुनाव लड़ने से अयोग्य भी घोषित करा सकती है ।
6- अगर अदालत में अपने मुकदमे की सुनवाई के दौरान आप अपने मूल बयानों से मुकरते हैं इस मामले में अदालत भी स्वत संज्ञान लेकर आपके खिलाफ सीआरपीसी की धारा 340 व 195 के तहत अदालत में झूठी गवाही देने बारे कार्रवाई कर सकती है ।
7- आपके मुकदमा वापस लेने के बाद आरोपी लोग आपके बारे में कहेंगे शिकायतकर्ता डर गया या शिकायतकर्ता पैसे लेकर बैठ गया या शिकायतकर्ता के अंदर मुकदमा चलाने की हिम्मत नहीं थी तथा यह सब बातें कह कर आप को बदनाम किया जाएगा।
8- सबसे बड़ी बात मुकदमा वापस लेने या उसमें समझौता करने पर आप समाज के सामने सिर उठाकर नहीं चल पाएंगे और आपको हमेशा ही अपराध बोध रहेगा।

ओडिशा से डेढ़ टन विस्फोटक भरा ट्रक नक्सलियों लूटा, झारखंड अलर्ट मोड पर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चक्रधरपुर, मंगलवार शाम ओडिशा के राउरकेला में डेढ़ टन विस्फोटकों से भरा ट्रक नक्सलियों ने लूट लिया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लूटे हुए ट्रक को झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा जंगल से सटे घने जंगल में रखा है। जिस कारण झारखंड में सीआर पी एफ सतर्क हो गयी है । इसका मामला ओडिशा बोर्डर सुंदरगढ़ जिला के केवलंग थाने में दर्ज है ।
जानकारी के मुताबिक विस्फोटक भरा ट्रक राउरकेला स्थित आइडियल विस्फोटक फैक्ट्री से बांको पत्थर खदान जा रहा था। ट्रक बांको खदान पहुंचने ही वाला था कि २३ हथियारबंद नक्सली पहुंचे। ट्रक को कब्जे में ले लिया और उसे लेकर घने जंगल में चले गए।
इस घटना के बाद से पश्चिम सिंहभूम और ओडिशा की पुलिस सक्रिय हो गई है। लूट की घटना देर शाम की थी ऐसे में अंधेरा और घना जंगल होने के कारण पुलिस जंगल में नहीं घुसी है झारखंड पुलिस आधिकारिक रूप से तो कुछ नहीं कह रही है पर इस घटना को कोल्हान में एंटी नक्सल मूवमेंट चलाने और इससे मिल रही सफलता के साथ जोड़ कर देख रही है। उधर झारखंड सरकार ने कल ही बड़े पैमाने पर आई पी एस अधिकारियों की ट्रान्सफर की है जिसमें कोल्हान डीआईजी चौथे एवं एस पी सिंहभूम पश्चिमी भी शामिल हैं पुलिस उपमहानिरीक्षक कोल्हान मनोज रतन चौथे को स्थानांतरित करतेहुए पुलिस महानिरीक्षक विशेष शाखा (एस आई बी) बनाया गया है ।
किसी भी तरह की अनहोनी के मद्देनजर सारंडा के सभी सी आर पी एफ कैंप को अलर्ट कर दिया गया है। झारखंड पुलिस ने बॉर्डर पर निगरानी बढ़ा दी है। पूरे इलाके में हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। सारंडा जंगल क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है।पुलिस सूत्रों के मुताबिक सारंडा जंगल के क्षेत्र और ओडिशा बॉर्डर के थाना क्षेत्र में विशेष सतर्कता बरती जा रही है। ओडिशा बॉर्डर के इलाके जिसमें छोटानागपुर, जराईकेला के अलावा टोंटो, नोवामुंडी, किरिबुरु, मनोहरपुर, आनंदपुर, गोइलकेरा और गुदड़ी जैसी जगहों में सभी सी आर पी एफ कैंप और झारखंड जगुआर के कैंप को अपने क्षेत्रों में सर्चिंग अभियान चलाने को कहा गया है।
झारखंड का जराईकेला अंतिम थाना है। इसके बाद ओडिशा सीमा शुरू हो जाता है। इतनी भारी मात्रा में माओवादियों द्वारा विस्फोटक को लूटने के पीछे सारंडा व कोल्हान जंगलों में पिछले तीन सालों से नक्सलियों के खिलाफ चल रहे नक्सल विरोधी अभियान को प्रभावित करना हो सकता है। आशंका इस बात का भी लगाया जा रहा है कि सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने में नक्सली इसका उपयोग कर सकते हैं।
जानकारी के मुताबिक वर्ष २०२३ में भी परम बालजोडी गांव के डीके घोष कंपनी से डोटेनेटर व बारुद भाकपा माओवादी नक्सलियों ने लूट लिया था। जिसे सारंडा जंगल में ही गुप्त स्थान पर छुपा कर रखा था ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023